राकेश की

संगम यात्रा

माधव सिन्हा

किताब महल प्रकाशन

कश्मीर स्थित भारतीय सैनिक टुकड़े का एक सेकिंड लेफ्टिनेंट राकेश अपने दस्ते से बिछुड़ कर पर्वत प्रदेश में खो जाता है। कल्पित रीछ के आतंक से भाग कर वह एक गुफा में शरण लेता है लेकिन मन का भय दूर नहीं होता और वह मूर्छित हो जाता है। होश आने पर वह अपने आप को मंगल ग्रह में पाता है। मंगल पहुँच जाना राकेश के विज्ञानप्रेमी बचपन की अधूरी आकांक्षा रही थी जो यूँ स्वप्न में पूरी हो जाती है। कल्पना के पंखों पर बैठकर राकेश मंगल में पहुँच जाता है और वहाँ के विचित्र दृश्यों तथा व्यक्तियों को देखता है। जिस रोचकता और सजीवता से लेखक ने इस कल्पना-लोक का वर्णन किया है उससे इसकी कल्पना-शक्ति का अच्छा परिचय मिलता है।

कथा वास्तव में इतनी अधिक मनोरंजक बन पड़ी है कि इसमें पाठक को 'गुलीवर की यात्रा' और 'एलिस इन वन्डरलैंड' का-सा मजा आयेगा। बच्चे और बड़े इस कथा को यदि एक बार उठा लेंगे बिना पूरी पढ़े छोड़ने का नाम न लेंगे। पुस्तक की भाषा सुगम और शैली मनोरंजक है।

मूल्य २)

राकेश की मंगल यात्रा

माधव सिनहा

किताब महल, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण १९५६

प्रकाशक—किताब महल, इलाहाबाद।
मुद्रक—गुप्ता प्रिंटिंग प्रेस, २३ क्रास्थवेट रोड, इलाहाबाद।

१

पृथ्वी की सारी लालिमा समेट कर डूबते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों ने पुष्पों से लदी उस कश्मीरी घाटी की शोभा को कई गुना बढ़ा दिया था। दूर हिम से लदी चोटियों ने सुनहरा आवरण अपना लिया था। दिन भर के थकेमाँदे पक्षी अपने नीड़ों की ओर जाते हुए गा उठे थे। पास ही बहती हुई पहाड़ी नदी की कलकल ध्वनि कितनी मधुर प्रतीत होती थी। कितनी शांति थी इस वातावरण में ! सब कुछ भूल कर अपने में खोया हुआसा चला जा रहा था कि एकाएक पैर में ठोकर सी लगी देखा तो पृथ्वी से निकली हुई एक नुकीली चट्टान थी। और वास्तविकता ने स्वयं को व्यक्त किया……

कितना क्रूर है यह मनुष्य ! अपने स्वार्थ के हेतु उसने दबा दिया गला यहाँ पर वर्षों से बसी हुई शांति का। लोग इसे पृथ्वी का स्वर्ग कहते थे, जहाँ सौन्दर्य था, शांति थी–और आज यहाँ अत्याचार, हत्या, व्यभिचार और विश्वासघात का साम्राज्य था। जातीय मतभेदों को लेकर ये लोग लड़ पड़े और समाचार-पत्रों को नई प्रेरणा मिली, और वे नये उत्साह से छापने लगे–कश्मीरी संग्राम की कथा।

उस समय मैं भारतीय सेना में "सेकन्ड लेफ्टिनेन्ट" था। युवा रगों में उत्साह था। इसलिये भारत के स्वतन्त्र होने के बाद ही जब कश्मीरयुद्ध में भाग लेने की आज्ञा मिली तो एक आन्तरिक प्रसन्नता सी हुई। चलने लगा तो माँ रो पड़ी और जब पिताजी के चरणों की रज माथे पर ली तो रुद्ध गले से उन्होंने आशीर्वाद दिया। और फिर–वही धाड़धाड़ और मारकाट ! बम के गोलों और मशीन गनों की गोलियों की ध्वनि से कान के पर्दे फट से गये थे। और आज……एक सप्ताह हो गया मुझे अपनी टोली से

बिछड़े हुए। मुझे केवल इतना याद है–भीषण संग्राम हुआ था। जिसे जहाँ भी छिपने की जगह मिली छिप गया। दो दिन तक बिना बाधा गोलियों की वर्षा होती रही। उसके बाद जब शांति हुई तो किसी भी साथी का वहाँ पता न चला। तब से मैं भटक रहा हूँ। जंगली फलों और छोटी-मोटी जड़ों को खाते आज तीन दिन हो गये हैं। जल भी तभी प्राप्त होता था जब कोई पहाड़ी नदी या सोता मिल जाता था अथवा नहीं। थक इतना गया था कि दोनों पैर मन-मन भर के हो गये थे। कँटीली झाड़ियों और नुकीली चट्टानों से पैरों को घायल कर दिया था। काँटों में फँस कर कमीज जगह-जगह से फट गई थी। मैं फिर भी किसी अनजाने लक्ष्य की ओर चलता ही जा रहा था।

...सूर्य डूब चुका था। आकाश के पूर्वी छोर पर उदित होता हुआ पूनम का पीला-पीला चन्द्रमा कितना मोहक प्रतीत होता था। मैं अपने में खोया सा चला जा रहा था। अतीत फिर जीवित हो उठा...

जब मैं छोटा था तो मुझे लड़ाई-भिड़ाई के खेल बहुत प्यारे थे। छाते के कपड़े का नकाब बना, और पपीते के डाल की तलवार बनाकर हम लोग 'सुल्ताना डाकू' का खेल खेला करते थे।...और तब पढ़ने के दिन आये। मुझे गणित और विज्ञान से विशेष रुचि थी। मुझे याद है वे दिन जब अन्य बालकों को मार पड़ती थी, और मैं प्रश्न हल करके झट से हाथ उठा देता था। कुछ वैज्ञानिक प्रश्नों पर मैं अक्सर विचार किया करता था। विशेषकर जब मैंने समाचार-पत्रों में पढ़ा था कि अमरीका के कुछ वैज्ञानिकों का अनुमान है कि लगभग तीस वर्षों में एक ऐसी वस्तु* का आविष्कार हो जायगा जिससे इस पृथ्वी के निवासी चन्द्रमा तक जा सकेंगे, तो मैंने सोचना प्रारम्भ किया कि यदि मनुष्य चन्द्रमा तक जा सका तो वह अन्य ग्रहों, मंगल, बुध, और बृहस्पति इत्यादि तक भी जा सकेगा। इसके

* इसका नाम "Space-ship" है।

अतिरिक्त पृथ्वी के बहुत से भागों में अक्सर बड़े वेग से आकाश में उड़ती हुई 'उड़न तश्तरियाँ' (Flying saucers) भी दिखाई गई थीं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह वस्तुएँ कदाचित दूसरे ग्रहों के निवासियों द्वारा भेजी गई थीं जो पृथ्वी का निरीक्षण करने आई थीं। कभी-कभी मैं सोचता था कि क्या ही अच्छा होता यदि स्वयं कभी ऐसी ही किसी वस्तु द्वारा किसी और ग्रह हो आ पाता। विशेषकर जब मैंने किसी पत्रिका में पढ़ा कि 'मंगल ग्रह' के निवासी वैज्ञानिक अन्वेषण में बहुत आगे बढ़ चुके हैं, तब से मैं कभी-कभी यही सोचता था कि यदि हो सका तो मैं मंगल ग्रह अवश्य जाऊँगा। कुछ वैज्ञानिक पत्रिकाओं से खोज कर मैंने उसके बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान भी प्राप्त किया था।

और तब मेरी दोस्ती सुधीर से हुई। उसके एक मामा एकबार अमरीका गये थे और वहाँ पर वे 'माउंट विलसन' को देखने गये थे। नभ के विभिन्न तारागड़ों अथवा ग्रहों के बारे में उन्होंने मुझे बहुत कुछ बताया। कभी-कभी मैं सोचता था कि यह विश्व कितना रहस्यमय है। सुधीर के मामा जी ने मुझे कुछ पुस्तकें भी इसी विषय पर दीं, जिनसे मेरे ज्ञान में थोड़ी और वृद्धि हुई। इसके बाद......सहसा एक विचित्र ध्वनि ने विचारों के प्रभाव को स्थगित कर दिया। कितनी डरावनी थी यह ध्वनि। चारों ओर देखा तो कुछ दिखलाई न पड़ा। इस समय मैं एक ऐसे पहाड़ी रास्ते जारहा था, जिसके एक ओर बहुत ऊँची सी पहाड़ी चट्टान थी और दूसरी ओर भारी खड्ड। यदि मैं भागना चाहता तो केवल दो रास्ते थे–आगे या पीछे। सहसा चन्द्रमा की धीमी ज्योति में मुझसे लगभग सौ गज दूर, पीछे की ओर से आती हुई एक काली आकृति देखी। मैं ठीक से नहीं कह सकता, पर मेरा विचार है कि वह आकृति रीछ की थी। एक क्षण के लिये मैं भयभीत हो गया। सहसा बुद्धि वापस लौट आई और बची हुई सारी शक्ति लगा कर मैं आगे की ओर भागा। मुझे लगा कि क्षण-

क्षण वह पीछे से आने वाली आकृति मेरे पास और आती जा रही है। मेरे पास इस समय केवल एक रायफिल और तीनचार कारतूस बचे थे, जिन्हें मैं व्यर्थ खर्च करना नहीं चाहता था। फिर यह डर लगता था कि यदि निशाना न बैठा तो बचना कठिन हो जायगा। लगभग सौ गज़ दौड़ने पर रास्ता बाईं ओर मुड़ता था। और उसके बाद थोड़ी देर तक सीधा जाता था और फिर दाहिनी ओर मुड़ता था। यहाँ तक तो मैं उस रीछ को धोखा देता हुआ निकल गया, पर मुड़ते ही जब आगे की और देखा तो धक से रह गया। करीब दस गज और आगे जाने पर रास्ता एक भारी खड्ड में परिवर्तित हो गया। सोचने का समय नहीं था। किनारे पहुँच कर नीचे झाँका तो लगभग सात-आठ फिट नीचे करीब एक गज चौड़ी एक चट्टान निकली हुई थी। पीछे से आने वाले रीछ के पद-चाप अब मुझे सुनाई पड़ रहे थे। मोड़ के पास ही होगा। भगवान का स्मरण करके मैं किनारे को पकड़ कर लटक गया। नीचे की चट्टान अब भी करीब डेढ़ फिट मेरे पैरों से नीचे पड़ती थी। हल्के से मैं कूद पड़ा। उस चट्टान पर पहुँच जाने के बाद मैंने आस-पास फिर देखा। यह चट्टान इसी प्रकार किनारे से निकली हुई लगभग बीस गज तक बाईं ओर गई थी। सम्हल कर चलता हुआ मैं इस सकरे रास्ते पर चलने लगा। जहाँ पर यह मार्ग समाप्त होता था वहाँ बाईं ओर की दीवाल में एक गुफा सी दिखलाई पड़ रही थी। और कोई उपाय न देख मैं उसी में घुस पड़ा।

मैं उस समय इतना थक गया था कि केवल दो तीन हाथ जा कर गिर पड़ा। मुझे लगा जैसे अब मुझमें हिलने की भी शक्ति नहीं है। पीछा करने वाले आकृति का कहीं पता नहीं था, यह देख कर कुछ जान में जान आई। गुफा के द्वार से छन-छन कर आती हुई ज्योत्सना मेरे शरीर पर पड़ कर मुझे नई स्फूर्ति प्रदान कर रही थी। नभ में छिटके हुए टिमटिमाते तारे बहुत सुन्दर प्रतीत हो रहे थे! पर मुझे लगा जैसे

एक विशेष तारा अन्य सब तारों से अधिक चमक रहा है। हो सकता है यह केवल कोरी कल्पना मात्र हो, पर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ। यह था मुझे सदा से प्रिय-मंगल तारा...सहसा मुझे लगा कि गुफा के द्वार पर कोई काली आकृति खड़ी है। और फिर—ओह! कितनी वीभत्स और दहला देने वाली हँसी......मुझे लगा जैसे मेरा दम घुँटता जा रहा है। मेरी आँखों के सामने अन्धकार छाता जा रहा था—घोर अंधकार! चेतना के उन अन्तिम क्षणों में मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उस घोर अंधकार में चमचमाती हुई कोई वस्तु मुझे अपनी ओर बुला—बुला ही नहीं, परन्तु खींच सी रही है। मुझे लगा जैसे क्षण-क्षण मैं शून्य में, उस वस्तु की ओर खिंचा सा जा रहा हूँ, मेरी चेतना लुप्त होती जा रही है। और चारों ओर से मुझे घेरता हुआ अन्धकार प्रति क्षण गहरा होता जा रहा है, मैं अचेत हो गया।

२

जब मेरी चेतना लौटी तो मैंने अपने आप को एक बड़ी विचित्र परिस्थित में पाया। मैंने आँखें मलीं और देखा—मैं पृथ्वी पर नहीं था। मैं था वहाँ जहाँ मैं सदा से आना चाहता था—मंगल ग्रह पर। आप आश्चर्य भले ही करें पर मुझे तो पूर्ण विश्वास था उसी प्रकार जैसे आप को विश्वास होता है कि आप पृथ्वी पर हैं। मेरा रोम-रोम कह रहा था कि मै 'मंगल ग्रह' पर हूँ।

तब मैंने अपने चारों ओर फिर से देखा जहाँ तक मैं देख सकता था, चारों ओर मुझे केवल हरी काई के समान वनस्पति दिखलाई पड़ती थी। मुझे लगा जैसे मैं एक नीची और गोल घाटी में हूँ, जिसके चारों ओर दूर पर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। दोपहर का समय रहा होगा। मुझे गर्मी लगी, जिससे मेरी प्यास बढ़ी। मेरे चारों ओर कहीं भी कोई जलाशय नहीं दिखलाई पड़ रहा था। मुझे अपने से करीब डेढ़ सौ गज पर एक तीन या चार फिट ऊँची दीवाल सी दिखलाई पड़ी। मैंने कुछ खोज करने का निश्चय किया।

जैसे ही मैंने खड़ा होना चाहा एक बड़ी विचित्र घटना हुई। जितने श्रम से मैं पृथ्वी पर केवल खड़ा भर हो पाता था, उतने ही में मुझे हवा में तीन चार गज़ तक उछाल दिया। तब मुझे याद आया कि मैंने एक वैज्ञानिक पत्रिका में एक बार पढ़ा था कि पृथ्वी से छोटे आकार का होने के कारण, 'मंगल' में किसी भी वस्तु के लिये पृथ्वी से कम खिंचाव होता है, और मुझे एकदम से लगा जैसे यहाँ पर चलना फिर से सीखना पड़ेगा, बहुत सावधान हो कर चलने पर भी तीन-चार पग चलने पर ही मैं गिर जाता, जिससे मुझे थोड़ी चोट भी लग जाती। अन्त में घुटनों के बल घसिटता हुआ उस तीन फिट ऊँची दीवाल की ओर बढ़ने लगा।

जब मैं दीवाल के बिल्कुल पास पहुँच गया तो मैंने यह देखा कि इसमें कोई द्वार अथवा खिड़की नहीं है। दीवाल केवल तीन फिट से थोड़ी ही ऊँची थी इसलिये मैं सम्हल कर खड़ा हो गया और उसके अन्दर देखने लगा। और तब मेरी आँखें आश्चर्य से फैल गईं। मैंने देखा कि दीवाल लगभग सौ फिट की लम्बाई और चौड़ाई के वर्ग के चारों ओर बनी है। यह वर्ग एक लगभग छः इंच मोटे शीशे की छत से ढँका है। इस छत के नीचे सहस्त्रों अंडे रक्खे हुए थे, जिनमें से कुछ को तोड़ कर बच्चे बाहर निकल आये थे, कुछ अभी बचे ही थे। सब अंडे लगभग एक ही समान थे-जमीन से करीब डेढ़ फिट की ऊँचाई के सब से आश्चर्यजनक वस्तु थी उन बच्चों की आकृति जो टूटे हुए अंडों में से बाहर निकल आये थे। उनका सिर बड़ा सा था, शरीर कुछ छोटा और उनके छः पैर थे, या, जैसा मुझे बाद में पता चला, दो पैर, दो हाथ और दो ऐसे अंग जो हाथ और पैर दोनों का कर्म कर सकते थे। उनकी आँखें कुछ अधिक किनारे की ओर थीं और फूली हुई सी, जिससे वे अपने चारों ओर एक साथ देख सकते थे। इनके कान लगभग एक-एक इंच निकले हुए प्याले के आकार के थे। नाक इनकी लम्बी थी। इनका रंग हल्का पीला था, और बड़े होने पर, जैसा मुझे बाद में पता चला, यह रंग कुछ भूरा और मटमैला हो जाता है। इनकी आँखें श्वेत थीं और उनके अन्दर का गोला लाल था, जिससे ये और भी भयानक लगते थे। दाँत इनके बिल्कुल श्वेत थे। किनारे के दो दाँत बाहर निकले थे तथा और दाँतों की अपेक्षा लम्बे थे। इनमें से बहुत सी बातें तो मैंने बाद में देखीं।

उस समय मैं यह सब देखने में इतना निमग्न था कि मुझे अपने पीछे से आते हुए करीब एक दर्जन युवा मंगल-निवासियों का पता ही न चला। काई जैसे वनस्पति के ऊपर आने के कारण कोई ध्वनि नहीं हुई थी। सबसे आगे आने वाले योद्धा के शस्त्रों की आपस की रगड़ से ही

वह ध्वनि उत्पन्न हुई जिसे सुनकर मैं पीछे घूमा और जो देखा तो मैं अवाक् रह गया। मुझसे दस गज से भी कम दूरी पर थी उस भाले की नोक जो ठीक मेरी सीधान में तना था और जिसे लिए हुए एक विचित्र जन्तु पर सवार एक भीमकाय योद्धा मुझे देखकर मुस्कुरा रहा था। जिन जन्तुओं को मैंने अभी थोड़ी देर पहले देखा था वे इस योद्धा के सामने कितने छोटे प्रतीत होते थे। यह योद्धा लगभग दस या ग्यारह फीट ऊँचा रहा होगा। अपने दोनों पैरों को एक विचित्र जानवर के पेट में गड़ाए वह उस पर बैठा था और अपने दो दाहिने करों से वह उस भाले को सम्हाले था जो कम से कम बीस फीट लम्बा था। जिस जीव पर वह सवार था वह स्वयं अश्व के आकार का था। उसके छः पैर थे तीन-तीन दोनों ओर। उसकी दुम मोटी और चपटी थी। उसकी त्वचा काले रंग की थी और अत्यन्त चिकनी थी। पैर उसके गद्देदार थे, इसी कारण उनके आने में ध्वनि नहीं हुइ थी। उस योद्धा के पीछे, उससे कुछ दूर, ग्यारह और योद्धा एक लाइन में खड़े थे। यह सब बतलाने में इतनी देर लगी किन्तु यह सब मस्तिष्क में एक ही क्षण में अंकित हो उठा था।

बचने का कोई और उपाय न देख मैंने अपनी सारी शक्ति लगाते हुए एक छलाँग उस वर्ग की छत पर पहुँचने के लिए लगाई। इसके परिणाम को देखकर जितना आश्चर्य उन मंगल-निवासियों को हुआ उससे अधिक मुझे स्वयं हुआ। मैं अपनी छलाँग में लगभग चालिस फिट तक की ऊँचाई पर चला गया और सौ फिट से कुछ अधिक की दूरी पर जाकर मैं उस वर्ग की दूसरी दीवाल के भी आगे गिरा। कोमल काई के ऊपर गिरने से मुझे चोट नहीं आई। मेरी इस कला को देखकर उन मंगल-निवासियों को असीम आश्चर्य हुआ। वे धीमे स्वरों में परस्पर वार्तालाप करते जा रहे थे और कभी-कभी मेरी ओर उँगली उठाते थे। मंगल-निवासियों का शरीर इस प्रकार का बना रहता है कि वे मंगल-ग्रह के कम खिंचाव पर वैसे ही चलें

और कूदें जैसे हम लोग पृथ्वी के अधिक खिंचाव पर चलते हैं। इसीलिए मंगल पर पृथ्वी का एक निवासी, मंगल-ग्रह के निवासियों की अपेक्षा अधिक कूद सकता था।

जिस बीच ये लोग आश्चर्य से चकित थे, मुझे कुछ समय मिल गया और मैंने बचने की युक्ति सोचना प्रारम्भ किया। पर ज्योंही मैंने इनके सब शस्त्रों की ओर देखा, भागकर बच निकलने के विचार को मुझे त्यागना ही पड़ा। मैंने देखा कि इन सब के पास एक विचित्र प्रकार की बंदूक है जो धूप में चमक रही थी। जैसा कि मुझे बाद में पता चला, ये बहुत हल्की होती थीं और इनमें एक विशेष प्रकार की गोली का उपयोग होता था जो बहुत अधिक दूर तक जा सकती थी। इतनी तीव्र ज्योति में इनसे बच कर भागना असम्भव था।

थोड़ी देर के वार्तालाप के बाद एक मंगल-वासी को छोड़कर शेष सभी योद्धा लगभग दो सौ गज पीछे चले गये। इसके बाद उस योद्धा ने अपने शस्त्र रख दिए और उस वर्ग के किनारे-किनारे मेरी ओर बढ़ने लगा। मुझसे थोड़ी दूर पर आकर वह खड़ा हो गया और अपने एक हाथ को मेरी ओर बढ़ाकर कुछ कहने लगा, किन्तु जो कुछ उसने कहा वह किसी ऐसी भाषा में था जिससे मैं सर्वथा अपरिचित था। कुछ शब्द कहने के बाद वह शान्त हो गया। मैं समझ गया कि वह मेरे उत्तर की प्रतीक्षा में है। भाषा से अपरिचित होने पर भी मैं उसका उद्देश्य समझ गया था। पृथ्वी पर उसके सब कार्य शान्तिसूचक होते, तो यहाँ क्यों नहीं हो सकते? मैंने उससे अपने शब्दों में कहा, कि यदि वह शान्ति चाहता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। पर तभी मैं समझ गया कि मेरी भाषा से वह स्वयं अपरिचित है। इसलिए मैं मुस्कुराते हुए उसकी ओर बढ़ा और बढ़कर मैंने उसके बढ़े हुए हाथ को पकड़ लिया। वह मुस्कुराने लगा और उसने मुड़कर शेष मंगल-वासियों को कुछ इशारा किया और वे सब हमारे पास आ गये।

तब उसने मुझे इशारे से एक योद्धा के साथ ही इसी विचित्र जीव की पीठ पर बैठने को कहा और मैं उसे पकड़ कर बैठ गया।

तब हम सब एक पंक्ति बना कर दूर की छोटी पहाड़ियों की दिशा में चल पड़े।

३

लगभग आठ या दस मील जाने पर हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ से ढाल ऊपर की ओर कुछ अधिक हो जाता था। जैसा कि मुझे बाद में पता लगा, हम एक ऐसे समुद्र के किनारे के समीप थे जो बहुत पहले सूख चुका था। इसकी तलहटी में ही मेरी मंगल-वासियों से प्रथम मुठभेड़ हुई थी। किनारे की पहाड़ियों को पार करने के बाद हम एक घाटी में पहुँचे जिसके दूसरे छोर पर एक बड़ा नगर दिख रहा था। हम लोग इसी नगर की दिशा में बढ़ रहे थे। और समीप पहुँचने पर मैंने देखा कि इस नगर में एक से एक ऊँची अट्टालिकाएँ हैं, किन्तु ऐसा प्रतीत होता था जैसे सब की सब किसी प्राचीन युग में बनी थीं और अब इनमें कोई नहीं रहता।

नगर के बीचोबीच एक चौकोर मैदान था जिसके चारों ओर की विशाल अट्टालिकाओं में इसी आकार और स्वरूप के और भी बहुत से मंगल-वासी दिखलाई पड़े। आकार-प्रकार में मुझे सब एक ही समान प्रतीत होते थे, सिवा इसके कि बच्चे कुछ छोटे होते थे। इसके अतिरिक्त इनका रंग भी कुछ हल्का होता था। मुझे यह देखकर विशेष आश्चर्य हुआ कि इन लोगों में आयु के आधार पर कोई अन्तर नहीं दिखलाई पड़ता था। बाद में मुझे पता लगा कि मंगल में किसी भी व्यक्ति की पूरी आयु पृथ्वी की अपेक्षा अधिक है। वहाँ के निवासियों की वैज्ञानिक परिस्थिति यहाँ की अपेक्षा बहुत आगे है। युगों से होते आए वैज्ञानिक अन्वेषण ने उन्हें ऐसी-ऐसी दवाएँ प्रदान की हैं कि उन्होंने अधिकतर रोगों को हटा दिया। इसीलिए वहाँ पर आयु अधिक होती है।

एक और वस्तु जिसने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया वह थी–हर

आयु के हर व्यक्ति के पास कोई न कोई शस्त्र अवश्य था। अधिक आयु होने के कारण यहाँ की जनता में अत्यधिक वृद्धि हो गई थी, और साथ ही खाद्य एवं खनिज पदार्थ की मात्रा में कमी हो गई थी। इसी कारण यहाँ किसी व्यक्ति के जीवन को विशेष महत्व नहीं दिया जाता था।

जैसे-जैसे हम नगर के मध्य-भाग के समीप होते गए, अधिक संख्या में व्यक्तियों ने मुझे देखकर कौतूहल प्रदर्शित किया। नगर के ठीक मध्य में एक अत्यन्त विशाल एवं सुन्दर भवन था, जो हिम के समान श्वेत संग-मरमर का बना था। इसका मुख्य द्वार बहुत बड़ा था और उसके सामने लगभग एक दर्जन प्रहरी पहरा दे रहे थे। हम में सब से आगे जो योद्धा था उसने प्रहरी से कुछ कहा और उसने तुरन्त द्वार खुलवा दिया। अन्दर जाने पर हम लोग थोड़ी दूर तक एक सीधे रास्ते पर गये जो एक बड़े कमरे में समाप्त होता था, जहाँ पर इस समय दर्बार लगा था। उस दर्बार के मध्य में संगमरमर की कुर्सियाँ बनी थीं जिन पर इस समय लगभग पचास दरबारी बैठे थे। इनके सामने इनसे थोड़ा हट कर एक ऊँचे सिंहासन पर विराजित एक भारी-भरकम योद्धा बैठा था, जिसके शरीर पर रेशमी कपड़े थे और बहुमूल्य रत्नों से जड़ी हुई चमड़े की पेटियाँ। उसके शरीर पर एक विचित्र प्रकार का मुकुट था जो बता रहा था कि वह इन सब का राजा है।

मुझे यह देखकर विशेष आश्चर्य हुआ कि जिन कुर्सियों पर अधिकतर दरबारी बैठे थे वे उनके शरीर के अनुसार कुछ छोटी थीं, और मुझे तुरन्त लगा कि हो न हो मंगल में मेरे जैसे मनुष्य भी हैं, या रहे होंगे क्योंकि यह कुर्सी मेरे लिए ठीक पड़ती।

जब हम इस महल के मुख्य-द्वार पर पहुँचे थे तभी अपनी सवारियों से उतर गए थे और जिस योद्धा ने सबसे पहले मुझसे वार्तालाप किया था, उसी ने मेरे एक हाथ को पकड़ लिया और फिर हम सब दर्बार तक पैदल

ही गए। जब हम दर्बार में घुसे तो हमारे शेष सब साथी एक किनारे ही रह गए और वह मुझे लेकर ठीक राजा के सम्मुख पहुँचा। उसने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाकर राजा से कुछ कहा। सब दर्बारी मेरी ओर आश्चर्य से फैले नेत्रों से देख रहे थे। राजा ने उससे उत्तर में कुछ कहा। इस पर उसने फिर राजा से कुछ देर तक कुछ कहा, शायद, मुझे किस प्रकार पाया इसी विषय में।

जब वह अपनी बात समाप्त कर चुका तो राजा ने मेरी ओर मुड़कर कुछ कहा। इस पर मैंने अपनी भाषा में इस से कहा कि मैं उसकी भाषा समझने में असमर्थ हूँ। मैंने यह देखा कि यद्यपि वह मेरी भाषा नहीं समझ सकता था, जब कभी मैं मुस्कुराता था, वह भी मुस्कुराता था। मैंने सोचा कि एक चीज़ तो ऐसी निकली जिसे हम दोनों कर सकते थे। पर बाद में मुझे मालूम हुआ कि मुस्कुराना मंगल में कोई अर्थ नहीं रखता। हास्य का उपयोग भी वहाँ भिन्न प्रकार का होता है। मरते मनुष्य के दुख में इनके लिए असीम विनोद था। इसी प्रकार युद्ध-बंदियों को कष्ट देने में भी इनका विनोद होता था।

जो योद्धा मुझे बंदी बना कर लाया था उसका नाम था टानार, जैसा कि इन लोगों के वार्तालाप से समझ गया था। राजा ने टानार से कुछ कहा और मुझे अपने पीछे आने के लिए कहकर वह टानार के साथ बाहर के चौकोर मैदान की ओर बढ़ा। अभी तक मैंने अपने आप से पैदल चलने का प्रयत्न नहीं किया था, क्योंकि बराबर टानार ने मुझे एक हाथ से सम्हाल रखा था। अब जब मैंने प्रयत्न किया तो मैं बार-बार गिरा। जब मुझे काफी चोट आ गई तो मैंने फिर घुटनों के बल चलने का प्रयत्न किया पर मुझे इसमें भी सफलता नहीं प्राप्त हुई। एक लम्बे से मंगल-वासी ने जिसे मेरे कष्ट को देख कर बड़ी प्रसन्नता हो रही थी, मुझे अपने पैर से एक ठोकर मार दी।

मेरी सहनशीलता अब अपनी सीमा तक पहुँच गई थी। मुझसे रहा नहीं गया, और मैंने एक घूँसा उसकी नाक पर अपनी सारी शक्ति लगाते हुए दिया। जैसे ही वह नीचे गिरा मैं तुरन्त इस अभिप्राय से घूमा कि शायद अब शेष मंगल-वासी मेरे ऊपर टूट पड़ेंगे। मैंने भी निश्चय कर लिया कि मरते दम तक मैं अपने सारे सामर्थ से लड़ूँगा। पर यह देख कर मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि वे अपनी जगह पर ही खड़े-खड़े तालियाँ बजा रहे हैं और हँस रहे हैं। बाद में मुझे पता चला कि उनकी दृष्टि मे मैंने एक अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया था।

उधर जिन महाशय को मेरा घूँसा लगा था उन्होंने उठने का तनिक भी प्रयास न किया। टानार ने आगे बढ़ कर एक हाथ से मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे आगे ले चला। सामने के चौकोर मैदान के बीचोबीच में ले जाकर उसने मुझे खड़ा किया। मेरी समझ में अपने यहाँ लाये जाने का उद्देश्य अभी तक नहीं आया था। टानार ने मेरी ओर देख कर तीनचार बार 'बल' कहा, और फिर 'बल' कह कर उसने दो तीन छलाँग लगाई। मैं तुरन्त समझ गया कि ये लोग मेरी छलाँग देखना चाहते हैं। मैंने एक बहुत बड़ी छलाँग लगाई जिससे मैं पूरा पचास गज़ तक चला गया और फिर तीन-चार छोटी-छोटी छलाँगों से वापस लौट आया। इस समय मैदान के चारों ओर बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गई थी, जिसे मेरी छलाँग देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। चारों ओर से 'फिर! फिर! की ध्वनि आई क्योंकि टानार ने मुझसे बार-बार 'बल' कहा, पर मैंने संकेत से बताया कि मुझे भूख बहुत लगी है और बिला कुछ भोजन प्राप्त किये मैं 'बल' नहीं कर सकता।

इस पर टानार ने राजा से कुछ कहा और उसने भी कुछ उत्तर दिया। इसके बाद एक मंगल-निवासिनी युवती को बुलाकर टानार ने उसे कुछ समझाया और मुझे उस स्त्री के साथ जाने का संकेत किया। मुझे साथ

लेकर यह युवती एक कोने पर स्थित एक ऊँची अट्टालिका की दिशा मे बढ़ी। युवती का रंग हल्का पीला था और ऊँचाई लगभग सात फिट। उसका नाम, जैसा कि बाद में मालूम हुआ, नीनी था। उस विशाल अट्टालिका के एक बड़े कमरे में ले जाकर, उस युवती ने मुझे एक ओर पड़े ऊनी गलीचे पर बैठने का आदेश दिया। इसके बाद वह द्वार तक गई और उसने एक सीटी जैसी ध्वनि से एक बड़े ही विचित्र जन्तु को बुलाया। इसके आठ छोटे-छोटे पैर थे, मुँह बहुत बड़ा था, जिसमें से दो दाँत बाहर निकले थे। आकार इसका एक कुत्ते के समान था यद्यपि एक खच्चर से छोटा नहीं था।

नीनी ने उससे कुछ कहा और फिर द्वार से बाहर चली गई। इसके बाद वह जीव मेरे पास आया और मुझे सूँघ कर द्वार के पास लौट गया और उसी द्वार के नीचे लेट गया।

मंगलीय श्वान से मेरी यह पहली भेंट थी। पर बाद में भी इसने मेरी बड़ी सेवा की और दो बार इसने मेरी जान बचाई। जब तक नीनी नहीं लौटी मैं इस कमरे की चारों दीवालों को ध्यानपूर्वक देखता रहा। उन पर बड़े सुन्दर चित्र बने थे, जो यद्यपि कई शताब्दी पहले के बने प्रतीत होते थे, अति सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों का प्रदर्शन कर रहे थे। जिस वस्तु ने विशेष रूप से आकर्षित किया, वह थी उन चित्रों में किसी भी जीवित वस्तु के प्रदर्शन की अनुपस्थिति।

मैं सोच रहा था कि नीनी मेरे भोजन के साथ लौट आई, जिसे उसने मेरे सम्मुख रख दिया। खाने के लिए वह एक विचित्र प्रकार का फल लाई थी जो मीठा भी था और पीने के लिए एक बर्तन में दूध जैसी वस्तु लाई थी, जो, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, एक छोटे से वृक्ष से निकलती थी जो कि मंगल में हर जगह पाया जाता था।

पेट में कुछ खाद्य-सामग्री पहुँचने के उपरान्त निद्रा ने मुझे वशीभूत कर लिया। कितना सोया, यह कहना कठिन है, पर जब नेत्र खुले तो देखा चारों ओर घोर अन्धकार है। मैंने देखा कि मुझे किसी ने कम्बल उढ़ा दिया था। पर शीत इतनी अधिक थी कि मैं दूसरे कम्बल की खोज में अन्धेरे में ही टटोलने लगा। सहसा एक हाथ बढ़ा जिसने एक दूसरा कम्बल मेरे शरीर के ऊपर डाल दिया। मैं तुरन्त समझ गया कि यह हाथ नीनी का है। और मुझे लगा जैसे इस अज्ञात ग्रह पर यह अज्ञात युवती मुझे कृतज्ञता के भार से दबा देगी।

जैसा कि मुझे बाद में पता चला, मंगल में रात्रि बहुत ठंडी होती है, और यदि मंगल के दोनों चन्द्रों में से कोई भी नभ में न हुआ तो

घोर अन्धकार भी होता है। परन्तु यदि दोनों चन्द्र आकाश में हैं तो ज्योति पर्याप्त मात्रा में मिलती है। यह दोनों चन्द्र मंगल ग्रह के बहुत समीप हैं और जो पासवाला चन्द्र है वह मंगल ग्रह के चारों ओर एक चक्कर केवल साढ़े सात घंटे में लगाता है और दूर वाला चन्द्र अपना एक चक्कर लगभग ढाई दिनों में एक बार लगाता है। यह दोनों चन्द्र आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक बड़े वेग से जाते हैं।

नीनी ने जब मुझे दूसरे कम्बल से ढँक दिया तो मैं फिर सो गया और जब दुबारा उठा तो सूर्य निकल आया था। उसी कमरे में दो-तीन और व्यक्ति सो रहे थे, जो अभी तक उठे नहीं थे। द्वार पर अब भी वह मंगलीय श्वान बैठा था, और उसकी दृष्टि मेरे ऊपर जमी हुई थी। मैंने सोचना आरम्भ किया कि यदि मैं भागने का प्रयत्न करूँ तो यह क्या करेगा। सम्भव है मेरी जगह पर कोई दूसरा व्यक्ति इस प्रकार की योजना को अपने मस्तिष्क में कोई स्थान न देता, पर मेरी प्रकृति ही कुछ ऐसी थी, कि मुझसे रहा नहीं गया और मैं उसकी परीक्षा लेने के लिए धीरे-धीरे खड़ा हुआ और द्वार की ओर बढ़ा।

मुझे खड़ा होते देख वह भी खड़ा हो गया और उसने द्वार के बाहर तो आने दिया पर वह स्वयं मेरे पीछे-पीछे चलने लगा। मैंने सोचा कि यह छोटे पैरों वाला जीव कूदने, और सम्भवतः भागने में भी, मुझसे पीछे रह जायगा। मैं सड़क पर आ गया तब भी वह मेरे पीछे लगा रहा। वह जब तक कुछ नहीं बोला तब तक मैं नगर की सीमा के बाहर नहीं जाने पाया, पर जैसे ही मैंने सीमा लाँघने का प्रयत्न किया वह गुर्रा करके बड़े वेग से मेरे पीछे दौड़ा। जैसे ही वह मेरे पास आया मैं हवा में कूद गया और वह मेरे नीचे से निकल गया। थोड़ा आगे जाकर वह रुक गया और मुड़कर फिर मेरी दिशा में दौड़ा। उसके दौड़ने का वेग देखकर मैं चकित रह गया।

मैं तुरन्त समझ गया कि सीधे रास्ते पर मैं इससे नहीं बच सकता, और इसलिए मैं टेढ़े रास्तों पर भागने लगा और जैसे ही वह मेरे निकट पहुँचता मैं हवा में कूद जाता। इस प्रकार अधिक दूरी तक भागने की सम्भावना थोड़ी देखकर मैं नगर की सीमा पर ही स्थित एक अट्टालिका की दिशा में चल पड़ा। जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, उस मंगलीय श्वान ने मेरे ऊपर नये उत्साह से धावा बोल दिया। पर इससे पहले कि वह मुझे छू भी न सके मैं लगभग तीस फिट की ऊँचाई पर स्थित एक खिड़की की सीध में कूद गया और उसकी चौखट को पकड़ कर नीचे देखने लगा।

वह नीचे से मुझे देखकर बड़े ज़ोर से गुर्रा रहा था और बार-बार ऊपर उछलने का प्रयत्न कर रहा था, पर हर बार वह मुझे पकड़ने में असमर्थ रहता। मेरी प्रसन्नता क्षण भर की थी, क्योंकि जैसे ही मैंने उसकी ओर देखना आरम्भ किया पीछे से एक बड़े से हाथ ने मुझे गले से पकड़ लिया और मुझे कमरे में ला पटका। और तभी मैंने देखा कि मेरे ऊपर एक पैर रक्खे एक भारी श्वेत रीछ खड़ा है।

मैंने देखा कि वह श्वेत रीछ एक ओर देख कर कुछ कह-सा रहा है। लेटे ही लेटे बाईं ओर सिर घुमा कर देखा तो एक और रीछ, जो कदाचित् उसका साथी था, हाथ में एक गदा लिये मेरी ओर बढ़ रहा है। पहले रीछ ने अपना एक पैर मेरे वक्ष पर रक्खा था इस कारण मैं अपने स्थान से डिग भी नहीं सकता था। यह दोनो रीछ लगभग दस फिट ऊँचे रहे होंगे, और देखने में यह अफ्रीका के 'गोरिल्लों' के समान थे।

मेरे पास आकर यह दूसरा रीछ खड़ा हो गया और उसने अपना गदा मुझे मारने के लिये ऊपर उठाया ही था कि द्वार खोल कर कोई वस्तु बड़े वेग से आई और उससे भिड़ गई। और यह देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह था मेरा रक्षक मंगलीय श्वान--श्वान कहते झिझक लगती है, क्योंकि यह आकार में बड़ा और देखने में अधिक वीभत्स था। जिस रीछ ने मुझे दबा रक्खा था वह एकाएक चिल्ला कर खिड़की की राह बाहर भाग गया। मैं झट से उठा और दीवाल के सहारे लग कर खड़ा हो गया।

और तब जो युद्ध मैंने देखा वह बहुत कम को देखने को मिला होगा। मेरे रक्षक श्वान ने उस रीछ के वक्ष में अपने दाँत गड़ा दिये थे और उस रीछ ने उसका गला अपने दोनों हाथों से पकड़ रक्खा था और उसकी साँस बंद करने का प्रयत्न कर रहा था। दोनों एक दूसरे से बुरी तरह गुथे थे। पर यह निश्चय था कि रीछ दोनों में अधिक शक्तिशाली था और थोड़ी ही देर में वह उस श्वान को स्वर्ग भेज देगा। धीरे-धीरे उस श्वान की आँखें बाहर निकलने लगीं और क्षण-क्षण वह शक्तिहीन होने लगा।

सहसा मेरा विवेक जागा और अपना कर्तव्य समझ कर मैंने लपक कर गिरे हुए गदे को उठा लिया और अपनी समस्त शक्ति को लगाते हुए उस

रीछ के सिर पर दे मारा, जिसका परिणाम यह हुआ कि वह बिला कुछ कहे-सुने वहीं पर ढेर हो गया।

पर जैसे ही मैंने उस रीछ को मारा, एक नई समस्या उत्पन्न हो गई। इसका साथी रीछ जो पहले खिड़की की राह भाग गया था अब अन्दर की ओर वाले द्वार से हो कर आ गया। अपने साथी की दुर्दशा देख कर वह क्रोध से पागल हो गया था। वह गरज कर मेरी ओर बढ़ा।

बराबर के युद्ध में लड़ने में मुझे सदा से आनन्द आता था, पर ऐसे युद्ध में मैं क्या कर सकता था ? सम्भव था कि जो गदा मेरे पास था उस से मैं अधिक से अधिक उसका एक हाथ तोड़ देता। पर उसके बाद ? और मैं भाग निकलने के लिये खिड़की की दिशा में मुड़ा। और उसी क्षण मैंने अपने रक्षक श्वान को देखा जो अत्यन्त दयनीय दशा में पड़ा था। कमरे के एक कोने में थक कर ढेर हुआ, और शरीर जगह-जगह पर घायल, वह मेरी ओर ऐसी दृष्टि से देख रहा था जैसे वह मुझसे दया कि भिक्षा माँग रहा हो। उसी क्षण मैंने भागने के विचार को त्याग दिया। मैंने निश्चय कर लिया कि जिसने अपने प्राणों पर खेल कर मेरे प्राण बचाए हैं। उसके लिये मैं अपनी समस्त शक्ति से युद्ध करूँगा।

मैंने फिर, जैसा कि मैं पहले भी कर चुका था, मंगल पर पृथ्वी की अपेक्षा कम खिंचाव का लाभ उठाया। मैंने अपनी सारी शक्ति लगाते हुए एक घूँसा अपनी ओर बढ़ते हुए रीछ की नाक पर दिया। जिस घूँसे का परिणाम पृथ्वी पर कुछ भी नहीं होता, उसने उस भारी भरकम रीछ को गिरा दिया। जैसे ही वह गिरा मैंने गदा उठा कर उसका काम तमाम कर दिया।

जैसे ही वह गिरा, अपने पीछे एक धीमी हँसी सुन कर मैं पलटा, और मैंने देखा कि एक टानार, नीनी और तीन चार और योद्धा खड़े हुए तालियाँ पीट रहे हैं। नीनी ने जगने पर मुझे अनुपस्थित देखा तो उसने टानार से कहा और वह तुरन्त दो-तीन और मंगल-वासियों को लेकर

मेरी खोज में चल पड़े। इधर खिड़की से बाहर निकले रीछ ने, जब ये लोग नगर के इस भाग में पहुँचे तो, अपने क्रोध से भरी गरज से इनका ध्यान आकर्षित किया और ये लोग यह सोच कर कि संभवतः मैं ही इसका कारण हूँ उसके पीछे अन्दर घुस आये।

मैंने देखा कि जिस समय मैं अपने प्राण पर खेल कर इस रीछ से लड़ रहा था, नीनी को छोड़कर सब हँस रहे थे। जब मैंने रीछ को मार दिया तो लोग बड़े प्रसन्न हुए और टानार ने मेरी पीठ थपथपायी और नीनी ने बढ़ कर मेरा हाथ पकड़ लिया और चलने को तैयार हुई। मैंने देखा कि चलने के पहले ये लोग मेरे रक्षक श्वान की ओर उँगली उठा कर कुछ कह-सुन रहे हैं। मुझे लगा जैसे उसकी जान खतरे में है, और मैं द्वार पर क्षण भर को ठिठक गया। और ठीक ही किया मैंने, क्योंकि उसी क्षण एक योद्धा ने अपनी पिस्तौल निकाल कर उसकी ओर गोली छोड़नी चाही। मैंने लपक कर उसके हाथ से पिस्तौल छीन ली और जा कर उस श्वान को उठाया और साथ आने का आदेश दिया।

मेरे इस कार्य से उन लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि 'दया' और 'प्रेम' जैसी वस्तुएँ वहाँ पर बहुत कम देखी गई थीं। मैंने जब पिस्तौल छीन ली तो वह योद्धा टानार की ओर देखने लगा। टानार ने उसे समझा दिया कि मैं जो करूँ मुझे करने दिया जाय।

और तब हम सब टानार के भवन की ओर चले। मुझे यह संतोष था कि मंगल में इस समय मेरे दो मित्र हैं—नीनी, जिसके हृदय में मेरे लिये माता का स्नेह था, और यह श्वान, जिसके शरीर में जैसा कि मुझे बाद में पता लगा, मेरे प्रति असीम प्रेम तथा स्वामिभक्ति थी।

६

थोड़े जलपान के पश्चात् नीनी मुझे राजभवन के सामने वाले चौकोर मैदान की दिशा में ले चली। वहाँ पर इस समय लगभग दो सौ रथ खड़े थे, जिनमें विचित्र प्रकार के जन्तु जुटे हुए थे जिनका आकार ऊँट से मिलता था पर उनका सर गेंडे के सर के समान था।

प्रत्येक रथ के अन्दर एक मंगल-वासिनी युवती बैठी थी, और उसके ठीक पीछे एक मंगल-वासी युवक खड़ा था। मंगल-ग्रह में जीव-जन्तुओं को वश में रखने का एक ऐसा उपाय था जो पृथ्वी पर नहीं पाया जाता। यहाँ पर लोगों में, और साथ ही साथ बहुत से पशुओं में भी, एक दूसरे के मन की बात समझ लेने की शक्ति होती है। इसीलिए यहाँ वार्तालाप में भी बहुत थोड़े शब्द बोले जाते हैं, और साथ ही पशुओं को वश में करना भी आसान हो जाता है।

हम सब एक लम्बी-सी पंक्ति लगाकर उसी दिशा में चले जहाँ पर मैंने स्वयं को मंगल-ग्रह में पहले-पहल पाया था। एक रथ पर नीनी बैठी थी और उसके पीछे मैं स्वयं खड़ा था। इन दो सौ रथों के अतिरिक्त लगभग सौ योद्धा आगे और इतने ही पीछे चार-चार की पंक्ति बनाकर चल रहे थे। प्रत्येक रथ के पीछे-पीछे एक मंगलीय श्वान था। मेरे रथ के पीछे वही स्वामिभक्त श्वान था जिसने मेरी रक्षा की हेतु श्वेत रीछों से मुठभेड़ की थी।

हमारा लक्ष्य वही वर्ग के आकार का अंडे रखने का स्थान था, जो चार दीवालों से घिरा हुआ था और जिसकी छत शीशे की बनी हुई थी। जैसे ही हम लोग इस स्थान के समीप पहुँचे सब लोग चार विभागों में बाँट दिए गए और प्रत्येक भाग एक-एक दीवाल के सामने खड़ा हो गया।

इसके पश्चात् लगभग दस लोग अपने रथों से उतर कर उसके बिल्कुल पास गए और मैंने देखा कि इनमें टानार भी है जो राजा को कुछ समझाने का प्रयत्न कर रहा है। पीले मंगल-वासियों के इस राजा का नाम, जैसा कि बातचीत से पता लगता था, 'जाटक' है और साथ ही यहाँ पर राजा को 'पंज' कहते हैं। जाटक के कहने पर टानार ने मुझे बुलवाया और मुझसे कई बार 'बल' कहा। मैं तुरन्त उसका आशय समझ गया और उस अंडों के घर की चौकोर सीमा के एक ओर से दूसरी ओर तक बिना बाधा छलाँग गया।

इसके पश्चात् जाटक ने कुछ आज्ञा दी जिसे सुनने के बाद सब लोगों ने मिल कर दो पंक्तियाँ बनाईं जो एक दूसरे के समानान्तर थीं और जो एक दीवाल को एक छोर पर छूती थीं और दूसरे छोर पर खुले मैदान में समाप्त होती थीं। फिर उस दीवाल में दोनों-पंक्तियों के बीचो-बीच एक छेद बनाया गया। उसमें से होकर, टूटे हुए अंडों से निकले हुए बच्चे बड़े वेग से निकलते थे और फिर दोनों पंक्तियों के बीच में बने हुए मार्ग पर दौड़ते हुए पंक्तियों के अन्त तक जाते थे, जहाँ वे पकड़ लिए जाते थे। इन्हें युवतियाँ पकड़ती थीं और फिर प्रत्येक युवती अपने रथ में एक शिशु को बैठा लेती थी।

जब सब बच्चे निकल आए तब दीवाल चुन दी गई और मैं अपने रथ की ओर वापस लौटा। वहाँ पर नीनी पहले से ही एक शिशु को अपनी गोद में लिए हुए मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। इन शिशुओं को पालने-पोसने में केवल दो बातों पर ध्यान दिया जाता है--पहली तो यह कि इन्हें यहाँ की भाषा अथवा रहन-सहन के ढंग सिखाए जाते हैं, और दूसरी यह कि इनसे प्रथम वर्ष से ही इन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार के शस्त्रों को काम में लाना सिखाया जाता है। शीशे के अंडे-घर में इन्हें पाँच वर्ष तक रहना पड़ता है, जिसके बाद यह अंडे की दीवाल तोड़ कर निकल आते हैं। यहाँ की रीति के अनुसार न तो इन शिशुओं को अपने

माता-पिता का ज्ञान रहता है और न इनके माता-पिता को इनका ज्ञान रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि इन शिशुओं को माता-पिता का स्नेह नहीं प्राप्त होता, और इसीलिए ये शैशव-काल से ही क्रूर अथवा युद्ध-प्रेमी होते हैं।

मंगलवासियों का लक्ष्य केवल एक ही है--वह यह कि केवल उन्हीं को रहने का अधिकार मिले जो अपनी शक्ति से अपने को रहने योग्य साबित कर दें। इसीलिए इनके यहाँ आरम्भ से ही छाँटा जाता है, जिससे कि सब में योग्य ही बचें। पहले तो पाँच वर्ष के बीच में जितने अंडे दिये जाते हैं, उनमें से सौ अंडे प्रति वर्ष के अनुसार, पाँच सौ अंडे एक अंधकारमय कोठरी में रखे जाते हैं, और इन पाँच वर्षों के अन्त पर इन अंडों को दूर के अंडेघरों में ले जाया जाता है, जहाँ से अंडे से बाहर निकल आये शिशु एकत्रित कर लिए जाते हैं और इन नए अंडों को अन्दर रख दिया जाता है।

इसके पश्चात् शिशुओं के बढ़ने के समय, जो शिशु दुर्बल अथवा कायर होते थे उन्हें मार डाला जाता था। इसका यह आशय नहीं कि मंगलवासी शिशुओं के प्रति आवश्यकता से अधिक क्रूर होते थे, परन्तु एक ऐसे संसार में जहाँ के खाद्य एवं खनिज पदार्थों में कमी हो गई थी, केवल ऐसे दो व्यक्ति बस सकते थे, जो अपनी शक्ति के बल पर रह सकें।

ये अंडे-घर बसे हुए नगरों से बहुत दूर बनाए जाते हैं, जिससे कि अन्य जातियों के व्यक्ति इन्हें ढूंढ़ न निकालें, क्योंकि यदि वे इन्हें नष्ट कर दें तो पाँच वर्षों तक इन्हें कोई शिशु न प्राप्त हो। नगर लौटने के पश्चात् कुछ दिनों तक कोई विशेष घटना नहीं घटी। उसके दूसरे दिन कुछ मंगलवासियों का एक समूह गया था जिसने कि अँधेरी कोठरियों से नये अंडे निकाल कर फिर उस अंडे-घर में रख दिया था।

नीनी का अधिक समय मुझे और उस छोटे शिशु को भाषा एवं शस्त्र-विद्या सिखलाने में निकलता था। मंगल-ग्रह में भाषा इतनी सरल है कि मैं शीघ्र ही थोड़ा बहुत उसे बोलने अथवा समझने लगा। नीनी ने इसके बाद थोड़े से शब्दों में हमें बतलाया कि यह जाति उस नगर की नहीं है, परन्तु एक ऐसे स्थान से आई थी जो बहुत दूर था, दक्षिण की ओर और शीघ्र ही सब लोग उस स्थान के लिये प्रस्थान करेंगे।

जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूँ मंगल की भाषा के साथ-साथ वहाँ पर बहुत से शब्द बिना कहे लोग एक दूसरे के मन से पढ़ लेते हैं। मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यहाँ मैं तो औरों के मन की बात जान लेता हूँ, और लोग मेरे मन की बात नहीं जान पाते। इसका कारण मेरी समझ में कभी नहीं आया, हाँ यह अवश्य है कि इस बात के बाद से मैंने बहुत लाभ उठाया।

७

इस घटना के लगभग एक सप्ताह बाद हम लोग इनके घर की दिशा में चले, पर नगर से अभी थोड़ी दूर भी नहीं गए थे कि सहसा वापस भागने की आज्ञा मिली। जैसे-तैसे वापस भागे, और नगर के किनारे की जो पहली अट्टालिका थी उसमें मैं नीनी के साथ छुप गया। और सब लोग भी आसपास की अट्टालिकाओं में छुप गए। पर इनके छुपने का कारण अभी तक मेरी समझ में नहीं आया था। ऊपर के एक कमरे की खिड़की के पास जाकर जैसे ही मैंने बाहर झाँका सहसा कारण समझ में आ गया।

एक भारी वायु-यान, हल्के हरे रंग का, नीची उड़ान करता हुआ धीरे-धीरे हम लोगों की दिशा में चला आ रहा था। और फिर उसके पीछे नौ और वायु-यान आते दिखे। बड़ी शान्ति से ये एक पंक्ति बनाए हुए चले जा रहे थे कि सहसा हमारी ओर से गोलियों की बौछार ने उनका स्वागत किया। और एक क्षण में वातावरण बिल्कुल बदल गया। सबसे आगे आने वाले वायु-यान से हमारी दिशा में गोलियाँ आने लगीं, और उसके बाद फिर शेष सब वायु-यान भी गोली बरसाने लगे। उन वायु-यानों ने एक बड़ा सा गोला बनाया, जिसमें उड़ते हुए जैसे ही कोई वायु-यान हमारे पास आता, वह हमारी ओर आग उगलता जाता। पर इधर से भी गोलियाँ बड़े वेग से चल रही थीं, और साथ ही, जो बात आश्चर्यजनक थी वह यह कि इन लोगों का निशाना बड़ा पक्का था और इसमें कभी चूक नहीं होती थी।

ऐसा शीघ्र ही प्रतीत होने लगा कि वायु-यानों से आने वाली गोलियाँ उतने सही निशाने पर नहीं आ रही थीं। इसका कारण यह था कि इनकी दुर-बीनें इधर की गोलियों से टूट चुकी थीं। पीले मंगलवासियों की लड़ने

की रीति बड़ी विचित्र है। इनके यहाँ प्रत्येक योद्धा केवल एक प्रकार की वस्तुओं का निशाना लगाता है। जिनका निशाना सबसे पक्का था। वे दुरबीनों तथा और देखने अथवा सुनने के यन्त्र, जैसे बेतार के यन्त्र का निशाना लगाते थे, जिससे कि शत्रु की बड़ी-बड़ी तोपें तथा बन्दूकें ठीक निशाने पर गोली न चला सकें। कुछ और लोग इन तोपो तथा बन्दूकों को चलाने वालों को अपना लक्ष्य बनाते हैं, कुछ वायु-यान के चलाने वालों को और कुछ वायु-यान के यन्त्रों को बनाते हैं। हम लोगों की ओर से आक्रमण इतना अकस्मात् हुआ था कि थोड़ी देर के लिए वे चकित रह गये थे, और इसी बीच उनकी दूरबीनें तथा उनके बेतार के यन्त्र बेकार हो गये।

थोड़ी देर में पहला वायु-यान जिधर से आया था उसी दिशा में मुड़ा और इसके बाद एक-एक करके सभी उस दिशा में मुड़े और यह प्रत्यक्ष था कि इस समय उनका प्रयत्न भाग निकलने का था। यह देख कर हमारे योद्धा लपक कर छत पर चढ़ गए और वहाँ से उन पर गोली चलाने लगे। एक-एक करके सब तो बच के निकल गए, केवल एक वायु-यान, जिसको हमारे आक्रमण ने सबसे अधिक हानि पहुँचाई थी इधर-उधर मँडराने लगा। लगता था कि उसके चलाने वाले मर चुके थे क्योंकि वह हवा में अपने आप घूमता जा रहा था, और थोड़ी दूर सीधे जाने के बाद वह एक लम्बा-सा गोला बनाकर हमारी ही दिशा में लौटा। अब उस पर गोली बरसाने की कोई आवश्यकता नहीं थी, और वह हमारे पास आकर एक विशाल अट्टालिका की दिशा में बढ़ा जा रहा था। पर इससे पहले कि वह उसकी दीवारों से लड़े, कुछ योद्धा उस अट्टालिका के अन्दर घुस गए और अपने भालों को आगे बढ़ाकर उस वायु-यान के टकराने के धक्के को हल्का कर दिया। झट से उस पर रस्सी के फंदे फेककर उसे सम्हाल कर नीचे उतारा गया।

इसके बाद उन लोगों ने उस वायु-यान के अन्दर घुसकर बहुत देर

तक खोजबीन की, और लूट का सामान कई गाड़ियों में लदाकर वापस भेज दिया गया। जितने लोग उसमें थे सब मरे हुए थे, सिवा एक को जिसे ये लोग बंदी बनाकर बाहर लाए। जितनी दूर पर मैं था, इसके सिवा मैं कुछ नहीं कह सकता था कि बंदी इन लोगों से कम ऊँचाई का है, उसके दो पैर, दो हाथ हैं और उसका रंग एक दम गोरा है, थोड़ी लालिमा लिये हुए।

सब लूट-पाट कर ये लोग दूर जाकर खड़े हो गए, और एक मंगलवासी पीछे रह गया जिसने एक टीन में से कुछ उस वायु-यान पर छिड़का और उसके बाद कुछ दूर आकर एक छोटा-सा गोला उस दिशा में फेंका। और दूसरे क्षण उस जगह थी एक जलती हुई चिता, जिसकी लपटें उठकर कदाचित् आकाश को चुनौती दे रही थीं।

इस सारी घटना को देखकर मुझे बड़ा दुख हुआ, विशेषकर यह बात सोचकर कि ये लोग कितनी शान्तिपूर्वक चले जा रहे थे कि एकाएक पीछे मंगलवासियों के इस समूह ने उन पर आक्रमण कर दिया। मेरे हृदय में उन अज्ञात व्यक्तियों के लिए थोड़ी सहानुभूति जग उठी और मैं सोचने लगा कि क्या ही अच्छा हो यदि एक दिन वे लोग एक बहुत बड़ी सेना लेकर इन लोगों से इसका बदला लें।

इसके पश्चात् मैं नीनी और टीपू (यह उस मंगलीय श्वान का नाम था, जैसा कि मुझे नीनी ने बतलाया था) के साथ उस नगर की ओर वापस लौट आया। जाटक की आज्ञा के अनुसार अभी हम लोग एक सप्ताह और रुकेंगे, ऐसा मुझे मालूम हुआ, जिससे कि यदि वह वायु-यान वाली जाति फिर से आक्रमण कर दे तो हम लोग तैयार मिलें।

जैसे ही हम लोग नगर के मध्यभाग के उस चौकोर मैदान के समीप पहुँचे, मैंने एक ऐसी वस्तु देखी कि मैं क्षण भर के लिए चकित रह

गया और उसी क्षण मेरे हृदय में आशा, भय और संतोष की लहरें दौड़ गईं। मैंने देखा कि वह बन्दी एक अति सुन्दर युवती है, जिसकी ऊँचाई और शरीर की बनावट एक दम वैसी थी जैसी कि पृथ्वी पर होती है। पर क्या पृथ्वी पर इतने वर्ष रहने पर भी मैंने इतनी सुन्दर कोई युवती देखी थी? नहीं! हल्के आसमानी रंग की रेशमी वेशभूषा, गोरे बदन, गुलाबी गालों तथा नीले नयनों की छटा देखने योग्य थी! और इन सब पर काजल जैसे काले केश की लटें जादू कर रही थीं।

पहले तो उस अज्ञात बाला ने मेरी ओर नहीं देखा पर जैसे ही वह एक बड़े से फाटक के अन्दर जाने लगी उसने मुझे देखा और क्षण भर के लिए उसके नयनों में एक ज्योति सी चमक उठी। उसने अपने हाथ से मुझे एक संकेत सा किया, पर मंगल-ग्रह की यह रीति-रिवाज से सर्वथा अपरिचित रहने के कारण मैं उसका कोई उत्तर न दे सका। मैंने उत्तर नहीं दिया, यह देखकर उसका मुँह उतर गया, और क्षण भर पहले जो आशा की ज्योति उसके आनन पर चमक उठी थी, वह निराशा के अंधकार में परिवर्तित हो चुकी थी।

मेरी आत्मा कह रही थी कि उस क्षण उसने मुझसे रक्षा और शरण की भिक्षा माँगी थी, जिसका मैं कोई उत्तर भी नहीं दे सका था। और दूसरे क्षण वह मेरी आँखों से ओझल हो गई।

जब हम घर लौटे तो एक विशेष घटना हुई । जैसे ही मैं अपने कमरे में पहुँचा, एक योद्धा, जो कदाचित् मेरी प्रतीक्षा कर रहा था, उठा और उसने एक मंगलवासी योद्धा के सब वस्त्र और शस्त्र मुझे भेंट किये । भेंट करते समय उसके ढंग से लग रहा था, कि वह मेरा आदर कर रहा है । इसे नीनी ने लेकर, कुछ और स्त्रियों के साथ मिलकर मेरे शरीर के अनुसार छोटा कर दिया, और फिर मुझे पहन लेने के लिये कहा ।

इसके बाद के दिन फिर भाषा एवं शस्त्रविद्या सीखने में व्यतीत होने लगे । मैंने नीनी से शपथ ले ली थी कि जब तक मैं मंगलग्रह की भाषा पूरी तरह से न सीख जाऊँ वह मेरा भेद किसी से बतलाए नहीं । नीनी से मुझे पता लगा कि वहाँ पर स्त्रियों और पुरुषों के कार्य अलग-अलग बटे हैं । स्त्रियों का कार्य है शिशुओं के पालन-पोषण का ध्यान रखना, उनका भाषा एवं शस्त्रों से परिचय कराना और इसके अतिरिक्त गोलियाँ, बन्दूकें और अन्य शस्त्र भी बनाना । इसके विपरीत पुरुषों का कार्य है युद्ध में सेना का संचालन, लड़ने में कुशलता प्राप्त करना और विधान पर ध्यान देना ।

इसके बाद बहुत दिनों तक मैंने उस अज्ञात बाला को नहीं देखा जिसे ये लोग बंदी बना कर लाए थे । और एक दिन देखा भी तो केवल एक क्षण के लिए, जब उसे लोग जाटक के दर्बार की ओर ले जा रहे थे । पर उसी क्षण मैंने दो बातों पर ध्यान दिया । एक तो यह कि वह प्रहरियों से कभी-कभी बोल लेती है, जिसका अर्थ यह है कि वह भी इसी भाषा को बोलती है । दूसरे यह कि उसके साथ जो प्रहरी रहते थे वे उसकी ओर अत्यन्त क्रूरतापूर्ण व्यवहार करते थे ।

उसी रात एक बड़ी सुन्दर घटना हुई। मेरे सोने के कमरे में मेरे और नीनी के अतिरिक्त दो या तीन स्त्रियाँ और सोती थीं। रोज सोने से पहले वे आपस में वार्तालाप किया करती थीं, जिनका विषय रहता था उस दिन की कोई विशेष घटना। उस रात भी वे आपस में बात कर रही थीं। मैं कभी कुछ बोलता नहीं था, इसलिए वे समझती थीं कि मैं उनकी बात नहीं समझ पाता।

सुल्का नामक एक बुड्ढी स्त्री भी हम लोगों के साथ रहती थी। वह उस दिन दर्बार में उपस्थित थी, इसलिये और स्त्रियों ने उससे पूछना प्रारम्भ किया।

"हम लोग," एक स्त्री ने पूछा, "कब उस लाल स्त्री की मृत्यु का आनन्द उठा सकेंगे? या पंज जाटक की इच्छा उसे धन के बदले लौटा देने की है?"

"उन लोगों ने निश्चय किया है कि उसे पाटल वापस ले चलेंगे और वहाँ पर अपने पंजक टार्ट् के सामने 'बड़े खेल' में उसकी मृत्यु-यातना का प्रदर्शन किया जायगा, सुल्का ने उत्तर दिया।"

"मेरा विचार था," नीनी ने कहा, "कि वे लोग उसे धन के बदले लौटा देंगे। वह कितनी सुन्दर है!"

इस पर सुल्का और अन्य स्त्रियाँ बिगड़ गईं कि नीनी कोमल हृदय की है!

"मुझे दुख है कि तुम आज से लाख वर्ष पहले पैदा न हुईं," सुल्का ने कहा, "जब कि समुद्र आज के समान सूखे न थे, जब कि लोगों को किसी वस्तु की कमी न थी, और उनका हृदय भी पानी की तरह कोमल था। आज के युग में इस प्रकार की कायरता शोभा नहीं देती। यदि टानार को तुम्हारे हृदय की कोमलता का पता लग गया तो वह माता के पद से तुम्हें हटा देगा और तुम्हें फिर अंडे टूटने पर शिशु

नहीं मिलेंगे।"

इस पर नीनी को भी क्रोध आ गया। वह बोली, "उस लाल स्त्री की ओर अपने व्यवहार में मुझे कोई गलत बात नहीं दिखाई पड़ती। उसने न तो हमें कोई हानि पहुँचाई और न वह जब पहुँचाती तब हम ऐसी ही दशा में उसके सामने पहुँचते। उसकी जाति के लोग शान्तिपूर्वक रहते हैं और वे जब तक युद्ध नहीं करते तब तक लड़ना उनका कर्तव्य नहीं हो जाता। इसके विपरीत हैं जो सदा आपस में ही लड़ते रहते हैं। हम लोगों का जीवन रुधिर से सना हुआ है और यह परिस्थिति तब तक चलती रहेगी जब तक कि हम उस रहस्यमय नदी बालनी की ओर नहीं चले जाते। भाग्यवान है वह जिसकी मृत्यु जल्दी आ जाती है। कम से कम इस भयानक और वीभत्स परिस्थिति से तो उसका छुटकारा हो जाता है। जाओ टानार से जो कहना है जा कर कह दो, मुझे जो कहना था मैंने कह दिया।"

नीनी जिन विचारों को आज तक अपने अन्तर में छुपाये हुई थी आज वे ज्वालामुखी के समान फूट निकले थे। उनके विचारों से उन स्त्रियों को इतना आश्चर्य हुआ कि वे चुप रह गईं।

इस घटना से एक बात का मुझे पता लग गया और वह यह थी कि उस अज्ञात बाला के प्रति नीनी के हृदय में दया अवश्य थी, और यदि कभी मैं उसे छुड़ाने में नीनी की मदद मागूँ तो वह अपना भरसक प्रयत्न मेरी मदद करने के लिये करेगी।

दूसरे दिन सुबह मैं टीपू के साथ घूमने निकला। अब मुझे काफी स्वतंत्रता मिल गई थी, पर नीनी ने मुझे दो बातों से सावधान कर दिया था। एक तो यह कि कभी भी बिना शस्त्रों को साथ लिये न जाऊँ, क्योंकि वहाँ पर श्वेत रीछ बहुत हैं। दूसरे यह कि मैं नगर के बाहर जाने का प्रयत्न न करूँ, क्योकि टीपू इसे रोकने का प्रयत्न करेगा, और उसका स्वभाव ऐसा था कि वह मुझे जीवित या मृत, किसी न किसी अवस्था में वापस ले ही आयेगा।

आज मैं घूम रहा था कि सहसा मैंने अपने आप को नगर की सीमा के पास पाया। मेरे सामने इस समय बड़ा ही मनोरम दृश्य था। मुझसे थोड़ी ही दूर पर पुष्पों से लदी पहाड़ियाँ थीं और उनके बीच से निकली हुई एक-एक घाटी बड़ी सुन्दर लग रही थी। मेरी इच्छा आगे बढ़ कर नई वस्तुएँ देखने की सदा से ही रहती आई थी। मैंने सोचा कि चलो इसी बहाने टीपू की परीक्षा भी हो जाएगी।

मुझे विश्वास था कि टीपू के हृदय में मेरे प्रति प्रेम और स्वामिभक्ति है। इसी विश्वास के बल पर मैं आगे बढ़ा। जैसे ही मैं सीमा के बाहर जाने लगा, टीपू दौड़ कर मेरे सामने आ गया और मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगा। उसकी आँखों में क्रोध नहीं था, थी केवल विनती। मैंने उसके शरीर को धीरे से थपथपाया और उसे पुचकारा। वह प्रसन्न हो कर पहले तो मुस्कुराया और फिर कूद-कूद कर लोट लगाने लगा। मैं स्वयं बहुत प्रसन्न हो उठा, और आज बहुत दिनों बाद मैं हँसा, इतना हँसा कि पेट में बल पड़ गये।

परन्तु मेरे हँसने का टीपू पर बड़ा ही विपरीत असर पड़ा। वह घबरा

गया और मेरे पास आकर खड़ा हो गया। क्षण भर पहले की सारी चंचलता गायब हो गई। और तब मुझे मंगल में रहने का अर्थ याद आया। मैंने चुपचाप टीपू को सहलाया, और फिर उठकर उन पहाड़ियों की दिशा में चल पड़ा। अब टीपू ने कुछ न कहा। वह मेरे पीछे-पीछे चुपचाप आने लगा। थोड़ी देर तक पहाड़ियों में घूम कर मैं वापस लौट आया।

मेरा सुबह का घूमना मेरे लिए अच्छा ही रहा। इसने मेरे और टीपू के सम्बन्ध का सदा के लिए निश्चय कर दिया। मैं समझ गया कि अब मैं जब भी चाहूँ भाग सकता हूँ। मैं शीघ्र ही लौट आया जिससे कोई इस भेद को जान न पाये।

राजभवन के सामने वाले मैदान के समीप आकर मुझे उस अज्ञात बाला का दर्शन तीसरी बार हुआ। उसे लोग दर्बार की ओर ले जा रहे थे। जैसे ही उसने मुझे देखा उसने झट से अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया। यद्यपि मुझे यह बुरा लगा, पर फिर भी मुझे यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि इसके इस व्यवहार में और पृथ्वी की स्त्रियों के व्यवहार में समानता थी।

मैं भी उसके पीछे-पीछे दर्बार में पहुँचा। थोड़ी ही देर में जाटक अपने मंत्रियों के साथ दर्बार में आया, और फिर वे सब अपनी-अपनी जगह पर जा कर बैठ गये। उनके नीचे, उनसे थोड़ी दूर पर, उस अज्ञात बाला को पकड़े हुए दो स्त्रियाँ खड़ी थीं, जिनमें से एक सुल्का थी। मैंने यह भी देखा कि सुल्का का व्यवहार उसके प्रति अत्यन्त क्रूर था। वह उसको ऐसे पकड़े थी कि उसके नह उस बाला की बाँह में बुरी तरह गड़े हुए थे। जब वह उसको एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर ले जाना चाहती तो उसे बड़े कस के धक्का देती। दूसरी स्त्री का व्यवहार इतना क्रूरतापूर्ण नहीं था।

इसके बाद दर्बार का कार्य-क्रम प्रारम्भ हुआ। सब से पहले जाटक

ने उस बाला से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मेरा नाम है मोना, और मैं लोमी के राजकुमार मान टेमर की पुत्री हूँ।"

"तुम और तुम्हारे अन्य साथी इधर से क्यों जा रहे थे ?" उसने फिर पूछा।

इस पर उस बाला ने उत्तर दिया, "हम लोगों की टोली केवल वैज्ञानिक अनुसंधान के हेतु आ रही थी, और इसे मेरे पिता के पिता वारेल मान, 'जो कि लोमी के पंजक हैं,' ने भेजा था। हम लोगों का उदेश्य था वायु के ताप, दबाव, धन और उसकी दिशा इत्यादि को समझना। हम लोग युद्ध के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं थे, क्योंकि हम शान्तिपूर्ण उद्देश्य से निकले थे, जैसा कि हमारे झंडे भी बतला रहे थे। हम लोग जिस उद्देश्य से जा रहे थे वह आप के भी उतने ही लाभ की वस्तु थी जितनी कि हमारे। वर्षों से हमारे वैज्ञानिकों ने मंगल की वायु के थोड़े दबाव और पानी की कमी को जीतने का प्रयत्न किया है। वर्षों से हमारे वैज्ञानिकों ने वायु को वैज्ञानिक रीति से बनाया है, और बिना उनकी मदद के आज इस जगह पर कोई भी जीवित न रह सकता।

"आप लोग हम लोगों से शान्ति का पाठ क्यों नहीं सीख लेते। क्या आप लोग सदा लड़ते रहियेगा ? आप लोगों का जीवन क्या है ? आप सब एक दूसरे से घृणा करते हैं। समय बेसमय आप आपस में ही लड़ जाते हैं और एक दूसरे की जान ले डालते हैं। आप शान्ति के पथ पर क्यों नहीं आ जाते ? हम आप मिलकर कहीं अधिक उन्नति कर सकते हैं। मिल कर हम कठिनाइयों का कस कर सामना कर सकते हैं। आज आप से सब बड़े लाल पंजक की पोनी ने शान्ति की राह पर आप को बुलाया है। बोलिये आप तैयार हैं ?"

थोड़ी देर के लिये सब लोग चुप रह गये। जाटक और उसके साथी

सब सोच-विचार में लगे थे। युगों से चली आई परम्परा को तोड़ने का साहस है किसी में ? आज तक पीले मंगलवासियों का केवल एक ही ध्येय रहा है--लड़ना, आपस में लड़ना, दूसरों से लड़ना और अन्त तक लड़ना। क्या किसी में इतना साहस है कि इस परम्परा को तोड़ कर शान्ति के पथ को अपनाए। मैंने देखा कि सब लोग सोच-विचार कर रहे हैं। हरएक के अन्दर एक मानसिक संघर्ष चल रहा था। पर किसी में इतना साहस नहीं था कि वह उठ कर कुछ कह सके। सहसा मैंने टानार की ओर देखा, जो कुछ कहने की इच्छा से उठा।

क्या शब्द उसके मुख से निकले यह कोई नहीं जान पाया, क्योंकि उसी क्षण एक योद्धा अपनी जगह से उठा और क्षण भर में वह लपक कर उस बाला के पास जा पहुँचा और उसने एक घूँसा उस बेचारी की नाक पर लगाया, और जब वह गिर पड़ी तो एक पैर उसके ऊपर रख कर वह बड़े जोर से हँस पड़ा। इतना मेरी सहनशीलता की सीमा से परे था और पलक झपकते ही मैं उसके पास जा पहुँचा और अपनी तलवार निकाल कर मैंने ललकारा। उसने भी अपनी तलवार निकाल ली और हम लोग लड़ने लगे। उसने युद्ध के नियमों को तोड़ते हुए पिस्तौल निकालने का प्रयत्न किया, पर मैंने उसे समय नहीं दिया। वह मुझसे बड़ा अवश्य था पर जल्दी अपनी जगह से हिल नहीं पाता था। थोड़ी ही देर में मेरा एक वार उसके गले पर पड़ा और दूसरे क्षण वह वहीं पर ढेर हो गया।

मोना अब उठ कर बैठ गई थी पर उसके नाक से अभी तक रुधिर बह रहा था। मैंने झट उसे सँभाला और उसे एक बेंच के ऊपर ले जाकर लेटा दिया और अपने कपड़े में से एक टुकड़ा फाड़ कर उसकी नाक पर बाँध दिया। जल्दी ही उसका खून बन्द हो गया। उसकी आँखों में अभी तक आश्चर्य की झलक उपस्थित थी। जब वह बोल सकने योग्य हो गई तो उसने पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया ? जब मैंने पहली बार तुम्हें

संकेत दिया था तो तुमने उसका उत्तर भी न दिया, और अभी मेरे लिए तुमने एक अपने ही साथी की हत्या की। तुम कौन हो और कहाँ से आए हो, जो तुम्हारा शरीर हमारी जाति के शरीर जैसा है, और रंग भी?"

"यह एक लम्बी कहानी है," मैंने कहा, "यदि कभी समय हुआ तो बतलाऊँगा। इस समय तो तुम केवल इतना जान लो कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ और जहाँ तक मेरी शक्ति है, और जितनी स्वतंत्रता मुझे मिलेगी उसके अनुसार मैं तुम्हारी सेवा के लिए सदा तैयार मिलूँगा।"

"तो क्या तुम भी बन्दी हो? पर तुम्हारी पोशाक तो एक मंगलीय योद्धा की है। और तुमने अपना नाम नहीं बतलाया, और यह भी नहीं कि तुम कहाँ के निवासी हो।"

"हाँ मोना, मैं भी बन्दी हूँ। मेरे शरीर पर एक योद्धा की पोशाक क्यों है यह मैं नहीं जानता। मेरा नाम राकेश है और मैं पृथ्वी के भारत देश का निवासी हूँ।"

इसी समय एक योद्धा अपने हाथ में एक और योद्धा के वस्त्र और शस्त्र लेकर मुझसे भेंट करने के लिए आ गया। और सारा भेद एक क्षण में मेरी समझ में आ गया। मैं समझ गया कि यह मंगल का नियम है कि यदि कोई योद्धा किसी दूसरे योद्धा को परस्पर युद्ध में मार देता है तो वह उसकी जगह ले लेता है। और मेरी समझ में यह भी आ गया कि क्यों मुझे उस पहले योद्धा के मरने के बाद से ही थोड़ी स्वतंत्रता मिल गई थी। लगता था कि अबकी बार जिसे मैंने मारा था वह पीले मंगलवासियों की सेना में ऊँची जगह पर था।

जैसे ही मैं उससे वस्त्र इत्यादि ले चुका टानार मेरे पास आया और उसने मुझसे पूछा कि मैं इतनी जल्दी मंगल की भाषा कैसे बोलने लगा। इस पर मैंने उसे बतलाया कि यह सब नीनी की कृपा है। इसके बाद उसने बतलाया कि मैं अब मृत मनुष्य की जगह पर था, या दूसरे शब्दों में मैं

अब एक छोटी सेना का सेनापति और दर्बार का एक अंग था। उसने बताया कि जाटक का कहना है कि मुझे वे लोग पाटल ले चलेंगे और वहाँ पर वे लोग मुझे अपने पंजक टार्टू के सामने कर देंगे उसके बाद यह टार्टू की इच्छा पर रहेगा कि वह मुझे अपनी सेवा में रक्खे, या मुझे बड़े खेल में भेज दे। पर तब तक उन लोगों के बीच में मेरा एक मंगलीय सेनाध्यक्ष का आदर होगा।

इसके बाद मैंने टानार से कहा, "मैंने आप की सारी बातें सुनीं। पर एक बात की ओर मैं आप का ध्यान खींचना चाहता हूँ और वह यह है कि मैं मंगल का रहने वाला नहीं हूँ और इसलिये मेरे कुछ विचार यहाँ वालों के विचार से भिन्न हो सकते हैं। यदि लोग मुझे अलग छोड़ देंगे तो मैं भी किसी से कुछ नहीं कहूँगा। परन्तु एक बात हर एक को समझ लेनी चाहिए कि यदि किसी ने मेरे सामने मोना की ओर एक आँख भी दिखाई तो उसे पछताना पड़ेगा।"

मैंने देखा कि मेरी बात को सब लोगों ने ध्यानपूर्वक सुना और उनके ऊपर मेरे इस छोटे से भाषण का असर अवश्य पड़ा।

इसके बाद मैंने मोना को एक हाथ से सहारा दिया और उसे साथ लेकर और टीपू को बुला कर मैं पंज जाटक के दर्बार से बाहर आया। अब मैं सेनाध्यक्ष था, इसलिए किसी ने रास्ते में मुझे कोई बाधा न दी।

मुझे शीघ्र ही पता लग गया कि मैं गलती कर रहा हूँ। जैसे ही हम राजभवन के सामने आए, वे दोनों स्त्रियाँ, जो मोना को दर्बार में ले गई थीं, फिर आ गईं। मोना उन्हें देखते ही घबरा गई और मुझसे चिपक गई। मैंने उन स्त्रियों को डाँटा और सुल्का को सम्बोधित करके कहा कि अब मोना उसके पास नहीं रहेगी और अब इसकी रक्षा नीनी करेगी। इस पर वह कुछ भुनभुनाती हुई चली गई।

मैं मोना को साथ लेकर नीनी के पास पहुँचा और उससे मैंने कहा कि अब आगे से मोना उसी के साथ रहेगी। मैंने उससे प्रार्थना की कि वह मोना की रक्षा पर उतना ध्यान दे, जितना उसने मेरी रक्षा पर दिया था। नीनी अब तक मेरे वस्त्रों को देख रही थी। उसने मुझे बतलाया कि जिस योद्धा को मैंने आज मारा था वह बहुत वीर और नामी था, और उसका नम्बर यहाँ के योद्धाओं में दसवाँ था।

मैंने नीनी से कहा कि अब वह अपने और मोना के लिए कोई दूसरा मकान ढूँढ़ ले, जहाँ पर सुल्का उन्हें न सताए, मैं कहीं और पुरुषों के साथ रह लूँगी। इस पर वह तैयार हो गई। मैं उन दोनों को साथ लेकर उनके लिए एक अच्छा-सा मकान ढूँढ़ने के लिए निकला। राजभवन के पास ही एक और भी सुन्दर अट्टालिका थी जो खाली थी। मैंने उन दोनों की सम्मति माँगी, और जब वे तैयार हो गईं तो मैंने वहीं उनके रहने की व्यवस्था कर दी।

इस मकान के अन्दर दीवालों पर बड़े सुन्दर-सुन्दर चित्र बने थे जिसमें मनोरम दृश्यों के साथ मनुष्यों का भी चित्रण था, जिनका रंग श्वेत था। इन चित्रों में अधिकतर खेल-कूद का ही चित्रण था। चित्रों में जो मनुष्य दिखाये गये थे वे बड़े सुन्दर वस्त्रों में थे और हीरे-जवाहरात से जड़े हुए गहनों से सुसज्जित थे। मोना

इन चित्रों को देखने में संलग्न थी ।

मैंने नीनी को और थोड़ा सामान लाने के लिए कह दिया और उससे बतला दिया कि जब तक वह नहीं आती है मैं उसकी प्रतीक्षा करूँगा क्योंकि मैं मोना को अकेले नहीं छोड़ना चाहता । जैसे ही नीनी गई मोना ने मुझसे कहा, "और मैं बचकर कहाँ जाऊँगी ? मैं तो स्वयं आप के पास रहूँगी और आपसे मैं अपने पिछले व्यवहार के लिए क्षमा माँगूगी ।"

"तुम ठीक कहती हो मोना, ' 'मैंने कहा," हम दोनों के लिए बचने का कोई उपाय नहीं है । यदि कोई है भी तो केवल साथ रहकर ।"

"जो तुमने टानार से कहा था वह सुना, पर मैं एक बात नहीं समझ सकी और वह यह कि तुम मंगल के नहीं हो । तब फिर तुम हो कहाँ के ? तुम देखने में मेरी जाति वालों के समान हो, पर अभी टानार ने तुम्हारे भाषा सीखने पर आश्चर्य प्रदर्शित किया था, जिसका अर्थ यह है कि तुम पहले और कोई भाषा बोलते थे । सारे मंगल पर केवल एक भाषा बोली जाती है और वह है जो हम लोग बोलते हैं । केवल बालार समुद्र के पास, मोना की घाटी में स्थित बालनी नदी के पास दूसरी भाषा बोली जाती है । पर आज तक जो वहाँ गया है वह लौटकर नहीं आया । और अगर तुम वहाँ से आये हो तो ये लोग तुम्हें जीवित नहीं रहने देंगे । बोलो ! कह दो कि तुम वहाँ से नहीं आए हो ।"

"मैं तुम्हारे यहाँ की रीति-रिवाज नहीं जानता मोना । पर सत्य तो यह है कि मैं बालनी नदी, मोना की घाटी अथवा बालार समुद्र का न होकर पृथ्वी से आया हूँ, जो मंगल की ही तरह एक दूसरा ग्रह है । मैं कैसे आया यह मैं नहीं जानता, पर मैं यहाँ आकर तुम्हारी सेवा कर सका, यह देखकर मुझे प्रसन्नता है । बोलो मोना, क्या जो मैंने तुमसे कहा है, उस पर तुम्हें विश्वास है ?"

वह बड़ी देर तक मेरी ओर एक टक देखती रही और फिर बोली,

"मुझे विश्वास है, यद्यपि मैं समझ नहीं सकती।"

इसके बाद हम बहुत देर तक बातें करते रहे। उसने पृथ्वी के बारे में बहुत-सी बातें जानने की इच्छा प्रकट की। और मैं उसे बतलाता जा रहा था। बातचीत में मुझे लगा कि वह पृथ्वी के बारे में बहुत-सी बातें जानती है। जब मैंने इसका कारण पूछा, तो उसने बतलाया कि उसके देश में वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसी वेध-शालाएँ बनाई हैं जहाँ पर हम दूसरे ग्रहों पर होने वाली वस्तुएँ देख सकते हैं।

हम लोग बात कर ही रहे थे कि इतने में नीनी आ गई। आते ही उसने मुझसे पूछा कि क्या हम लोगों से कोई मिलने आया था। मैंने कहा नहीं, इस पर उसने बतलाया कि जैसे ही वह मकान में घुस रही थी, उसने सुल्का को यहाँ से जाते देखा था। मैं समझ गया कि वह चोरी से हम लोगों की बातें सुन रही थी, परन्तु मुझे कोई ऐसी बात नहीं याद आ रही थी जो हम लोगों के लिए हानिकारक हो, इसलिए मैंने आगे सावधान होने का निश्चय करके इस बात को मस्तिष्क से हटा दिया।

इसके बाद घंटों तक हम लोग सब प्रकार की बातें करते रहे। मोना से मुझे मंगल पर भिन्न-भिन्न जातियों का पता लगा। जो जाति चित्रों में दिखलाई गई थी वह श्वेत मंगल-वासियों की जाति थी, जो प्राचीन काल में इस ग्रह पर थी पर अब नहीं थी। इसके लिए काले, पीले और लाल रंग की जातियाँ भी थीं, जो अब भी थीं।

प्राचीन-काल के मंगलवासी सभ्यता के ऊँचे शिखर पर थे। उन्होंने स्थान-स्थान पर बड़े नगर बसाये थे। पर जैसे-जैसे समुद्र सूखते गए, सब प्राचीन जातियाँ एक दूसरे के समीप आती गईं और उनके परस्पर युद्ध से श्वेत मंगलवासियों की जाति लुप्त हो गई और अन्य जातियाँ रह गईं। पर वह प्राचीन सभ्यता सदा के लिए मर गई। जिस नगर में हम लोग इस

समय थे वह प्राचीन काल में एक प्रसिद्ध नगर था, जो समुद्र के किनारे स्थित होने के कारण एक व्यापारिक केन्द्र था। उस समय इसका नाम पूरग था।

प्राचीन काल के समुद्रों के किनारे ऐसे ही अन्य भी बहुत से नगर थे। जैसे-जैसे समुद्र सूखते गए, छोटे-छोटे नगर उसके किनारे के पास बनते गए। और अब अन्त में लगभग सारा पानी सूखने के बाद केवल एक ही उपाय बचा था—मंगलीय नहरें।

इन्हीं नहरों से आज इनकी सिंचाई इत्यादि का प्रबन्ध होता है।

हम लोग बातचीत करने में इतने मग्न थे कि संध्या हो गई और हमें पता न चला। और पता भी जब चला जब एक योद्धा हाथ में एक पत्र लेकर आया जिसके अनुसार मुझे तुरन्त पंज जाटक के सम्मुख पहुँचना था। टीपू को बुलाकर मैंने उन दोनों की रक्षा करने के लिए समझा दिया और फिर मैं दर्बार में पहुँचा जहाँ पर इस समय जाटक और टानार अपनी-अपनी जगह पर बैठे थे।

११

जैसे ही मैं दरबार के अन्दर धुसा जाटक ने मुझे संकेत से अपने पास बुलाया, और कहा, "तुम अभी हम लोगों के सम्पर्क में थोड़े ही दिन रहे हो, पर इस बीच तुमने हम लोगों के बीच एक आदरणीय स्थान प्राप्त कर लिया। तुम्हारी स्थिति बड़ी विचित्र है। तुम एक बन्दी हो, पर तुम आज्ञा भी दे सकते हो। तुम छोटे से हो, पर तुम एक मंगलवासी योद्धा को घूँसे से ही मार सकते हो। और अभी समाचार मिला है कि तुम मोना के साथ भाग निकलने की योजना पर विचार कर रहे हो। इसके अतिरिक्त स्वयं मोना को भी तुम्हारे बालनी नदी या मोन की घाटी से लौटकर आए होने पर आधा विश्वास है। इन दोनों में से कोई भी आरोप तुम्हारे प्राण लेने के लिये पर्याप्त है। परन्तु हम लोग न्याय-प्रिय हैं और तुम्हारा न्याय पाटल में हमारे पंजक टाटू के द्वारा होगा।

"परन्तु," वह बोलता गया, "यदि इसी बीच तुम मोना के साथ भाग निकले तो टाटू के सामने मुझे उत्तर देना होगा, क्योंकि मैं तो केवल एक पंज हूँ, पीले मंगलवासियों की एक टुकड़ी पर राज्य करने वाला, और वह एक पंकज है जिसके अधीन मेरे जैसे और भी पंज हैं। इसलिये मैं तुम्हे एक बार सावधान किये देता हूँ कि अगर तुमने भागने का प्रयत्न किया तो तुम्हें जान से हाथ धोना पड़ेगा। मोना को हम किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकते उसे हम टाटू के सामने अवश्य ले जाएँगे। आज युगों बाद हमने एक ऐसा बंदी पाया है, क्योंकि वह एक बहुत बड़े लाल पंजक की पोती है, और वह पंजक हमारा बहुत पुराना शत्रु है। उस लड़की ने कहा था कि हम लोग क्रूर हैं। पर तुम देख रहे हो कि हम लोगों में भी न्याय होता है। मुझे जो कहना था मैंने कह दिया, अब तुम जा सकते हो।"

मैं मुड़ कर दर्बार के बाहर आ गया। तो यह थी सुल्का की कृपा! मैं

जानता था कि यह कार्य किसी और का नहीं हो सकता था। इस समय सुल्का टानार की सबसे पक्की जासूस थी। और टानार जाटक का दाहिना हाथ था।

परन्तु इस घटना ने मेरे भाग निकलने के विचारों को दबाने के बदले और उकसा दिया। मैं मोना को टार्टू के हाथों नहीं पड़ने देना चाहता था। नीनी ने मुझसे बता दिया था कि वह अत्यन्त नोच पुरुष था, जो क्रूर के साथ ही साथ अन्य मंगलवासियों की अपेक्षा कामुक भी था। मैं अपने जीते जी मोना को कभी उस नीच के हाथों नहीं पड़ने देना चाहता था।

मैं घूम ही रहा था कि टानार ने पीछे से आकर मेरे कंधे पर हाथ रख दिया। "तुम्हारे रहने का स्थान कहाँ है राकेश," उसने पूछा।

"जी इस समय तो कहीं नहीं। आप यहाँ की रीति से भलीभाँति परिचित हैं, आप ही बताइये।"

"अच्छा तो मेरे साथा आओ," उसने कहा।

इसके पश्चात् मैं बहुत देर तक टानार के साथ घूमता रहा। उसने मुझे बहुत से घर दिखलाए, पर मुझे कोई पसन्द नहीं आया। अन्त में जिस मकान में नीनी और मोना रहती थी उस मकान के बगल वाले मकान की ओर दिखा कर टानार ने बतलाया कि यह उसका मकान है, उसका तिमंजिला और ऊपर की अन्य मंजिलें खाली हैं, और अगर मैं चाहूँ तो मैं उसमें रह सकता हूँ।

मैंने उसे धन्यवाद दिया और उसके बाद शीघ्र ही अपने रहने की व्यवस्था कर ली। टानार ने मुझे बतलाया कि जिन दिनों योद्धाओं को मैंने मार दिया था उनके साथ के जितने नौकर और जितनी स्त्रियाँ थीं सब नियम के अनुसार मेरे अधीन थे और मैं चाहूँ तो उन्हें अपने पास बुला सकता था। मैंने बहुत कहा कि मुझे किसी की आवश्यकता नहीं है, पर टानार ने तुरन्त जाकर कुछ स्त्रियों को खाना पकाने, गोली-बारूद बनाने

ओर बहुत से छोटे-मोटे काम करने के लिए भेज दिया। मैं स्वयं तिमंजिले पर था, इसलिए मैंने अपने सेवकों को ऊपर की मंजिलों पर भेज दिया।

जब सब लोग चले गये तो मैंने अपने नए मकान के अन्दर खोज आरम्भ की। मैंने अपने लिये एक ऐसा कमरा चुना जो सामने की ओर पड़ता था और जो मोना के कमरे के, जो कि बगल के मकान में था, सब से पास पड़ता था। सहसा मुझे सूझा कि मुझे कम से कम ऐसा कोई उपाय ढूँढ़ निकालना चाहिये जिससे आवश्यकता पड़ने पर मोना कम से कम मुझे बुला तो सके।

१२

वायु-यानों के आक्रमण के बाद हम लोग बहुत दिन तक फिर पाटल की दिशा में नहीं चले। इस बीच टानार ने मुझे स्वयं मंगल-ग्रह पर युद्ध करने की शिक्षा दी और साथ ही मुझे दो पशु सवारी करने के लिए उन दोनों योद्धाओं की मृत्यु के कारण मिले थे, जिन पर चढ़ना भी मुझे सीखना पड़ा। ये पशु भी उन्हीं पशुओं की जाति के थे जो मुझे मंगल-ग्रह पर सब से पहले उन बारह योद्धाओं के साथ दिखलाई पड़े थे जो मुझे उस अंडे-घर के पास मिले थे जहाँ पर मैंने स्वयं को पहले-पहल पाया था।

टीपू को वश में करने का ही ढंग मैंने इन पशुओं पर भी लगाया। इन पशुओं को वहाँ पर वांरट कहते थे। पहले तो मैंने अपने दोनों वारटों को यह दिखा दिया कि वे मुझे अपनी पीठ पर से नहीं गिरा सकते थे, और मैंने एक डंडे से मारा भी अपना स्वामित्व दिखलाने के लिए। उसके बाद मैंने धीरे-धीरे उन्हें सहानुभूति और दया से अपने वश में कर लिया। उन बेचारे पशुओं के साथ वर्षों से किसी ने कभी दया तो दिखलायी नहीं थी, हाँ मारा-पीटा अवश्य था। इसलिए मेरे इस स्वभाव के कारण वे मुझसे बड़े प्रसन्न हो गए, और सदा मेरा कहना मानते थे।

थोड़े ही दिनों में मेरे दोनों वारट लोगों के लिए आश्चर्यजनक वस्तु बन गए। जहाँ मैं जाता था वे दोनों मेरे पीछे-पीछे लगे रहते थे। यहाँ तक कि एक दिन टानार ने मुझसे उन वारटों के इतने सीधे स्वभाव का कारण पूछा। मैंने उसे बतलाया कि यह सब केवल दया से हुआ है। मैंने उसे यह भी बतलाया कि अब मुझे विश्वास था कि जहाँ कहीं भी

मैं रहूँगा, ये वारट मेरा साथ सदा देंगे।

जब टानार ने जाटक से पशुओं को वश में करने का मेरा ढंग बतलाया, तो उसने एक सभा की जिसमें मैंने एक भाषण इसी समस्या को सुलझाते हुये दिया। उसी दिन से इन पशुओं को एक नये प्रकार का जीवन मिला, और मुझे जाटक इत्यादि को छोड़ने के पहले यह संतोष हो गया था कि उनके पास कुछ अत्यन्त आज्ञाकारी वारट थे, जो स्वामी की आज्ञा पर अपने प्राण तक दे सकते थे।

इन दिनों काम में लगे रहने के कारण मैं मोना और नीनी से नहीं मिल पाया था। प्रथम तो अवकाश नहीं मिलता था, और उसके बाद यदि कभी अवकाश मिलता था, और इनके घर जाता भी था तो पता लगता कि वे दोनों कहीं घूमने गई हैं। मैंने उनसे बिला शस्त्र को साथ रखे घूमने को मना कर रखा था और टीपू को उनके साथ रहने की आज्ञा दे रखी थी, इसलिए कोई चिंता का विषय नहीं था।

पाटल की ओर प्रस्थान करने के पहले वाले दिन की संध्या को मैंने देखा कि वे दोनों उसी सड़क पर सामने से आ रही थी जिस पर मैं जा रहा था। नीनी को कोई काम था, इसलिए वह मोना को मेरी रक्षा में कर चली गई।

मैं न जाने क्यों मोना के समीप रहकर बड़ी शान्ति का अनुभव करता था। जब तक मैं उसके साथ रहता मुझे ऐसा नहीं लगता कि हम दोनों दो अलग ग्रहों पर पैदा हुए हैं।

जैसे ही मोना ने मुझे देखा, उसका उतरा हुआ मुख खिल उठा, और वह हँस कर बोली, "सुल्का ने मुझसे कहा था कि तुम अब एक सच्चे मंगलवासी बन गए हो और अब तुम मुझे नहीं देखोगे।"

"सुल्का एक नम्बर की झूठी है," मैंने कहा।

इस पर मोना बोली, "मुझे विश्वास था तुम अवश्य मिलोगे। मैं जानती थी कि तुम बाहर से चाहे जितना बदल जाओ, पर हृदय से सदा

मेरे मित्र रहोगे। मेरा विचार है कि ये लोग हम लोगों को दूर रखने का प्रयत्न कर रहे थे, क्योंकि जिस समय तुम खाली होते हो, किसी न किसी बहाने मुझको और नीनी को यहाँ से हटा दिया जाता है।

"इस बीच में," वह बोलती गई, "मैं बहुत जगह हो आई। मैंने नीचे के तहखानों में अन्य स्त्रियों के साथ मिलकर बन्दूक की गोलियाँ बनाईं। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से काम उन्होंने मुझसे लिए।"

सहसा मुझे लगा कि मेरी अनुपस्थिति में इन लोगों ने मोना के कोमल हाथों से ऐसे अनेक कार्य करवाये जिन्हें करना मोना की मान-हानि थी। मैंने झट मोना से पूछा, "क्या इन लोगों ने इधर तुम्हें किसी प्रकार कष्ट पहुँचाया ?"

"ऐसा ही थोड़ा-बहुत, "मोना ने उत्तर दिया, "वे लोग मुझसे जलते हैं कि मैं जो अपने पिता से लेकर चालीस पीढ़ी तक के नाम गिना सकती हूँ और ये लोग अपने माता-पिता तक का नाम नहीं जानते। छोड़ो इन बातों को। आओ आज हम इनके हर अपराध के लिए इन्हें क्षमा कर दें। माना कि हम शीघ्र ही इनके हाथों मारे जाएँगे, पर हम इनसे महान जो हैं।"

संध्या बीत चुकी थी और रजनी ने नभ को आ कर एक काली चादर से ढंक दिया। मंगल के दो चंद्र निकल आए और उन्होंने चाँदनी चारों ओर लुटा दी। वृक्षों के पत्तों से छन-छन कर आती हुई चाँदनी हमारे सामने का मार्ग दिखलाती जा रही थी। शीत अधिक बढ़ती जा रही थी, इसलिए मैंने अपने शरीर से हटा कर एक रेशमी चादर मोना के कंधे पर डाल दी। जैसे ही मैंने कंधे को छुआ मुझे लगा कि मेरे शरीर में विद्युत की एक लहर दौड़ गई है। मुझे लगा जैसे मेरा हाथ उसके कंधे पर आवश्यकता से थोड़ा अधिक रुक गया। मुझे यह भी लगा कि क्षण भर के लिए वह थोड़ा मेरे पास आ गई थी, पर हो सकता है यह मेरा भ्रम हो। उसने मेरे हाथों को अपने कंधे पर से हटाया नहीं। और हम

लोग चुपचाप टहलते हुए चले जा रहे थे।

तभी मुझे लगा जैसे मैं मोना से प्रेम करता हूँ। मेरा रोम-रोम कह रहा था कि मैं उससे प्रेम करता हूँ, और तब से करता आ रहा हूँ जब से मैंने उसे पहले-पहल बंदी घर की ओर जाते देखा था।

पहले तो मैंने सोचा कि उसे अपने प्रेम के विषय में बतलाऊँ, फिर यह सोच कर चुप रह गया कि इससे उसके कष्ट केवल बढ़ ही जायँगे। बात करने के लिये मैंने उससे पूछा, "तुम इतना चुप क्यों हो मोना? क्या तुम नोनी के पास लौट जाना चाहती हो?"

"नहीं-नहीं मैं बहुत प्रसन्न हूँ। जाने क्यों मुझे तुम्हारे पास रहने से एक विचित्र प्रकार का साहस और आत्म-विश्वास मिलता है, और मुझे लगता है जैसे मैं तुम्हारे साथ शीघ्र ही किसी दिन अपने पिता के पास तक पहुँच सकूँगी जहाँ पर वह मुझे अपने गले से लगा लेंगे और मेरी माता मेरे गालों को चूम लेंगी।"

"तो क्या मंगल में लोग चूमते हैं?"

"हाँ, माता-पिता, भाई-बहिन...और...प्रेमी भी।"

"और मोना तुम्हारे माता, पिता, भाई और बहिन हैं?"

"हाँ।"

और...प्रेमी?"

"मंगल-ग्रह में पुरुष ऐसे प्रश्न किसी स्त्री से नहीं करता, जब तक कि वह उसके लिये लड़ कर उसे जीत न चुका हो।" उसने थोड़ी देर रुक कर कहा।

"पर मैं भी तो लड़ा···"मैंने कहना प्रारम्भ किया पर सहसा रुक गया। लगा उसी क्षण मेरी जीभ कट कर गिर जाती तो अच्छा होता। इससे पहले कि मैं और कुछ कहूँ उसने मेरी रेशमी चादर मुझे पकड़ा दी और सिर ऊँचा किये हुए, बिना कुछ कहे अपने घर की ओर चल दी। मैंने उसका

पीछा करना व्यर्थ समझा। मैंने यह अवश्य देख लिया कि वह अपने घर सीधे से पहुँच गई या नहीं। टीपू को मैंने उसकी रक्षा की हेतु उसके पीछे भेज दिया था।

तो यह था प्रेम ! आज तक मैंने पृथ्वी पर न जाने कितनी सुन्दर से सुन्दर बालिकाओं को देखा था पर कभी प्रेम नहीं हुआ और एक दूसरे ग्रह पर, अंडे से उत्पन्न हुई बाला से प्रेम हो गया। मोना औरों के लिये चाहे जैसी हो, पर मेरे लिये देवी थी, जिसमें विश्व की सारी सुन्दरता और कोमलता भरी पड़ी थी।

१३

दूसरे दिन सुबह जब सूर्य ने अपनी झलक दिखलाई तो वह और दिनों से कुछ अधिक लालिमा बटोरे हुए था। प्रातःकाल की शीतल मंद वायु चित्त को प्रसन्न कर रही थी। और हम सब लोग पाटल जाने की तैयारी कर रहे थे। जाने लगे तो मैंने मोना के रथ को ढूँढा और जैसे ही हम दोनों की आँखे चार हुईं उसने अपना मुख दूसरी ओर फेर लिया।

मेरा कर्तव्य था कि मैं देखूँ कि उसे कोई कष्ट न होने पाये, इसलिए मैं उसके पास पहुँचा, और यह देख कर मुझे बड़ा क्रोध आया कि उसका एक पैर एक शृंखला से रथ के एक किनारे से बँधा है। मैंने तुरन्त नीनी से, पूछा, "यह किसने किया ?"

"सुल्का ने यही ठीक समझा," नीनी ने उत्तर दिया।

मैंने जब उस शृंखला पर दृश्यपात किया तो देखा कि वह एक ताले द्वारा बन्द है। मैंने फिर नीनी से पूछा, "इस ताले की चाभी किसके पास है ?"

"सुल्का के पास," नीनी का उत्तर था।

मैं तुरन्त टानार के पास पहुँचा और उससे मैंने उनके मोना की ओर इस क्रूर व्यवहार का कारण पूछा।

"राकेश" वह बोला, "यदि कभी तुम और मोना भागने का प्रयत्न करोगे तो अभी मैं जानता हूँ कि तुम उसे छोड़ कर नहीं जा सकते। इसलिये मैंने जो सबसे उचित उपाय तुम दोनों को रोकने का हो सकता था, किया।"

"अच्छा तो तुम मेरे लिए कम से कम इतना ही कर दो कि वह चाभी तुम सुल्का से ले लो।"

"हाँ इतना मैं करूँगा।"

"या मुझे ही दे दो," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

वह मेरी ओर एकटक कुछ देर तक देखता रहा और फिर बोला, "अगर तुम मुझे अपना वचन दो कि तुम टार्ट् के दर्बार पहुँचने तक भागने का प्रयत्न नहीं करोगे तो मैं तुम्हें चाभी दे दूँ।"

"ना भाई, तब तो तुम्हीं रक्खो।"

वह मुस्कुराया मगर कुछ बोला नहीं।

उस रात मैंने टानार को मोना की श्रृंखला खोलते हुए अपनी आँखों से देखा। मैं टानार को अभी तक समझ नहीं पा रहा था। लगता था बाहर से इतना क्रूर लगने पर भी इस योद्धा के हृदय में कुछ कोमलता थी।

जब मैं मोना के रथ की दिशा में जा रहा था तो मैंने सुल्का को देखा जो मेरी ओर क्रोध भरी आँखों से देख रही थी। देखने से ऐसा लगता था जैसे वह मुझे कच्चा ही खा जायगी।

उसी के थोड़े समय बाद मैंने उसे एक योद्धा से बात करते देखा जिसका नाम ऊजक था। वह बात-बात में मेरी ओर संकेत भी करती थी। अभी तक ऊजक ने किसी बड़े योद्धा को नहीं मारा था, इसलिए उसकी ख्याति अभी तक नहीं हुई थी। उस समय मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया, पर बाद में मुझे इसकी याद करने के लिये पर्याप्त कारण मिला, जिससे मुझे पता लग सका कि सुल्का मुझसे कितनी घृणा करती है।

मोना फिर मुझसे बात नहीं कर रही थी। मैंने नीनी से पूछा, "मोना को क्या हो गया है?"

"उसका कहना है," नीनी ने उत्तर दिया, "कि तुमने ही उसे क्रोध दिलवाया है। और इसके अतिरिक्त वह केवल इतना ही और कहती है कि एक ऐसे व्यक्ति ने उसे चिढ़ाया है जिससे उसके पिता के घर में झाड़ू भी लगाने की तमीज नहीं। और कुछ नहीं कहती है।"

उसके मुंह से पिता के घर में झाड़ू न लगा सकने की बात सुनकर मुझे फिर पृथ्वी की भाषा और मुहावरों और मोना के विचारों में समानता दिखी। और साथ ही मुझे घर की याद भी आई। इस समय और लोग क्या कर रहे होंगे? बहुत देर तक घर की बातें सोचता हुआ मैं सो गया।

दूसरे दिन हम लोग दिन भर लगातार चलते रहे, और केवल दो बार हमारे आगे बढ़ने में बाधा हुई। पहली बार तो तब हुई जब हमें अपने रास्ते से लगभग एक मील की दूरी पर एक अंडे-घर के ही आकार की वस्तु दिखलाई पड़ी। हममें से टानार ने बारह योद्धाओं को चुना, जिनमें मैं भी था, और शेष सब को वहीं छोड़ हम लोग उस अंडे-घर के पास पहुँचे। टानार ने बड़े ध्यान से अंडों को देखा, जो अभी बहुत छोटे दिखलाई पड़ रहे थे, और एक दीवाल के पास उसे थोड़ा-सा भाग गीला भी दिखलाई पड़ा। और उसके मुख पर एक मुस्कान खेल गई।

"ये अंडे कोजक जाति के हैं, और अभी इन्हें यहाँ रखे गये एक दिन से अधिक नहीं हुआ। यदि हम लोग वेग-पूर्वक चलें तो हो सकता है हम उन लोगों को पकड़ लें जो अभी-अभी इन अंडों को रखकर गए हैं।" टानार ने कहा।

इसके बाद शीघ्र ही सब अंडों को तोड़-फोड़ दिया गया और हम लोग शेष लोगों से वापस आ मिले।

दूसरी घटना जिसने हमारे आगे चलने में बाधा दी थी, वह तब हुई जब हम लोग दोपहर के सुस्ताने के लिए रुके। मैं इस समय अपनी सवारी एक वारट से दूसरे वारट पर करने के लिए उसे तैयार कर रहा था, कि सहसा ऊजक ने आकर मेरे एक वारट को अपनी तलवार से बहुत कसकर एक हाथ मारा।

क्रोध से मैं पागल हो गया। मैंने आव देखा न ताव, तुरन्त अपनी

तलवार लेकर उस पर पिल पड़ा । कदाचित् तलवार चलाने में उसे विशेष योग्यता प्राप्त थी, तभी तो वह तलवार लेकर मेरे ऊपर आक्रमण करने आया था । मेरे पास कोई दूसरा उपाय न था । या तो मैं तलवार से ही लड़ता, या छुरे या केवल हाथों से ही लड़ता, ऐसे मंगल के नियम थे । इसीलिए मैंने भी तलवार ही उठाई ।

मैं मानता हूँ कि तलवार चलाने में वैसी योग्यता मैंने बहुत कम लोगों में देखी थी । वह बड़ी कुशलतापूर्वक चलाता था, और बड़ी फुर्ती से अपनी जगह से हिलता था । पहले तो उसने बड़े वेग से लड़ना प्रारम्भ किया, कदाचित् यह सोचकर कि इस प्रकार वह मुझे थका देगा । बाद में वह स्वयं थकने लगा इसलिए उसने लड़ने का वेग धीमा कर दिया । जैसा मैं पहले ही कह चुका हूँ मंगल-ग्रह के कम खिंचाव के कारण, मैं वहाँ पर अधिक वेग से उछल-कूद सकता था । इसलिए ऊजक मुझसे जल्दी थकने लगा । अन्त में कोई और उपाय न देखकर वह फिर एक बार अपनी समस्त शक्ति लगाते हुए मुझ पर पिल पड़ा ।

उसी समय कोई वस्तु मेरी आँखों के सामने एकदम से चमक गई । क्षण भर के लिए मैं स्तब्ध रह गया । इतने में मेरा शत्रु एकदम मुझ पर आ गया था, और यद्यपि मैं उसे देख नहीं पा रहा था, मैं एक ओर को वार से बचने के लिए कूद गया । बिल्कुल तो मैं नहीं बचा, पर तलवार केवल मुझे थोड़ी सी चोट पहुँचा सकी ।

और तभी मैंने जो घटना होते देखी उसने तो मेरी जान ही ले ली थी । मैंने देखा कि भीड़ के एक कोने में एक रथ खड़ा था जिस पर इस समय तीन स्त्रियाँ थीं—मोना, नोनी, और सुल्का । मेरे देखते-देखते मोना ने सुल्का के हाथ से कोई वस्तु लेकर फेंक दी जो कि गिरने के साथ ही, सूर्य की ज्योति-सी चमक उठी । और उसी क्षण मेरी समझ में आ गया कि अभी एक मिनट पहले कैसे मेरी आँखों के सामने चमक-सी आ

गई थी। तो सुल्का ने मेरी आँख के सामने शीशा दिखाया था। पर तभी मुझे दिखाई दिया कि सुल्का एक छुरा लेकर मोना को मारने जा रही थी, पर इससे पहले कि वह छुरा मोना के वक्ष में घुस सके, नीनी उन दिनों के बीच में आ गई।

इससे आगे मैं कुछ भी न देख सका क्योंकि इसी समय मेरा शत्रु उठ कर फिर मुझसे युद्ध करने आ गया। फिर थोड़ी देर तक हम लड़ते रहे और सहसा उसकी तलवार मेरे वक्ष में आ चुभी, और मैंने देख लिया कि अब जीवित रहने की आशा व्यर्थ है, इसलिये यह सोचते हुए कि मरूँगा तो अकेले नहीं मैंने अपनी सारी शक्ति से तलवार उसको झोंक दी।

उसी क्षण मुझे ऐसा लगा कि जैसे कोई वस्तु मेरे वक्ष में घुसती चली जा रही है, और फिर मेरी आँखों के सामने अंधकार छा गया--घोर अंधकार ?

१४

जैसे ही मेरी चेतना लौटी, और जैसा मुझे बाद में पता चला, क्षण भर में ही ऐसा हुआ, मैं झट उठ खड़ा हुआ और मैंने अपनी तलवार को ढूँढ़ना प्रारम्भ किया—और वह ठीक मेरे सामने ही थी, ऊजक के वक्ष में मूठ तक घुसी हुई थी। जैसे ही मैंने उसे सारी शक्ति से उस पर वार किया था, मैं अपनी जगह से थोड़ा हिल गया था, इसलिये उसकी तलवार केवल मेरे वक्ष के बाये किनारे को छीलती हुई निकल गई थी। मुझे चोट अवश्य आ गई थी, पर वह बहुत अधिक नहीं थी।

रुधिर के निकल जाने से शक्तिहीन, और खिसिया हुआ मैं उठा और उस तलवार को वापस घसीट कर मैं अपने रथ के पास वापस चला गया, जहाँ पर कुछ स्त्रियों ने मेरी चोट पर दवा लगा दी और पट्टी भी बाँध दी। वहाँ की दवा इतनी अच्छी होती है कि जब तक मनुष्य मर न जाए, वे सदा ही उसे बचा लेंगी।

जैसे ही मैं चल-फिर सकने योग्य हो गया मैं तुरन्त मोना और नीनी के रथ की ओर चल दिया और वहाँ पहुँचने पर देखा कि नीनी के वक्ष पर पट्टिया बँधी थीं। उससे पता लगा कि जैसे ही सुल्का का छुरा उसके वक्ष पर उतरा, वह लोहे के कवच से टकरा गया और फिसलता हुआ एक ऐसी जगह आ लगा जहाँ पर जगह खाली थी। पर इससे यह हुआ कि चोट अधिक नहीं आई।

जब मैं पहुँचा तो मोना अपने बिस्तर पर पट लेटी हुई थी और यह प्रकट था कि वह अभी थोड़ी देर पहले तक रो रही थी। मैंने नीनी से पूछा, "क्या मोना को भी चोट आ गई?"

"नहीं, उसने सोचा कि तुम मर गये हो।"

"अच्छा तो उसके पिता के यहाँ झाड़ू देने के लिए कोई न बचता, क्यों इसीलिये उसे दुख है ?"

"मेरा विचार है कि तुमने उसे गलत समझा है राकेश। मैं तुम लोगों की रीति के बारे में अधिक तो नहीं जानती," नीनी कह रही थी, "पर मुझे विश्वास है कि एक पंकज की पोती किसी ऐसे की मृत्यु पर दुख प्रकट नहीं करती जिसे वह अपने से तुच्छ समझती, या ऐसे कहना चाहिये, कि जिसे वह आदर से नहीं देखती। तुमने कोई बहुत ही अप्रिय बात उससे कही होगी जभी वह तुम्हारी जीवित अवस्था में बोलती कुछ नहीं है और तुम्हारी मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। मैंने रोते आज तक केवल दो को देखा था। एक तो मेरी माँ थी, वह तब रोई जब उसकी हत्या की जाने वाली थी और एक सुल्का रोई, जब आज उसे मुझसे अलग किया गया।"

"तुम्हारी माँ नीनी" मैंने चकित हो कर पूछा, "पर तुम अपनी माँ को कैसे जानती हो ?"

"मैं अपनी माँ और पिता दोनों को जानती हूँ। यह एक लम्बी कथा है। यदि आज रात्रि को तुम हम लोगों से मिलो तो मैं तुम्हें सारी कथा सुनाऊँ, जिसे सुन कर भी तुम्हें विश्वास नहीं होगा," नीनी ने कहा।

"मैं अवश्य आऊँगा। मोना से तुम बतला देना कि मैं जीवित हूँ और ठीक भी हूँ। जब तक वह नहीं चाहती मैं उसके साथ नहीं रहूँगा।"

इसके बाद फिर हम लोग आगे बढ़ने लगे। एक पंक्ति में आगे बढ़ते हुए रथ, अन्य सवार और पैदल योद्धा कितने सुन्दर लगते थे ! वारट के अतिरिक्त इनमें ऊँट के आकार का एक और भी पशु था जिसे वह लोग कबरी कहते थे, जो मोटा था, और साथ में गद्देदार पैरों वाला भी। भिन्न-भिन्न रंगों के वस्त्र बड़े सुन्दर लगते थे।

काई जैसी वनस्पति पर जब हमारे वारटों और कबरियों के गद्देदार पैर पड़ते थे तो कोई ध्वनि नहीं उत्पन्न होती थी, और न हम लोगों के

निकल जाने पर चिन्ह ही रह जाता था कि हम लोग उधर से निकले हैं।

रात्रि में खाना इत्यादि खाने के बाद मैं नीनी के पास पहुँचा और वह मुझे तैयार मिली। मोना सो रही थी, फिर भी नीनी बड़ी धीमा स्वर में बोल रही थी। पहले कुछ इधर-उधर की बातें हुई जिसके बाद वह बोली—

"मेरी माँ ऊँचाई में अधिक नहीं थी, और वह हृदय से कुछ कोमल थी, इसलिये उसे मातृत्व से सदा वंचित रहने की आज्ञा मिली थी। एक दिन वह पहाड़ियों में पुष्पों से लदी घाटियों में टहल रही थी कि उसे एक वारट चराता हुआ मिला। उससे धीरे-धीरे मित्रता बढ़ती गई, तो एक दिन मेरी माता ने उससे बतलाया कि यह रोज की खून-खराबी देखते-देखते वह उकता गई है। उन्होंने सोचा कि यह सुनकर वह क्रोधित हो जायगा पर उसने केवल मेरी माता का हाथ अपने हाथों में ले लिया और कुछ बोला नहीं।

"छः वर्ष तक उन्होंने अपने प्रेम का रहस्य किसी पर प्रकट नहीं होने दिया। मेरी माँ टार्टू की सेविकाओं में से थी, और वह केवल एक साधारण सा योद्धा। यदि टार्टू को उनके प्रेम की भनक भी मिलती तो दोनों तुरन्त अपने प्राणों से हाथ धो बैठते।

"जिस अंडे से मैंने जन्म लिया, उसे मेरी माँ ने एक पाटल की बहुत पुरानी मीनार की छत पर छुपा दिया था, जहाँ किसी और के जाने की बिल्कुल आशा नहीं थी। वर्ष में केवल एक दिन वह आतीं और उस अंडे को देखकर लौट जातीं। इससे अधिक आने में भेद खुल जाने का भय था इसी समय मेरे पिता ने काफी ख्याति प्राप्त की, उनका एक ही आदर्श था, और वह था टार्टू को मारना, जिसके पश्चात् वे मेरी माता को सब के सामने अपना सकें।

"पर अभी वे इस स्वप्न से बहुत दूर थे। उन्होंने बड़े वेग में उन्नति की और ये पाँच वर्ष के ही समय में वे पाटल के प्रसिद्ध योद्धाओं में गिने

जाते थे । एक दिन उनके हाथ से यह एक स्वप्न भी सदा के लिए बाहर निकल गया। टार्टू ने उन्हें किसी दक्षिणी जीव पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया । उनके लौटने पर सब समाप्त हो गया था ।

"उनके जाने के कुछ दिनों बाद मैं अंडा तोड़ कर बाहर निकली। मेरी माता मुझे अब भी उसी पुरानी मीनार में छुपा कर रखती। रात वह मेरे पास आती और अपना सारा स्नेह मुझ पर लुटा देती। उसने मुझे धीरे-धीरे करके पढ़ाया और सिखलाया, और एक दिन उन्होंने मुझे अपनी सारी कथा सुना डाली, और मुझसे बतलाया कि वह मुझे अंडे से नये निकले हुये बच्चों में रख देंगी और मुझे तनिक भी किसी को भनक नहीं मिलने देनी चाहिए कि मैं भाषा से अपरिचित हूँ। इसके पश्चात् उन्होंने मेरे पिता का नाम भी धीमे से मेरे मकान में फुस-फुसा दिया ।

"और इसी समय उस जगह किसी की अत्यन्त भयानक हँसी गूँज उठी। हँसने वाली सुल्का थी, और उसने सारी बातें सुन ली थी, केवल एक को छोड़कर, मेरे पिता का नाम। उसने मेरी माता को बहुत धमकाया पर उन्होंने नहीं बतलाया, बल्कि झूठ भी बोल गई कि नाम मुझे भी नहीं मालूम है। और उधर सुल्का यह सुसमाचार लेकर टार्टू के पास चली और इधर मुझे गोद में उठकार मेरी माँ चलीं। बाहर आकर मेरी माँ मुझे लेकर दक्षिण के फाटक की ओर दौड़ीं कि कदाचित् अब भी मेरे पिता लौटते हुए मिल जायँ। पर वे न मिले। मिला एक समूह जो अंडे-घर से लौट रहा था, और जिसमें बहुत से नव-जात शिशु भी थे। मुझे अन्तिम बार अपने से चिपका कर मेरी माँ ने मुझे भी उसी भीड़ में मिला दिया, और फिर नई स्त्रियों के बीच में मेरा पालन-पोषण हुआ ।

"जब मेरे पिता लौटकर आए तो, मेरे सामने, टार्टू ने उन्हें यह

बतलाया कि किस प्रकार मेरी माता को सता-सता कर मारा गया था। मेरे पिता के मुख पर रंच-मात्र भी कष्ट की छाया तक न आई, पर उसके बाद ही वे अधिक क्रूर हो गये और आज भी, जबकि वे बहुत उन्नति कर चुके हैं, उनका स्वप्न अभी सत्य होने ही को है।"

"और तुम्हारा पिता, "मैंने पूछा," क्या वह हम लोगों के साथ हैं इस समय ?"

"हाँ, "उसने उत्तर दिया, "पर उन्हें मेरे बारे में कुछ भी नहीं पता है और न उन्हें यही पता है कि किसने मेरे माता-प्रेम के प्रेम की बात टार्टू से जाकर बतलाई थी, यह तो केवल मुझे, टार्टू और सुल्का को पता है।"

हक लोग बड़ी देर तक चुप रहे, अपने-अपने विचारों में निमग्न। अन्त में नीनी फिर बोली, "राकेश, मैं कारण नहीं जानती, पर मुझे तुम्हारे ऊपर बड़ा विश्वास है। और इसीलिए मैं तुम्हें अपने पिता का नाम बताती हूँ। अगर कभी समय आये तब सच्चाई को खोल देना। मैं जानती हूँ कि यदि किसी की जान झूठ बोलने से ही बचेगी, तो तुम उसके लिए झूठ भी बोल सकोगे। तो सुनो, मेरे पिता का नाम टानार है।"

१५

इसके बाद पाटल तब की यात्रा में कोई विशेष घटना नहीं हुई । हम लोग लगभग पन्द्रह दिन तक लगातार चलते रहे। मार्ग में हमें दो बार मंगल की नहरों को पार करना पड़ा। मुझे याद आया कि ये नहरें वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की वेध-शालाओं से भी देखी हैं। ये बहुत चौड़ी थीं, लगभग सौ से लेकर दो सौ मील तक। इन्हें पार करने में हमें रात्रि के अंधकार की शरण लेनी पड़ी। इन नहरों के आस-पास दोनों ओर खेत दिखलाई पड़ रहे थे।

पाटल तक रास्ते में कहीं भी मोना से मेरी बात तक नहीं हुई। उसने मुझे बुलवाया नहीं और केवल हठ के कारण नहीं जा पाया। पर हम लोग जब पाटल पहुँच गये तब मैंने सोचा कि यही अन्तिम समय है जब कि हम भाग सकते हैं इसके बाद फिर हमें समय नहीं मिलेगा इसलिए हर हालत में मुझे मोना से एक बार मिलकर उसे समझाना ही पड़ेगा कि कम से कम जब तक हम लोग यहाँ से भागकर उसके पिता के घर तक पहुँच नहीं जाते हमको आपस में एक समझौता कर लेना चाहिए।

प्रश्न यह था कि पता कैसे लगे कि मोना किस मकान में ठहरी हुई है। एकाएक यह प्रश्न हल हो गया। उसी दिन मैं संध्या के समय जब घुमने निकला तो अपने मकान के सामने वाले मकान की दूसरी मंजिल की खिड़की से बाहर झाँकते हुए टीपू का सर देखा मैं लपक कर उस मकान के दुमंजिले पर पहुँचा और झट उस कमरे में जा पहुँचा जहाँ पर मैंने टीपू को देखा था।

मुझे देखते ही टीपू इतना प्रसन्न हो गया कि वह दौड़कर मुझसे

लिपट गया और प्रसन्नता से वह अपना पूरा मुँह खोलकर मुस्कुरा रहा था। उसको मैंने चुप करके अगले कमरे की ओर देखा। वहाँ मोना बैठी थी! जब मैं उसकी ओर चला तो वह उठकर बोली, "क्या है?"

"देखो मोना, मैं नहीं जानता कि मेरी किस बात ने तुम्हें इतना क्रोध दिला दिया। मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाना चाहता था, यह तुम विश्वास रक्खो। तुम चाहो तो मुझसे बात भी न करो, पर इतनी मेरी तुमसे विनती है, और साथ में आज्ञा भी है, कि तुम यहाँ से भाग चलने में मेरी मदद करो एक बार अपने पिता के घर पहुँच जाओ जो तुम्हारे दिल में आये सो करो। पर इस समय तुम्हें मेरी बात माननी ही पड़ेगी।"

मोना थोड़ी देर तक मुझे देखती रही और फिर बोली, "तुम कैसे मनुष्य हो राकेश, यह मैं अभी तक नहीं समझ सकी। मैं केवल यही चाहती थी कि तुम्हारे हृदय को पढ़ सकती एक बार।"

"तो अपने पैरों की ओर देखो मोना। वहीं तो पड़ा है मेरा हृदय आज से ही नहीं, उसी दिन से जब मैंने तुम्हें प्रथम बार पूरग में देखा था।"

"यह तुम क्या कह रहे हो राकेश?"

"वही जो मैं अभी तक तुमसे न कहने का प्रयत्न करता आया था मोना। मैंने बहुत चाहा कि मैं तुमसे यह कह कर तुम्हें और परेशान न करूँ, पर आज मैं तुमसे कह रहा हूँ मोना कि मैं तुम्हारा हूँ, जिऊँगा तो तुम्हारे लिए और मरूँगा तो तुम्हारे लिए। मेरी तुमसे केवल एक प्रार्थना है मोना और वह यह कि जब तक तुम अपने पिता के घर नहीं पहुँच जातीं, तुम अपने हृदय की बात मुझसे न कहना। चाहे तुम मुझसे जितनी घृणा करती रहो, इस समय तुम मेरी बातों को मान लो। तुम्हारी जो भी सेवा मैं इस समय कर रहा हूँ, यह सब अपनी इच्छा और अपने सन्तोष को लिए कर रहा हूँ।"

"तुम जो कहोगे मैं प्रसन्नता से मानूँगी, राकेश। मैं तुमसे अपने इधर के व्यवहार के लिए क्षमा माँगती हूँ।"

हम लोग बातें कर रहे थे कि इतने में नीनी आ गई और उसने बताया कि अब हम लोगों के लिए अधिक आशा नहीं है, क्योंकि सुल्का टार्ट के पास तक हो आई है, और उससे सारी बातें बतला चुकी है। इस पर मैंने नीनी से प्रार्थना की कि वह भी हम लोगों के साथ मोना के देश की ओर भाग चलें, जहाँ पर उसे सहानुभूति, मित्रता और प्रेम मिलेगा जो कि उसे अपनी जाति में नहीं मिलेगा। मैंने और मोना ने उसे बहुत समझाया तब जाकर वह इस बात पर तैयार हुई।

अब मैंने मोना से लोमी के रास्ते के विषय में पूछा। इस पर मोना ने अपनी हीरे की अँगूठी से फर्श पर एक नक्शा बनाया, जिसमें उसने कुछ सीधी-सीधी लाइनें खींचीं और कुछ छोटे-छोटे गोले बनाए।

लाइनों में नहरें थीं और गोले नगर थे, उसने बतलाया। लोमी यहाँ से लगभग पाँच सौ मील उत्तर-पश्चिम में पड़ता था, और वहाँ जाने के दो रास्ते थे, एक तो पचास मील दक्षिण में चलने पर जो नहर मिलती है उसके द्वारा उत्तर-पश्चिम की ओर जाने से था और एक लगभग दो सौ मील उत्तर जाने पर फिर पश्चिम की ओर जाने वाली एक दूसरी नहर द्वारा था। मैंने कहा कि यदि हम लोग भागते हैं तो वे लोग हमें पहले रास्ते पर सबसे पहले ढूँढ़ेंगे, और यदि हम लोग दूसरे रास्ते से जायँ तो बच कर निकल जा सकते हैं।

जब उन दोनों ने अपनी सम्मति दे दी तो मैंने यही निश्चय किया कि हम लोग इसी उत्तर वाले रास्ते से जाएँगे, और उन लोगों को भ्रम में डालने के लिए हम लोग दक्षिण वाले फाटक से निकलेंगे।

इसके बाद हमने अपनी योजना बनाई। यह तय हुआ कि नगर के दक्षिणी फाटक के आगे हम मिलेंगे। पहले नीनी और मोना चल देंगी

और फिर मैं अँधेरे में भी चुपके से अपने वारटों को लेकर आ जाऊँगा। मैंने उन्हें दो दिनों का खाना इत्यादि ले लेने के लिए भी कह दिया।

अँधेरा था ही, इसलिए मैं तुरन्त अपने वारटों को लेने के लिए चल दिया। अँधेरे में जब मैं अपने मकान के पिछवाड़े के उस हाते में घुसा जिसमें मेरे वारटों के साथ अन्य वारट तथा कब्री भी बन्द थे, तो सब ने मुझे देख कर बड़ा शोर मचाया और मुझे डर हुआ कि कहीं कोई योद्धा शोर सुनकर चला ही न आए। परन्तु भाग्य मेरे साथ था और कोई ऐसी दुर्घटना नहीं हुई और मैं अँधेरे में बिना किसी बाधा के दक्षिणी फाटक के पार निकल गया।

जिस स्थान पर हमारा मिलना तय हुआ था वहाँ पर मोना और नीनी को न देखकर मैं चौंका, पर यह सोचकर कदाचित् मैंने अपने कार्य में शीघ्रता दिखला दी है और वे लोग आती ही होंगी, मैं अपने वारटों को लेकर एक पास के ही मकान में छुप गया। पर जब एक घंटे से भी अधिक उनकी प्रतीक्षा की और वे न आईं तो मुझे खटका हुआ। सामने से कुछ योद्धा आ रहे थे, पर देखकर मैं और भी छाया में छुप गया, पर जो वार्तालाप का छोटा सा भाग मेरे कानों में पड़ा उसके अनुसार उनमें से एक, दूसरे से कह रहा था, "वह मनुष्य यहीं कहीं होगा, क्योंकि जैसा सुल्का ने बतलाया है वह यहीं मिलने के लिये उन दोनों की प्रतीक्षा कर रहा होगा।"

दूसरे क्षण ही सारी बात मेरी समझ में आ गई—हमारी योजना का रहस्य खुल गया था, मोना और नीनी पकड़ गई थीं।

क्षण भर के लिये तो मैं स्तब्ध रह गया, पर दूसरे ही क्षण मुझे एक युक्ति सूझ गई। मैं उस मकान के पिछवाड़े चला गया और चारों दिशाओं के मकानों से घिरे हुए अन्दर के हाते में मैंने अपने दोनों वारटों को छुपा दिया और मैं स्वयं पाटल की ओर लौट पड़ा। मुझे एक बात का विश्वास था, और वह यह कि रात्रि में लोग इस हाते में ढूँढ़ने कभी नहीं आएँगे क्योंकि इन लोगों का यह विचार था कि इनमें श्वेत रीछ रहते हैं।

जिस प्रकार मैं अँधेरे में आया था उसी प्रकार फिर लौट चला। मैं जानता था कि पकड़ जाने के बाद नीनी और मोना कहाँ होंगी। मैं भी उस दिशा में चला—टाटू के महल की ओर। एक दस फीट ऊँची दीवाल जो महल के चारों ओर बनी है मैं बड़ी सरलता से फाँद गया और महल के पिछवाड़े के एक कुंज से मैंने देखा कि महल की निचली दो मंजिलों में तो बत्ती जल रही है, पर ऊपर की मंजिलों में अँधेरा है। मैंने झट एक लम्बी छलाँग लगाई और तीसरी मंजिल की एक खिड़की को पकड़ लिया। अंदर घुसा तो चारों ओर अँधेरा था। धीरे-धीरे आहट लेकर मैं बढ़ने लगा और शीघ्र ही एक ऐसे कमरे के सामने पहुँचा जहाँ से द्वार में से छन-छन कर रोशनी आ रही थी। मैंने द्वार में कान लगा कर सुना।

अन्दर कोई सेनाध्यक्ष अपने सिपाहियों से कह रहा था, "जैसे ही वह आये, और जैसा कि मुझे विश्वास है वह आएगा अवश्य जैसे ही उसे पता लगेगा कि वह दोनों पकड़ गई हैं, तुम लोग उस पर टूट पड़ना और उसे बाँध कर महल के नीचे तहखानों में बन्द कर देना। उस लड़की के लौटने का कोई भय नहीं है, क्योंकि इस समय वह बीच के बड़े कमरे में टाटू के पास होगी। यदि तुम लोग उसे पकड़ने में असफल रहे तो तुम लोगों को बालनी नदी की शरण में जाना ही होगा।"

इतना कह कर वह उसी द्वार की ओर बढ़ा जिसके पीछे से खड़ा हो कर मैं सुन रहा था। मैं तुरन्त अँधेरे में छुप गया और उसके जाने के बाद मैं महल के बीच की ओर बढ़ा। आगे बढ़ने पर मुझे एक ऐसा द्वार मिला जो कि बीच के एक ऐसे गोल कमरे की दीवाल में ही बना था, जिसकी फर्श तो सबसे पहली मंजिल में थी और जिसकी छत एक बड़े से गुम्बज में थी, जो और भी ऊपर तक बना था। मैंने जैसे ही नीचे झाँका मैंने एक बड़ा विचित्र दृश्य देखा। मैंने देखा कि लगभग दस-बारह योद्धा मोना और नीनी को पकड़े टार्टू के सामने खड़े हैं। सुनने में जितना क्रूर मैंने टार्टू को सोचा था, उससे कई गुना अधिक क्रूर वह देखने में लगता था।

टार्टू ने संकेत से सब योद्धाओं को हट जाने की आज्ञा दी। मैंने देखा कि सब तो हट गये, केवल एक योद्धा कुछ देर तक अपनी जगह पर डटा रहा। उसका एक हाथ अपनी तलवार की मूठ पर था। पर दूसरे ही क्षण वह चला गया। बेचारा! उसे क्या मालूम कि वह अपनी पुत्री को भी उस पशु के आगे छोड़ गया था।

टार्टू उठा और मैं यह जानते हुए कि उसकी इच्छा क्या है, तुरन्त नीचे भागा और उसी कमरे में आने वाले एक दूसरे द्वार की आड़ में जा कर खड़ा हो गया।

टार्टू मोना से कह रहा था, "लोमी की राजकुमारी, मैं चाहूँ तो धन के बदले मैं तुम्हें तुम्हारे घर वापस कर सकता हूँ। पर नहीं, मैं अपने सबसे बड़े शत्रु लोमी के पंजक की पोती को इतने सस्ते भला कैसे छोड़ सकता हूँ? तुम्हें मृत्यु से पहले कड़ी से कड़ी यातना सहनी पड़ेगी, जिसकी याद करके भी आज से सहस्त्रों वर्षों तक तुम्हारे देश वालों के रोंगटे खड़े हो जाएँगे। पर इससे पहले कि यह सब तुम्हारे साथ हो तुम सात रातें मेरे साथ रहोगी, जिससे कि जब उस शत्रु, तुम्हारे पिता के पिता, को जब पता

लगे, तो वह दाँत पीस कर रह जाएँ। आज से एक सप्ताह बाद ही तुम्हें तंग किया जाएगा। इस बीच तुम मेरी रानी रहोगी।"

उसने इतना कह कर मोना का हाथ पकड़ लिया। मुझसे रहा नहीं गया और मैं तुरन्त वहाँ पहुँच गया और उसे मारने ही जा रहा था कि मुझे याद आया कि टानार इसी सुनहरी घड़ी की रात-दिन प्रतीक्षा कर रहा है। इसीलिये मैंने उसकी नाक पर एक घूँसा जमा दिया जिससे वह केवल अचेत हो गया।

मैं मोना और नीनी को साथ लेकर फिर उसी रास्ते से भाग निकला जिधर से मैंने पहले सोच रखा था। दक्षिणी फाटक के बाहर आकर मैंने दोनों वारट बाहर निकाले और एक पर नीनी और दूसरे पर मैं, और मेरे पीछे मोना, सवार हो गए। हम लोगों की योजना में एक बार बाधा पड़ जाने से अब हम लोगों के पास खाद्य-सामग्री तक नहीं थी।

थोड़ी दूर आकर फिर हम चक्कर लगाकर उत्तर-पूर्व की ओर घूम गए। पकड़ जाने से बचने के लिये हमने लम्बा रास्ता अपनाया था। हमने अभी तक कोई बातचीत नहीं की थी, पर मैं अपनी पीठ से लगी हुई मोना की सिसकियों को स्पष्ट सुन रहा था। सहसा वह बोल पड़ी, "अगर हम बचकर लोमी पहुँच गए राकेश, तो लोमी तुम्हारे उपकारों के भार से दब जायगा और कदाचित् वह कभी भी इसका बदला नहीं चुका सकेगा। अगर हम नहीं भी पहुँचते हैं, तो उपकार तो तुमने किया ही है, केवल लोमी को इसका पता नहीं रहेगा। आज तुमने मुझे मृत्यु से भी अधिक भयानक वस्तु से बचा लिया है।"

मैं कुछ बोला नहीं, केवल मैंने एक हाथ पीछे ले जाकर उसके हाथों को धीमे से दबा भर दिया। कितना प्रसन्न था मैं!

खाना-पीना न होने के कारण हम पूरे वेग से आगे बढ़ रहे थे। दो दिन तक हम लगातार चलते रहे, केवल बीच-बीच में थोड़ी देर को

सुस्ताने के लिये रुकते थे। पर इन दोनों के अन्त पर हम और हमारे वारट, दोनों थककर चूर हो गये। हमको अभी तक कोई नहर नहीं मिली थी। अगर हम सीधे रास्ते से आते तो कभी के पहुँच गये थे। पर शायद हम एक चक्कर लगा रहे थे और इसीलिए नहीं पहुँच सके थे।

दूसरे दिन की संध्या को दूर एक पहाड़ी दिखलाई पड़ रही थी। मैंने सोचा यदि हम लोग वहाँ तक अँधेरा होने के पूर्व ही पहुँच जायँ तो हो सकता है कि पानी की कोई नहर इत्यादि दिख जाये। परन्तु इससे पहले कि हम वहाँ पहुँचे, अँधेरा छा गया और हम सुस्ताने के विचार से रुक गए। सुबह मेरी निद्रा खुली किसी वस्तु को रगड़ खाकर, देखा तो टीपू था जो मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ रहा था। और मैंने उसे अपने गले लगा लिया। अपने प्रति उसका प्रेम देखकर मेरी आँखों से अश्रु की धारा बह चली। यह बेचारा पाटल से मेरे पास आया था, केवल इसीलिए कि वह मेरे साथ रह सके, और इसीलिये कि वह मेरे कष्टों में भाग ले सके।

तीसरी सुबह हम थोड़ी ही दूर गए होंगे कि मेरा वारट थकने के चिन्ह दिखलाने लगा और थोड़ी देर बाद लड़खड़ा कर गिर गया। बेचारा भूख-प्यास से मर रहा था! मुझसे उसका कष्ट देखा नहीं जा रहा था मैं उसे अपनी पिस्तौल से मारने ही जा रहा था कि नीनी ने मुझे मना किया और कहा कि यदि उससे बोला न जाये तो वह रात की शीत में और हम लोगों के भार से बचकर, शायद बच जाए; और इसीलिये मैंने उसे छोड़ दिया। मुझे उस बेचारे को वहीं छोड़ते हुए बड़ा कष्ट हो रहा था, पर बेबस था इसलिए ऐसा ही करना पड़ा।

मोना के बहुत मना करने पर भी हमने उससे वारट पर बैठने के लिये कहा, और मैं और नीनी पैदल चले। पर हम लोग इस प्रकार थोड़ी ही दूर गए होंगे कि मोना एकाएक सामने की ओर दिखलाते हुए चिल्ला पड़ी कि वह एक योद्धाओं के समूह को आते देख रही है, जो पीले

मंगलवासियों का समूह था और शायद पाटल से ही आ रहा है। मैंने देखा कि पहले तो वे दूसरी ओर जा रहे थे, पर बाद में वे हम ही लोगों की ओर मुड़ गए, और मैं समझ गया कि हम लोग दिख गए हैं। मैंने एक वारट पर मोना और नीनी दोनों को बैठा दिया और फिर नीनी से कहा, "तुम दोनों भाग जाओ। उन टीलों के पीछे से छुपकर तुम शायद बचकर निकल जाओ। मैं इस बीच इन्हें यहाँ रोकूँगा।"

"क्या ? तो तुम नहीं आ रहे हो हम लोगों के साथ, "मोना ने पूछा।

"नहीं।"

इस पर मोना भी कूद गई वारट पर से और नीनी से बोली," तुम जाओ नीनी, मोना यहीं रुकेगी अपने प्रेमी के साथ मरने के लिये।"

समय कम था, इसीलिए मुझे प्रेम के बन्धन को भूल जाना पड़ा। मैंने उसे जबर्दस्ती उस वारट पर नीनी की बगल में बिठा दिया और नीनी से यह कह कर कि वह मोना को छोड़े नहीं, मैंने वारट को अपनी तलवार से एक चोट दी और वह भाग खड़ा हुआ।

मैं इसकी विपरीत दिशा में भागा और उस आती हुई भीड़ को आकर्षित करने के लिए मैंने उसके सब से अगले योद्धा पर गोली चला दी। उसके बाद मैं लेट गया और मैंने जब तक अपनी सारी गोलियाँ खर्च नहीं कर दीं, मैं दनादन गोली चलाता रहा। इस बीच वे मेरे बहुत समीप आ गए थे। जब मैंने देखा कि मेरी गोलियाँ समाप्त हो गई हैं, तो मैंने उछलने और कूदने की शरण ली। मैंने खूब लम्बी-लम्बी छलाँग लगाई, पर बचकर जाना तो असम्भव था ही। बहुत देर तक उछलते रहने के बाद सहसा मेरा पैर किसी नुकीली चट्टान से टकरा गया और मैं गिर गया।

जैसे ही मैंने उठना चाहा वे मेरे ऊपर आ गए, और यद्यपि मैंने

अपनी तलवार इसलिए निकाल ली कि मरने के पहले मैं अपना जीवन महँगा बना दूँ, उन लोगों ने अपनी संख्या से ही मुझे दबा दिया। और तभी मेरी आँखों के सामने अँधेरा छा गया, और मैं चेतना खो बैठा।

१७

जब मेरी चेतना लौटी तो मैंने स्वयं को एक कमरे में लेटा हुआ पाया। मेरे ऊपर एक पीले मंगलवासियों की ही स्त्री झुकी हुई थी। जब उसने मुझे आँखें खोलते हुए देखा तो उसने मुड़कर किसी से कहा, "यह जिएगा, हे पंज।"

"यह अच्छा है। अब की बार 'बड़े-खेलों' में अवश्य आनन्द आएगा। इसे यहाँ से ले चलने की व्यवस्था कर दो।" उसने उत्तर दिया, जिसे इस स्त्री ने सम्बोधित किया था।

जैसे ही मैंने उसके वस्त्रों को देखा, यह स्पष्ट हो गया कि वह पाटल से नहीं आया है। पर बड़े-खेलों की बात सुनकर यह भी स्पष्ट हो गया कि मैं और भी बुरी जगह आ फँसा हूँ, जहाँ से जीते जी बचने की आशा रखना भी व्यर्थ है। पंज की आज्ञानुसार कुछ योद्धा मुझे पकड़ कर ले गए और एक वारट से मुझे बाँध दिया उसके बाद उस वारट को दोनों ओर से दो सवार योद्धाओं ने घेर लिया। इस प्रकार वे मुझे अपने साथ ले चले।

संध्या होते-होते हम लोग ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ पर एक और भी बड़े समूह ने पड़ाव डाल रक्खा था। शीघ्र ही पंज, जिसका नाम बासद था मुझे लेकर इस समूह के प्रधान के पास पहुँचा। यह और कोई नहीं इन पीले मंगलवासियों की जाति का, जिसका नाम कोदक है, पंजक था, और बासद केवल एक पंज था कोदक जाति का। कोदक जाति के पंजक ने आज्ञा दी कि मुझे बड़े-खेलों तक बड़ी सतर्कता से बंदीघर में रक्खा जाय।

इसके तीन दिन बाद हम कोदक जाति की राजधानी लकमक पहुँचे

जहाँ पर मुझे बड़ी सावधानी से बन्दी-घर में रख दिया गया। जिस कोठरी में मुझे रक्खा गया उसमें इतना अँधेरा था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था। ऊपर से मुझे एक शृंखला से एक दीवाल से बाँध रक्खा था। ज्यों-ज्यों दिन निकलते जाते थे, मैं अँधेरे में ही रहने के कारण पागल होता जाता था। उस कोठरी के अन्दर से न तो दिन का पता लगता था, और न रात का।

एक दिन एक बन्दी ये लोग और लाए जो प्रहरी की लालटेन की चमक से गोरे रंग का कुछ लालिमा लिए हुये दिख रहा था, मैं समझ गया ये भी उसी लाल जाति का है, जिसकी मोना है। प्रहरी के वापस जाते ही मैंने उससे 'पालन' कहा जो लाल मंगलवासियों के बीच में नमस्ते के लिए उपयोग किया जाता है। उसने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ, जिस पर मैंने कहा कि मेरा नाम राकेश है और मैं उसके प्रिय देश लोमी का मित्र हूँ। इस पर वह बोला, "मैंने तो आपका नाम वहाँ पर कभी सुना नहीं, यद्यपि मैं लोमी में ही रहता हूँ।"

इस पर मैंने उसको अपनी सारी कथा सुना दी, केवल मोना से अपने प्रेम की बात नहीं बतलाई। जब उसने सारी कहानी सुन ली तब मुझसे बोला कि वह उस स्थान से भली-भाँति परिचित है, और उसका अनुमान था कि मोना और नीनी को रास्ते में कोई बाधा न मिली होगी क्योंकि वे एक नहर से केवल दो या तीन मील की दूरी पर थीं जब कि मैंने उन्हें छोड़ा था।

फिर उसने अपनी कहानी बतलाई। वह लोमी की वायु-सेना का एक अध्यक्ष था और वायु-यानों के उस समूह में वह भी था जिस पर पीली जाति ने आक्रमण किया था और जिसमें से मोना को पकड़ा था। उसने मुझे बतलाया कि पूरग से ये लोग जब लौट रहे थे तो मोगा राज्य के पास से गुजरते समय, वहाँ की वायु सेना ने एक नया आक्रमण कर

दिया । मोगा राज्य के लोग, यद्यपि लाल जाति के ही थे, लोमी के बड़े कट्टर शत्रु थे। वह आक्रमण इतना भारी हुआ कि सिवा उसके वायु-यान को छोड़कर शेष सभी उसी समय समाप्त हो गए। उसका पीछा उसके वायु-यान तीन दिन तक करते रहे, और तीसरे दिन, रात में, अँधेरे की सहायता लेकर वह बच कर लोमी जा पहुँचा जहाँ उसने यह दुख-भरी कथा वहाँ के पंजक को सुनाई।

मोना को ढूँढ़ने के लिए उन्होंने उसी समय लगभग पाँच हजार वायु-यान भिन्न-भिन्न दिशाओं में भेज दिये। मंगल का कोना-कोना छान डाला गया पर मोना का कहीं पता न चला। यह युवक, जिसका नाम सोरम था, बड़ा ही साहसी था। अपने वायु-यान पर अकेले ही इसने बहुत से नगरों को छान डाला था और कल सुबह ही वह लकमक आया था और रात में वह अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी प्रत्येक घर में घुस करके देख चुका था कि मोना यहाँ नहीं है। वह अन्तिम घर को देखकर जैसे ही निकल रहा था, उसका पैर किसी वस्तु से लड़ गया और उसकी ध्वनि से जगे हुए लोगो ने उसे पकड़ा दिया था।

बहुत थोड़े दिनों में मुझसे और सोरम से मित्रता हो गई। और तब वह बड़े-खेलों वाला दिन आया। उस दिन सूर्य निकलते ही कुछ सिपाही आए और हम दोनों को बड़े खेल के मैदान में ले चले। यह एक गोल घेरे में बना था, और यह जमीन खोदकर बनाया गया था जिससे कि एक बड़ा भारी गड्ढा सा लगता था देखने में। इसके किनारे-किनारे बैठने के लिए पत्थर की कुर्सियाँ बनी थीं और एक किनारे पर, ठीक बीचो-बीच कुछ कठघरे बने थे, जिनमें से एक में हम दोनों को बन्द कर दिया गया और दूसरे कठघरों में बहुत से बन्दी, और कुछ पागल कुत्ते, वारट और कबरी थे।

जब इस मैदान के चारों ओर की कुर्सियों पर भीड़ बैठ गई तो पहले

एक कठघरे का द्वार खोला गया और उसके बन्दी, जो कि वास्तव में पीली जाति की ही कुछ स्त्रियाँ थीं, निकाले गये। जब वह उस मैदान के मध्य में पहुँच गये तो एक दूसरे कठघरे को खोलकर उन पर कुछ पागल कुत्ते छोड़ दिये गये। हर स्त्री के पास एक-एक छुरा था जिससे कि उसे कुत्ते से लड़ना होता। पर वह कुत्ते भी बहुत बड़े और पैने दाँतों वाले थे।

मैंने अपना मुँह दूसरी ओर कर दिया जब उन कुत्तों ने स्त्रियों पर आक्रमण किया। उन बेचारियों की चीखें सुन-सुन कर लोग बड़े प्रसन्न हो रहे थे और तालियाँ पीट रहे थे। जब सोरम ने यह बतलाया कि सब समाप्त हो गया है तब मैंने पलट कर देखा कि उस मैदान के मध्य में चार कुत्ते अब भी कुछ लाशों को खाने में जुटे हैं। इतने में एक और कठघरे से कबरी को उन पर छोड़ दिया गया। इसी प्रकार दिन भर चलता रहा। हर लड़ाई के बाद जो जीतता उसे नये शत्रुओं का सामना करना पड़ता। सोरम ने मुझे बतलाया कि दिन भर के बाद जो अन्तिम आदमी या पशु जीवित बचता उसे ये लोग स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं।

दिन भर हमें बहुत-सी लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं। जब साँझ होने को आई तो केवल तीन आदमी बचे थे—एक मैं, दूसरा सोरम, और तीसरा एक पीला योद्धा, जो कि देखने में बिल्कुल राक्षस लगता था। पहले सोरम से उसका युद्ध हुआ। सोरम ने एक ऐसी युक्ति लगाई कि वह तुरन्त मर गया; उसने दूर ही से अपने छुरे को उसके वक्ष के सीध में फेंका जो कि भाग्य से ठीक उसके हृदय में जाकर लगा।

इसके बाद सोरम को मुझसे लड़ना था। सूर्य डूबने ही वाला था। मैंने सोरम से कहा कि युद्ध को जितने समय तक खींच सको खींचो जिस से कि सूर्य डूबने की बेला हो जाय। उसने ऐसा ही किया। जैसे ही सूर्य डूबा मैंने उससे कहा कि वह मुझे मार दे जैसा तय हुआ था उसी के

अनुसार, तो उसने एक ऐसा वार किया जो मेरी बाँह और शरीर के बीच में से निकल गया और मैं बनकर गिर गया। उसने नियम के अनुसार एक पैर मेरे ऊपर रक्खा और मुझे मरा घोषित किया। मैंने उससे कहा कि वह जाकर अपनी स्वतन्त्रता माँग ले और फिर मुझसे नगर के बाहर की पहाड़ियों में मिले। उसने ऐसा ही किया।

सब के चले जाने के बाद मैं चुपके से उठा और चल दिया उधर की ही ओर। किनारे कीचहार दीवारी को जो कि लगभग पन्द्रह फीट ऊँची थी, मैं मजे में फाँद गया और फिर उस पहाड़ी तक पहुँचने में मुझे कोई बाधा नहीं मिली। सोरम वहाँ पर नहीं था और दो दिन तक वह नहीं आया।

१८

आगे प्रतीक्षा करना व्यर्थ समझ कर मैं उत्तर-पश्चिम दिशा में चल दिया, जिधर सोरम ने मुझे बतलाया था कि एक नहर है। परन्तु दो सप्ताह तक मैं भटकता रहा और मुझे कोई नहर नहीं मिली। इस बीच मैं उसी दुग्ध जैसी वस्तु पर जीवित रहा जो मंगल में लगभग हर जगह वृक्षों के तने से निकलती है।

इस बीच न जाने कितनी बार मुझ पर जंगली पशुओं ने आक्रमण किया, और हर बार मैं अपनी तलवार की सहायता से बचा। पर एक रात मैं सोया हुआ था कि मेरी निद्रा किसी वस्तु के दबाव से खुल गई। देखा तो एक जंगली वारट है जो मुझे सूँघ रहा था। मैंने उठने का प्रयत्न किया तो उसने मुझे एक पैर से दबा दिया और उसके बाद उसने झुककर अपने दाँत मेरे गले में गड़ाने का प्रयत्न किया। मैंने भरसक शक्ति उन दाँतों से बचने में लगाई और अपने हाथों से उसके गले को पकड़ लिया और उसे दबाने का प्रयत्न किया। उस वारट में मुझसे अधिक शक्ति थी और क्षण-क्षण मैं शक्ति-हीन होता जा रहा था। मैं समझ गया कि अब मेरा अन्तिम समय आ गया है, और मैंने ईश्वर की प्रार्थना करना आरम्भ किया। जैसे ही उसके दाँत मेरे गले से लगे कोई वस्तु आँधी जैसी आई और उसे अलग कर उससे लड़ने लगी। रात्रि के अंधकार में पहले तो मुझे दिखाई नहीं दिया कि किसने इस समय मेरी रक्षा की है, परन्तु उसी समय दोनों में से एक चन्द्र निकल आया और उसकी ज्योति में मैंने पहचाना कि मेरा रक्षक टीपू था।

टीपू ने मेरे प्राण बचाए इस बात की प्रसन्नता थी, पर वह मोना को छोड़कर यहाँ आया था, इसका एक ही अर्थ होता था—कि मोना की

मृत्यु हो गई ! और तब मैंने उसके शरीर को ध्यान से देखा। बेचारा सूख कर पहले से आधा हो गया था। मैं स्वयं दुबला हो गया था। वह भूखा था, इससे यह साबित हो गया कि वह उस बारट को मारकर उसे ही खाने में जुट गया।

तीन दिन टीपू के साथ और भटकने पर मैंने दूर पर कुछ ऊँचे वृक्ष देखे, और यह सोचकर कि यहाँ पर पानी अवश्य होगा मैंने अपनी चाल तेज कर दी। पास पहुँच कर देखा कि वे पेड़ चार बहुत बड़ी दीवालों के चारों ओर उगे थे, जो मिलकर एक बड़े किले के समान लगती थीं। जब मैं दीवाल के मध्य भाग के पास पहुँचा तो मुझे उसमें एक विशाल फाटक दिखलाई पड़ा। जैसे ही मैं उसे खुलवाने के लिए उसे पीटने जा रहा था कि सहसा उस फाटक के पीछे से "ठहर जाओ" की ध्वनि आई। मैं चक्कर में पड़ा कि यह ध्वनि किस जगह से निकल कर मेरे पास आई कि मुझे एक छोटा सा छिद्र दिखलाई पड़ा। मैं उसमें से दूसरी ओर देखने के लिये ज्यों ही बढ़ा, फिर उसमें से एक ध्वनि आई जो कह रही थी, "तुम कौन हो, और कहाँ से आये हो ?"

"मैं मंगल की लाल-जाति का मित्र हूँ और मैं और मेरा श्वान दोनों भूखे मर रहे हैं। ईश्वर के लिये फाटक जल्दी खोलिए।"

इस पर वह फाटक बिना कुछ ध्वनि किये दस फिट पीछे खसक गया फिर आगे जाने के लिये रास्ता छोड़ता एक ओर हो गया। जब मैं आगे बढ़ा तो एकदम खटाक सी ध्वनि हुई और मैं पीछे मुड़कर देखा तो द्वार बन्द हो चुका था। आगे इसी प्रकार के तीन द्वार और मिले जो अपने आप खुलते और बन्द होते थे। उसके बाद मैं एक बन्द कमरे में पहुँचा जहाँ पर एक मेज पर मेरे लिए, और जमीन पर टीटू के लिए, खाना रक्खा था। जिस बीच में हम खाना खाते रहे, मुझसे बहुत सारे प्रश्न पूछे गए, जिनका एक-एक करके मैं उत्तर देता गया। अभी तक

मैं यह जान नहीं पाया था कि कौन मुझसे बातें कर रहा है। क्योंकि कोई मेरे सामने नहीं आया था। जब मैं सारे प्रश्नों का उत्तर दे चुका तो उस ध्वनि ने कहा, "तुमने जो बातें कही हैं वह बड़ी ही विचित्र हैं। हाँ इतना अवश्य है कि तुम मंगल के नहीं हो। तुम्हारे शरीर की बनावट अन्दर से भिन्न है, यहाँ वालों की अपेक्षा।"

"क्या तुम मेरे शरीर के अन्दर भी देख सकते हो?" मैंने चकित होकर पूछा।

"हाँ, तुम्हारे मन की बातों को छोड़कर मैं शेष सब चीजें जान सकता हूँ, और यदि तुम मंगल के होते तो मैं तुम्हारी मन की बातें भी जान लेता।"

और तभी एक द्वार खुला जिसमें से एक बुड्ढा सा मनुष्य अन्दर आया। वह अन्य गहनों के अतिरिक्त एक अँगूठी पहने हुए था, जिसमें से जो चमक निकलती थी वह सात रंगों की न होकर आठ रंगों की थी! सात रंग तो वही थे, जो पृथ्वी की ज्योति में मिले रहते हैं और आठवाँ एक ऐसा रंग था, जो पृथ्वी पर नहीं देखा गया था, इसलिए मैं उसे समझा नहीं सकता। उस बुड्ढे मनुष्य से मेरी बहुत देर तक बातें होती रहीं। उसी से मुझे पता लगा कि वह एक ऐसा कारखाना है जहाँ पर मंगल के लिए कृत्रिम वायु बनाई जाती है। उसने मुझे बतलाया कि यह सब उसी आठवीं किरण से होता था जो केवल मंगल में होती थी। कारखाने की छत पर बड़े-बड़े यन्त्र रक्खे थे जिनका कार्य था सूर्य से इस आठवीं किरण को चुराना। इसके बाद वह आठवीं किरण बड़े-बड़े लोहे के कमरों में बन्द कर दी जाती हैं, और पम्प द्वारा मंगल पर दस छोटे-छोटे कारखानों में पहुँचाई जाती है। वहाँ पर इसके अन्दर विद्युत प्रवाह के संचालन से एक रासायनिक परिवर्तन हो जाता है और जब यह

बाहर वायु में निकाली जाती है तो यह उसको बढ़ाकर और भी बहुत-सी वायु बना देती है।

बहुत-सी ऐसी बातें जो वह मुझे न बतलाता, मुझे उसके मन की बात समझ लेने से मालूम हो जाती थी। जैसा मैं पहले ही कह चुका था, मैं स्वयं तो मंगल पर औरों के मन की बात जान लेता था, पर स्वयं मेरे मन की बात और कोई न जान पाता था। यही इस समय यहाँ पर हो रहा था। मुझे मालूम हो गया कि इस कारखाने में केवल दो व्यक्ति काम करते हैं, एक यह और एक इसका सहकारी। यह दोनों समय बाँट लेते हैं, जिससे कि प्रत्येक भाग में आधा वर्ष पड़ता था। इस कारखाने के अन्दर आने में इतनी बाधा इसलिये होती थी, जिससे कि कोई इस पर आक्रमण न कर सके, क्योंकि यहाँ के यन्त्रों पर ही सारे मंगल का जीवन निर्भर था। वायु-सेना के आक्रमण से बचने के लिये, इस कारखाने की छत शीशे की थी और उसकी मोटाई लगभग दस फिट थी।

एक और बात मुझे उसके मन की बातें पढ़ने से ज्ञात हुई और वह यह कि यहाँ का बड़ा द्वार भी मन के अन्दर ही कुछ विशेष बात एक बार कह देने से ही खुलता था। इस भेद को जानने के लिये मैंने उससे पूछा कि वह द्वार कैसे अन्दर बैठे ही बैठे खोलता था। एक क्षण के लिये उसके मस्तिष्क में सात मंगलीय ध्वनियाँ दौड़ गईं। पर उसने मुझसे कहा कि यह वह नहीं बतला सकता।

मैंने तुरन्त देखा कि उसके मन में शक आ गया है और मन ही मन वह मुझे मारने को सोच रहा है। रात में वह जैसे ही मुझे एक कमरे में छोड़ और सोने के लिये कह कर गया, मैंने उसके मन में पढ़ लिया कि वह थोड़ी देर बाद आकर मुझे मारने की सोच रहा है। जैसे ही वह ओझल हुआ, मैं दबे पैर मुख्य द्वार की ओर चल पड़ा, जहाँ पर मन के अन्दर वह सातों ध्वनि दौड़ा देने पर वह द्वार खुल गया और बाद के तीनों द्वार भी खुल गये।

वहाँ से थोड़ी दूर जाकर मैं टीपू को पहरा देने को कह कर सो गया। और जब टीपू के गुर्राने से जागा तो देखा कि लाल जाति के तीन मंगलवासी अपनी-अपनी बन्दूकें मेरी सीध में ताने खड़े हैं।

मैंने उन्हें संकेत से समझाया कि मैं उसका शत्रु नहीं हूँ और कहा कि मैं पीले मंगलवासियों के बीच एक बन्दी था और अब मैं मोना की ओर जा रहा था। उन्होंने अपनी बन्दूकें गिरा लीं और मुझसे बड़े तपाक से मिले। उसके पश्चात् वे मुझे अपने घर ले गए जो कि लोहे के बड़े से डंडे से उठा हुआ था लगभग जमीन से बीस फिट की ऊँचाई तक, जिससे कोई शत्रु ऐसा न आ सके। इन्होंने एक बटन दबाई और वह मकान नीचे आ रहा।

फिर इन लोगों ने मुझे खाने-पीने की सामग्री दी जिस-बीच मैं खाता जा रहा था ये लोग मुझसे प्रश्न पूछते जा रहे थे। मैंने उन्हें मोना की बातें छोड़कर और शेष बातें बतला दीं और यह भी कहा कि मैं मोगा नौकरी की खोज में जा रहा हूँ। इस पर उन्होंने मुझे वहाँ के एक बड़े अफसर के नाम एक पत्र दिया और मुझे बतलाया कि मुझे वहाँ की सेना में एक योद्धा बन जाना चाहिए, क्योंकि मंगल में योद्धाओं का बड़ा आदर होता है। उन्होंने मुझे बतलाया कि ऐसे तो कोई मेरा विश्वास नहीं करेगा, इसलिये मैं अपने शरीर पर एक लाल रंग का तेल लगा लूँ जो वे मुझे देंगे। मैंने ऐसा ही किया। चलने लगा तो उन्होंने मुझे थोड़ा धन भी दिया। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और मोगा की दिशा में चल दिया जहाँ से लोमी जाने का मार्ग था।

जब मैं मोगा की राजधानी के समीप पहुँचा तो मुझे टीपू को समझा कर वापस भेज देना पड़ा, क्योंकि ऐसा कोई पशु इधर नहीं पाया जाता था, और लोगों को उसे देख कर मुझ पर सन्देह हो जाता। उसे छोड़ते हुये मुझे बहुत दुख हुआ, पर कोई और उपाय था ही नहीं।

मोगा आते समय रास्ते में लोगों से बातचीत कर मुझे मंगल-ग्रह

के बहुत से अन्य रहस्य ज्ञात हुये। खेतों में जो पानी की नालियाँ थीं वे जमीन के ऊपर न बहकर नीचे-नीचे जड़ों के सम्पर्क में निकाली गई थीं, जिससे कि पानी सूखने न पाये। इन्हें पानी वर्षा से नहीं बल्कि नीचे से बहते हुये पाइपों से मिलता था, जिनमें पानी दोनों, उत्तरी और दक्षिणी बर्फ के ढँके प्रदेशों से पम्प कर दिया जाता था। जल की कमी के कारण इतनी कंजूसी से उसका व्यय होता था।

मोगा की राजधानी में उस पत्र के कारण, जो मुझे उन तीन लाल जाति के लोगों द्वारा मिला था मुझे नगर में घुसने में कोई कठिनाई न हुई। नगर के अन्दर मैं इधर-उधर भटक रहा था कि मुझे एक परिचित व्यक्ति दिखलाई पड़ा। मैंने तुरन्त उसके कन्धे पर अपना हाथ रखकर कहा, "पालन, सोरम।"

वह एकदम से चौंक पड़ा और मुझे देखकर पहचाना तो बोला कि यहाँ पर उसके असली नाम का यदि किसी को पता लग जाए तो उसे भी मोना की ओर प्रस्थान करना पड़ जायगा। उसने बतलाया कि वह यहाँ की वायु-सेना में एक छोटा संचालक है। उसने एक सूने स्थान पर ले जाकर मुझे और बातें बतलाईं। मेरा साथ छोड़कर वह यहाँ आया था उसे पता लगा कि मोना यहाँ के राजभवन में बन्द है, यहाँ के पंजक टोजक के पुत्र रोडा का प्रेम मोना से हो गया है और टोजक ने लोमी के पंजक वारेलमान के पास कहलाया कि यदि रोडा और लोमी के ब्याह की वह स्वीकृति दे दे तो वह लोमी को घेरे हुए मोगा की सेनाओं को वापस आने की आज्ञा दे सकता है अन्यथा नहीं। इस पर वारेल मान ने कहला भेजा कि चाहे लोमी के बच्चे-बच्चे की जान चली जाय, वे इस शर्त पर कभी भी शान्ति नहीं चाहेंगे। उसने बतलाया कि लोमी की प्रजा मोना की देवी की तरह पूजती है, और उसके लिए अपने प्राण तक देने को तैयार रहती है। उसने यह भी बतलाया कि वह

वायु-सेना में इसलिए घुस गया क्योंकि यदि वह इस प्रकार रोडा के विश्वास में हो जाता है, क्योंकि रोडा वायु-सेना का प्रधान था, तो वह मोना का पता लगाने में शायद समर्थ हो जाए। उसने मुझसे भी ऐसा ही करने को कहा।

दूसरे ही दिन हम लोग वायु-सेना के दफ़्तर में पहुँचे जहाँ पर सोरम ने मेरा नाम लिखवा दिया। इसके अन्दर एक परीक्षा भी होती थी, जिसमें सोरम मेरी अपेक्षा स्वयं चला गया। उसने बतलाया कि जब तक उन्हें पता लगेगा कि परीक्षा राकेश के बजाय किसी और ने दी है तब तक हम लोगों का काम या तो बन या तो बिगड़ गया होगा।

बाद के तीन-चार दिन उसने मुझे वायु-यान चलाने और मरम्मत करने को सिखाया। उसके बाद मेरी उड़ान की परीक्षा ली गई, जिसके बाद मुझे रोडा के महत्व में ही रहने को एक कमरा मिल गया।

अभी उड़ान सीखे दो या तीन दिन हुए थे कि मैं उड़ता हुआ मोगा से काफी दूर निकल गया। सहसा अपने नीचे की पृथ्वी पर मैंने तीन पीली जाति के लोगों को एक लाल जाति वाले को दौड़ाते देखा और नीची उड़ान करने पर पता लगा कि वह लाल जाति वाला एक मोगा की वायु-सेना का संचालन था, जैसा कि कुछ दूर खड़े उसके वायु-यान के देखने में लगता था। मैंने जमीन पर अपने वायु-यान को उतार लिया और इससे पहले कि वे पीली जाति के लोग उस लाल योद्धा को पकड़ सकें मैंने अपने वायु-यान को उनके ठीक बीचो-बीच से निकाल दिया। एक तो तुरन्त मर गया और बाकी दोनों अपने वारट पर भाग गए। मैंने उस आदमी को उठाया और इससे पहले कि वे पीली जाति वाले लौट सकें मैं उसे अपने वायु-यान में बैठाकर राजधानी ले गया।

बाद में पता लगा कि यह मनुष्य और कोई न हो करके मोगा के

पंजक टोजक का भाई है। उसने टोजक से कह कर मुझे पुरस्कृत किया और टोजक ने प्रसन्न हो कर मुझे अपना अंग-रक्षक बना लिया।

इसके बाद मुझे एक अध्यक्ष के पास ले जाया गया जिसने मुझे मेरे कर्तव्य समझा दिये। फिर वह मुझे एक बड़े कमरे में ले गया जिसने दीवाल के सहारे-सहारे चारों ओर पर्दे लगे थे, जिनकी विशेषता यह थी कि दीवाल की ओर से तो कोई भी अन्दर की ओर देख सकता था, पर अन्दर की ओर से कोई दीवाल नहीं देख सकता था। अन्दर एक कुर्सी पर टोजक बैठा था। उस अध्यक्ष ने मुझे समझा दिया कि मुझे बराबर चार घंटे तक टोजक की रक्षा करना है जिसके बाद दूसरा अंग-रक्षक आकर मेरी जगह ले लेगा। फिर मुझे छोड़ कर वह चला गया।

थोड़ी देर बाद चार योद्धाओं से एक स्त्री आई और साथ में रोडा भी था। उन्हें उसी कमरे में छोड़ कर वे चारों योद्धा लौट गाये। जैसे ही उस स्त्री का मुख मेरी ओर हुआ मैंने पहचाना—मोना थी। मुझे यह देख कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि मोना रोडा का एक हाथ अपने हाथ में लिये थी और उसने टोजक से अपने पूर्व व्यवहार के लिये क्षमा माँगी और कहा कि वह रोडा से विवाह के लिये तैयार है, यदि टोजक लोमी से अपनी सेना को वापस बुलवा ले तो। टोजक को बड़ा आश्चर्य हुआ, पर तुरन्त तैयार हो गया। और तब मोना फ़िर दूसरी ओर के एक द्वार से चली गई।

क्षण भर तो मैं चकित रह गया फिर मैंने निश्चय किया कि मैं मोना से एक बार पूछूँगा अवश्य कि वह मुझे बिल्कुल भुला चुकी है। उसके लिये तो मैंने जगह-जगह की धूल फाँको, इतनो लड़ाइयाँ लड़ीं और वह चार दिन में मुझे भूल गई। और यह निश्चय पक्का होते ही मैं भी पर्दे के पीछे-पीछे उसी द्वार की ओर गया और उसमें से हो कर बाहर आ गया। रास्ते बहुत से बराम्दों में से होता हुआ सर्प की तरह घूमता हुआ एक स्थान पर

जाकर तीन रास्तों में बट जाता था। कौन सा रास्ता अपनाया जाय, यह एक चक्कर था। अन्दाज से ही एक रास्ते को मैंने अपनाया और उस पर चल पड़ा। थोड़ी ही दूर जाने पर मुझे पता लगा कि मैं खो गया हूँ। और मैं वापस भी नहीं लौट सकता था। मैं सोच-विचार में पड़ा था कि एक दीवाल के दूसरी ओर से आने वाली ध्वनि ने मुझे आकर्षित किया। मुझे विश्वास था कि वह आवाज मोना की थी। पलक मारते ही मैं उस दिशा में जो पहला द्वार पड़ता था उसमें घुस गया। घुस जाने पर अपनी गलती का पता चला, पर अब देर हो चुकी थी। चार प्रहरियों ने उठ कर मेरा रास्ता रोक लिया।

उनमें से एक ने मुझसे पूछा कि मैं क्या चाहता हूँ। मैंने कहा कि मैं टोजक के पास से आया हूँ और अन्दर एक आवश्यक कार्य से जा रहा हूँ। इस पर उसने मुझसे आज्ञा-पत्र माँगा, और कहा कि जो भी टोजक की आज्ञा प्राप्त करके आता है वह एक आज्ञा-पत्र ले कर आता है। और कोई उपाय न देख कर मैंने भी अपनी तलवार खींच ली।

वे चारों तलवार चलाने में बड़े कुशल थे। शीघ्र ही उन्होंने मुझे एक दीवार से पीठ लगा कर लड़ने पर मजबूर कर दिया। मैंने मौका देख कर एक के तलवार भोंक दी। अब तीन बचे। मैं धीरे-धीरे चल कर एक ऐसा कोने में पहुँच गया, जहाँ से एक समय में एक ही मेरे पास आ सकता था। थोड़ी देर में दूसरा भी पहले की ही प्रकार मर गया। शेष दोनों बड़े वीर और कुशल योद्धा। उन्हें मारने में मुझे दुख हुआ परन्तु मोना के लिये मुझे सारे मंगल के लोगों को भी मारना पड़ता तो मैं मारता।

तलवारों के आपस में टकराने की ध्वनि सुन कर मोना और पीछे-पीछे नीनी बगल के कमरे से निकल कर आ गई थीं। उन्होंने मुझे पहचाना नहीं था, मेरे पुते हुये लाल रंग और मोंगा वस्त्र देख कर। जैसे ही अंतिम योद्धा गिरा मैंने मोना से कहा "मोना, मैं तुम्हें लेने आया हूँ, क्या तुम मुझे पहचान नही रही हो ?

"राकेश!" चौंकती हुई वह बोली, "मैं समझी थी कि कोदक जाति के साथ युद्ध में उस दिन तुम्हारी मृत्यु हो चुकी है। अब बहुत देर हो चुकी है। मुझे भूलने का प्रयत्न करना। अब मैं तुम्हारी नहीं हो सकती, क्योंकि शीघ्र ही रोडा से मेरा विवाह हो जाएगा।"

"यह सब कुछ नहीं," मैंने कहा, "मोना तुम्हें मेरे साथ चलना ही पड़ेगा। अभी तो तुम्हारा विवाह रोडा से हुआ नहीं है। तुम चल सकती हो।"

"नहीं राकेश अब मैं कहीं नहीं जा सकती। जब तक रोडा जीवित है मैं किसी और की नहीं हो सकती," नोना बोली।

"अच्छा तो आज रात्रि को ही रोडा की मृत्यु हो जायगी।"

"पर जो व्यक्ति उसकी हत्य करेगा उस से मैं विवाह नहीं कर सकती, ऐसा यहाँ का नियम है। इसीलिये मैं कहती हूँ कि अब मुझे भूल जाओ। मेरा शरीर रोडा के साथ रहेगा, पर मेरा हृदय तो सदा तुम्हारे साथ रहेगा, राकेश।"

"पर सह तुमजे क्यों किया नोना ?"

"अपने देश की लाखों निर्दोष आत्माओं को बचाने के लिये। अच्छा अब जाओ राकेश।" और इतना कह कर वह अपने कमरे में चली गई। पीछे जाना व्यर्थ था। एकाएक कुछ लोगों के आने की आहट सुन कर मैं बाहर बराम्दे से होता हुआ भाग कर एक दूसरे रास्ते पर पहुँच गया, जहाँ से नीचे जाने की एक सीढ़ी थी। इस सीढ़ी से नीचे उतरता हुआ मैं लोगों की दृष्टि से छुपता हुआ एक बड़े से कमरे में पहुँचा जहाँ पर बाहर की ओर खिड़कियाँ बनी थीं। उनसे मैंने झाँक कर देखा तो उनके बाहर एक उद्यान था, जिसकी दूसरी ओर एक बीस फिट ऊँची दीवाल थी। रात को तो मैं बच कर जा सकता था, पर दिन में बच कर निकलना कठिन था। तक तक बचने

के लिए मैं लपक कर ऊपर से लटकते हुये एक झाड़ में कूद कर पैठ गया। जो इतना बड़ा था कि नीचे से कोई मुझे देख नहीं सकता था।

उसके बाद बहुत से लोग नीचे आए, जो मुझे खोज रहे थे। पर रात्रि तक कोई मेरा पता न पा सका। और रात्रि को मैं उधर से होकर दीवाल फाँद कर बाहर आ गया।

२१

अँधेरी सड़कों पर दौड़ता हुआ मैं शीघ्र ही अपने रहने के स्थान तक जा पहुँचा। मैं जानता था कि अब तक यहाँ मुझे पकड़ने के लिए कुछ प्रहरी अवश्य भेज दिये गए होंगे। पर मुझे सोरम को सारी बातें बतलानी थीं इससे पहले कि उन्हें सोरम पर सन्देह हो जाय, क्योंकि वही मुझे लिवा लाया था। दूर से मैंने देखा कि मकान पर कड़ा पहरा है। मैंने मकानों की उसी पंक्ति में बने एक दूर के मकान को चुना और झट उसकी छत पर जा पहुँचा। फिर छत ही छत कूदता हुआ मैं अपने मकान की छत पर पहुँचा। वहाँ से अपने कमरे में पहुँच गया, जहाँ पर सोरम अभी मेरी प्रतीक्षा कर रहा था।

मैंने उससे सारी बातें बतलाईं और उससे आगे क्या किया जाय यह पूछा। वह कुछ देर तक चुप रहा। रोडा से मोना के विवाह की बात ने उसे उदास बना दिया था। वह बोला, "राकेश यह कैसे हो सकता है? तुम नहीं जानते कि लोमी की प्रजा मोना को देवी समझ कर उसकी पूजा करती है। वह इस बात को कैसे सह सकती है कि उनकी देवी उनके सबसे कट्टर शत्रु के पुत्र से विवाह करे? अब तुम्हीं इस मुसीबत से बचने का कोई उपाय बतलाओ।"

"यदि रोडा मेरे सामने भर पड़ जाये, तो लोमी के लिये मैं इस समस्या का हल कर दूँ। परन्तु मेरी इच्छा तो यह थी कि कोई और उसकी हत्या कर दे," मैंने कहा।

"तो तुम मोना से प्रेम करते हो?" सोरम ने पूछा।

"हाँ।"

"वह भी तुमसे करती है?"

"हाँ । पर अब वह रोडा को अपना वचन देने के कारण मजबूर हैं।"

इस पर वह उछल पड़ा और मुझसे बोला, "यदि मुझे उसके लिये पति चुनने का अधिकार होता तो मैं इससे अच्छा कोई और नहीं चुन सकता था। तुम मुझ पर विश्वास रक्खो मित्र, तुम्हारे, मोना, और लोमी के लिए मैं स्वयं रोडा की हत्या करूँगा। आज ही, अभी रात्रि के समय ही, मैं उसके महल तक पहुँचने का प्रयत्न करूँगा।"

"कैसे ? इस मकान के चारों ओर कड़ा पहरा है।"

वह कुछ देर तक चुप रहा फिर बोला, "यदि मैं किसी प्रकार एक वायु-यान पा सकता तो मैं उससे एक मीनार की छत पर पहुँचने का प्रयत्न करता, जहाँ से मुझे मालूम है, एक रास्ता रोडा की महल तक जाता है जिसका सिवाय रोडा के और किसी को पता नहीं है। एक दिन धोखे से मेरा वायु-यान वहाँ पर गिर गया था, और तभी उस रास्ते में चला था कि रोडा स्वयं मुझसे मिला, और उसने मुझे बात अपने तक रखने की आज्ञा दी। पर प्रश्न यह है कि वायु-यान कहाँ से मिले। सारे के सारे वायु-यान तो 'हवा-महल' की भारी छत पर होंगे।"

"वहाँ पर पहरा कितना है ?" मैंने पूछा।

"रात्रि के समय केवल एक प्रहरी छत पर रहता है।"

मैंने कुछ सोचकर सोरम से कहा, "अच्छा तुम इस मकान की छत पर चलो। मैं लगभग आधे घण्टे में आकर तुमसे मिलूँगा।"

यह कह कर बिना उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए मैं तुरन्त छत-छत होता हुआ एक दूर की सड़क पर उतरा और वहाँ से शीघ्र ही 'हवा-महल' के पास जा पहुँचा। यह एक विशाल अट्टालिका थी, जिसकी छत एक मील लम्बी थी और जिसकी ऊँचाई पाँच सौ फिट से भी अधिक थी। इसके अन्दर

घुसने में पकड़े जाने का भय था, इसलिए इसके एक किनारे की दीवाल पर मैंने चढ़ना आरम्भ किया। मंगलीय शिल्पकारी से सुसज्जित इसकी दीवालों में पैर रखने और हाथ पकड़ कर चढ़ने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई। कठिनाई तब मिली जब छत आई, जो कि उस अट्टालिका की चारों दीवालों के भी लगभग एक फुट आगे निकली हुई थी। कुछ देर सोचने के बाद युक्ति सूझ गई। अपने शरीर से अपनी चमड़े की पेटी खोल डाली और, जिसके एक छोर पर कटिया के आकार की एक वस्तु लगी हुई थी, और उसके दूसरे छोर को अपने एक हाथ में लेकर मैंने उसे ऊपर की ओर उछाला। तीन-चार बार प्रयत्न करने पर वह ऊपर की छत के एक कोने में फँस गई। मैंने उसे दो तीन बार खींचकर देखा कि वह रुकती है या नहीं। वह रुक गई थी। तब वह समय आया जब मुझे उस पेटी के दूसरे छोर को पकड़ कर लटक जाना था। क्या यह पेटी मुझे सम्हाल सकेगी? क्षण भर की हिचक के बाद मैंने दीवल छोड़ दी और पेटी के एक छोर पकड़ कर लटक गया। मुझसे बहुत नीचे सड़क पर जलते हुए कुछ लैम्प मुझे दिखलाई पड़े। तभी मुझे लगा जैसे पेटी के ऊपरी छोर ने कोना छोड़ दिया है, और मैं नीचे गिरने लगा। मेरे माथे पर पसीने की कुछ बूंदें आ गईं। तभी वह कटिया छत के बिल्कुल कोने पर आकर रुक गई और मैं बच गया।

जैसे ही मैं उतर आया मैंने एक प्रहरी को देखा जिसकी बन्दूक मेरी ओर सधी हुई थी। उसने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो और कहाँ से आए हो? इधर से तो आज तक कोई नहीं आया।"

"मैं वायु सेना का एक सिपाही हूँ और अभी मैं मरते-मरते बचा। ये देखो जो पेटी है, यह अभी गिर ही जाती।"

वह उत्सुकता के वश में आकर किनारे से नीचे देखने लगा, कि मैंने उसके हाथ से बन्दूक छीन ली और उसका हाथ, पैर और मुँह कपड़े से बाँधकर मैंने उसे छोड़ दिया।

इसके बाद मैं आगे बढ़ा और दो वायु-यानों को आपस में बाँधकर (ये बहुत हल्के होते थे, इसलिए ऐसा सम्भव था) मैं एक-में बैठ गया और मकान की दिशा में चल पड़ा जहाँ सोरम मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा। वहाँ जैसे ही मैं पहुँचा उसने मेरे दिशा-सूचक यन्त्र को लोमी की दिशा में बैठाल दिया। वहाँ के दिशा-सूचक यन्त्र में इस बात की व्यवस्था थी कि उसे जिधर की ओर बैठा दिया जाता था, वायु-यान की सारी उड़ान के समय वह उसी दिशा की ओर जमा रहता था।

यह तय हुआ कि मैं तो लोमी जाऊँ और सोरम रोडा को मारने जाए और यदि इस कार्य में उसे सफलता प्राप्त हो तो वह फिर लोमी की दिशा में चल देगा। एक-दूसरे से विदा होकर हम अपनी-अपनी दिशा में चल दिये। जैसे ही मैंने अपने वायु-यान पर वह छत छोड़ीं एक 'सर्च-लाइट' का प्रकाश मेरे वायु-यान पर पड़ा और किसी ने मुझे रुकने की आज्ञा दी। पर मैं न रुका और भाग ही निकला। शीघ्र ही लगभग दस वायु-यान मेरे पीछे लग गए। हवा में कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी इधर कभी उधर अपने वायु-यान को घुमाता हुआ मैं उनसे काफी दूर निकल आया। तब मैंने लोमी की ओर सीधे अपने वायु-यान को पूरे वेग से चला दिया।

मैं अपने आप को बच निकलने की बधाई दे ही रहा था, कि बहुत दूर पीछे छूट गए वायु-यानों से चली हुई एक गोली मेरे वायु-यान के पिछले भाग में लगी और वह बड़े वेग से नीचे की ओर गिरने लगा। जिस समय मैंने उसे फिर सम्हाला वह जमीन से थोड़ी ही दूर रह गया था, क्योंकि यद्यपि मैं देख नहीं सकता था, मुझे लगा कि मैंने नीचे से कुछ पशुओं की बोलियाँ सुनी थीं।

और आगे बढ़ने पर मैंने दो बातों पर ध्यान दिया। एक तो यह कि अब मेरा पीछा नहीं किया जा रहा था। दूसरे यह कि मेरा दिशासूचक-यन्त्र उस गोली के किसी छिटकते हुये टुकड़े से टूट गया था। मैं तारों की ओर देखता हुआ अन्दाज से दक्षिण-पश्चिम की दिशा में चला जा रहा था। लोमी की राजधानी, मोगा की राजधानी से लगभग आठ सौ मील दूर थी, और सब ठीक रहने पर मैं वहाँ लगभग चार घन्टे में पहुँच गया। पर सुबह होने पर मैं एक सूख चुके समुद्र की तलहटी पर चला जा रहा था। यह सोच कर कि मैं कदाचित् कुछ अधिक अन्तर में आ गया था, मैं फिर थोड़ा दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ लिया। परन्तु लोमी का कहीं पता नहीं था, क्योंकि जैसा सोरम के बतलाया था, लोमी के दोनों बड़े नगर एक दूसरे से लगभग पचास मील दूर थे और दोनों में एक ऊँची मीनार थी एक में काले रंग की और दूसरे मे श्वेत रंग की।

दूसरा पहर होने को आया पर लोमी का कहीं पता न लगा। सहसा मुझे दूर पर होने वाली पीली जाति की एक लड़ाई दिखलाई पड़ी। और जब मैं पास जाकर उनके ऊपर उड़ने लगा यह देखने के लिये कि यह

युद्ध किन-किन लोगों में हो रहा है, तो कहीं से चला एक गोला मेरे वायुयान में आ लगा, और वह नीचे, ठीक उन्हीं लोगों के मध्य में जा घिरा। मैं इतनी नीचे उड़ रहा था कि मुझे कोई चोट नहीं आई। मैं जैसे ही बाहर निकला मेरी दृष्टि एक विशाल पीले जाति के योद्धा पर पड़ी, जो इस समय अकेले तीन योद्धाओं से लड़ रहा था। वह टानार था। उसने एक को तो बिला किसी परिश्रम समाप्त कर दिया और दूसरे से वह लड़ रहा था कि उसका पैर किसी मरे हुये युवक से उलझ गया और वह उसी क्षण गिर गया। यदि मैं उस समय वहाँ न होता तो वह शीघ्र ही अपने पुरखों के पास पहुँच जाता। जैसे ही उन दोनों ने उसे असहाय देख कर उस पर आक्रमण किया मैंने आगे बढ़ कर उनमें से एक को मार दिया। उसने झट उठ कर दूसरे को भी उसी राह भेज मेरी ओर देखा, और फिर वह मुस्कुराते हुये बोला, "मेरा विचार है राकेश, कि मैं समझ रहा हूं मित्रता क्या वस्तु होती है।"

उसने इतना ही कहा और वह इतना ही कह सकता था फिर हम दोनों कंधे से कंधा मिला कर लड़े, ऐसा लड़े, जैसा पहले कभी नहीं लड़े थे। हम दोनों को इस प्रकार लड़ते देख कर, पाटल के अन्य योद्धाओं में नया उत्साह भर गया, और वे नई स्फूर्ति से लड़ने लगे। पाँसा पलट गया और जीत हुई कोदक जाति की। अब सूर्य डूबने तक सेना भाग खड़ी हुई।

दिन भर की लड़ाई के बाद हम थके-माँदे जब पाटल लौटे तो टानार मुझे अपने भवन में लिवा गया और वहाँ मुझे छोड़ कर वह एक आवश्यक कार्य से चला गया। मैं थोड़ी देर बैठा रहा। जैसे ही मैं थोड़ा घूम-फिर आने के लिये उठने लगा, एकाएक कोई वस्तु बड़े वेग से आई और उसने मुझे गिरा दिया। वह टीपू ही था। और मैंने उसे अपने गले से लगा लिया। टानार ने बाद में बतलाया कि टीपू पाटल लौट आया था और वहाँ

वह मेरे निवास-स्थान पर ही रहता था और रात-दिन मेरे प्रतीक्षा किया करता था।

थोड़ी देर में टानार जब वापस लौटा तो वह बड़ा उत्तेजित था। "टार्टू को तुम्हारे आने का पता सुल्का ने दे दिया है, और उसने तुरन्त तुम्हें बुलवाया है। मेरे पास दस वारट हैं। तुम उनमें से किसी को भी ले लो और शीघ्र ही यहाँ से चले जाओ।"-वह बोला।

"और मेरे जाने के बाद तुम्हारा क्या होगा ?"

"देखा जायगा। मरना तो सब को एक दिन है ही।"

"नहीं मित्र," मैं बोला, "तब हम दोनों रुकेंगे और हम दोनों टापू के पास चलेंगे।"

और तब मैंने उसे नीनो को पूरी कथा सुना दी। सुन कर वह कुछ क्षण चुप रहा। उसके मस्तिष्क में विचारों का द्वन्द्व हो रहा था। मैंने उससे चलने को कहा तो वह बोला, "ठहरो, पहले मैं सुल्का से निपट लूँ।"

उसने शीघ्र ही सुल्का को बुलवाया और उससे बोला, "तुम्हें स्मरण होगा सुल्का, की आज से बीस वर्ष पूर्व तुमने नीनी नाम की एक स्त्री को मरवा डाला था। तुम्हें यह जान कर प्रसन्नता होगी कि उसका प्रेमी लौट आया है और यद्यपि वह तुम्हें मार नहीं सकता, तो भी वह तुम्हारे जीवित रह सकने योग्य, तथा माता का उत्तरदायित्व पा सकने योग्य होने की परीक्षा एक रस्सी के एक छोर से तुम्हें और दूसरे को एक पागल वारट को बाँध कर तो ले ही सकता है। यह जानते हुए कि वह ऐसा कल सुबह करेगा, मैंने तुम्हें थोड़ा पहले से ही सावधान कर दिया है, क्योंकि मैं न्याय प्रिय हूँ। बोलनी नदी तो पास ही है।"

सुल्का दूसरे दिन वहाँ नहीं थी और उसके बाद देखी भी न गई, वे फिर एकदम दोनो टार्टू के भवन पहुँचे जहाँ पर एक बड़े से कमरे में टार्टू मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे देख कर वह कुछ अन्य लोगों से बोला,

"इसे उस खम्भे से बाँध दो। मैं स्वयं इसकी आँखें जलते लोहे से फोड़ूँगा।"

इस पर मैंने भरी सभा को ललकार कर कहा कि मैं इन लोगों में सेना का एक अध्यक्ष रह चुका हूँ, इसलिये मेरे साथ न्याय होना चाहिये। फिर मैंने उन्हें याद दिलाया कि वे वीर और साहसी लोग हैं, और इसलिये उनका पंजक सबसे अधिक शक्तिशाली एवं पराक्रमी होना चाहिए। मैंने उन से पूछा कि आज जब सब लोग लड़ रहे थे तो उनका पंजक कहाँ था। उन्होंने ऐसा पंजक चुना था जो कि मेरे जैसे छोटे से मनुष्य के भी एक घूँसे से गिर सकता था। मैंने उनसे कहा कि आज उनके पंजक को अपने को पंजक रहने योग्य प्रमाणित करना होगा। फिर जब मैंने उनसे पूछा कि पंजक के स्थान पर टानार कैसा रहेगा, तो चारों ओर से तालियाँ बोल पड़ीं। तब मैंने उनसे बिनती की कि टानार से टार्टू को युद्ध करना ही चाहिये और यदि वह जीते तभी उसे पंजक बनने का अधिकार प्राप्त होना चहिए।

इस पर टार्टू अत्यन्त क्रोधित हुआ वह बोला, "यह सब कुछ नहीं। इसे तुरन्त खम्भे से बाँध दो।"

इस पर सभा के सब लोगों ने खड़े हो कर कहा, "आज तक किसी पंजक का इतना अपमान भरी सभा मे नहीं हुआ था। और तुम हो टार्टू, खड़े सुने जा रहे हो। अगर सच्चे पंजक हो तो निकाल ले अपनी तलवार और टानार से लड़ो।"

इतना कहने-सुनने पर टार्टू अपनी तलवार लेकर टानार से लड़ने आ गया, पर सब शीघ्र ही समाप्त हो गया। थोड़ी देर बाद टानार उसके मृत शरीर पर एक पैर रख कर पाटल का पंजक बना। उसने पहला कार्य यह किया कि मुझे उसने अपना एक मंत्री बना लिया।

इसके पहले मैंने उससे मोगा वाली बात कही, और जब सारी बात कह

चुका तो वह भरी सभा में बोला, "भाइयो, अभी राकेश ने हमको एक सुझाव दिया जिससे मेरी सम्मति मिलती है। इनका कहना है कि हम लोग मोगा राज्य पर धावा बोल दें और मोगा को लूटें और वहाँ से लोमी की राजकुमारी मोना को छुड़ा लें। मेरा विचार है कि यदि हम लोमी से मैत्री कर लें तो हमारा बहुत लाभ हो सकता है। आप लोग अपनी राय दीजिये, कि मोना की लूट के प्रस्ताव से अपनी सम्पत्ति मिलती है अथवा नहीं।"

शत्रु को लूटने और लड़ने के प्रस्ताव पर वहाँ एक ही उत्तर रहता है। और ठीक तीन दिन बाद हम लोग एक बहुत बड़ी सेना लेकर मोना की ओर कूच कर उठे।

पाँच घण्टे बाद हमने लगभग दो हजार वायु-यानों द्वारा तथा साथ में चलती सवार सेना द्वारा लोमी की ओर प्रस्थान किया।

हमारी वायु-सेना शीघ्र ही लोमी पहुँच गई । लोमी को घेरे हुये मोगा की सेना ने जब हम लोगों को आते देखा, और हम लोगों के वायु-यानों में लोमी के झंडे फहराते देखे, तो उसने अपनी वायु-सेना को हमसे मिलने के लिए भेजा ।

तब मैंने वायु में होने वाला एक ऐसा युद्ध देखा, जैसा मैंने कभी नहीं देखा था। हजारों की संख्या में ऐसा वायु-यान एक दूसरे पर गोली बरसा रहे थे । पीलो जाति के लोग वायु-यानों के संचालन में तो अधिक कुशल नहीं थे, पर उनका निशाना बड़ा अच्छा था और कभी चूकता नहीं था । थोड़ी ही देर में लोमी से हम लोगों की सहायता के लिए वहाँ की वायु-सेना द्वारा भेजी गई पाँच सौ वायु-यानों की एक टुकड़ी भेजी गई जो वायु-युद्ध में अत्यन्त कुशल थी और शीघ्र ही वह ऊपर उड़ान करते हुये मोगा के वायु-यानों पर अपने बम गिराने लगीं । मोगा की वायु-सेना का बचा हुआ साहस भी धुल गया और उसने शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर दिया ।

अब मैंने बेतार के संकेतों से लोमी के वायु-यानों में समाचार भेजा कि हमारे पास लोमी की राजकुमारी हैं । शीघ्र ही एक भारी वायु-यान आया जो ठीक हमारे ऊपर उड़ान करता रहा और उसने एक सीढ़ी उतर कर हमारे वायु-यान पर उतारी । उसमें से उतर कर कुछ लोग आए जिन्होंने हमें बहुत धन्यवाद दिया । मोना ने मुझे उन लोगों से मिलवाते हुए कहा, "आप लोग अपने धन्यवाद राकेश को दें । आज की आप की जाति और आपकी राजकुमारी का लौटना, दोनों ही इन्हीं के कारण सम्भव हो सके ।"

उन्होंने मेरा बड़ा आदर किया और बढ़कर मेरे कन्धों पर हाथ रख दिया। इस पर मैंने टानार की ओर संकेत करते हुये कहा, "इसके लिये आपको मुझसे कहीं अधिक पाटल के पंजक टानार का कृतज्ञ होना चाहिये।"

इस पर उन लोगों ने बढ़कर उसके कन्धों पर हाथ रखा और उसे बहुत धन्यवाद दिया। इन सब शिष्टाचारों के बाद मैंने उन लोगों को राजकुमारी मोना को ले जाने के लिए आदेश दिया और कहा कि हम लोग नगर में जभी आएँगे जब हमारी स्थल सेना को हरा देगी। यह तय हुआ कि जब इधर से हमारी स्थल-सेना आक्रमण करे तो दूसरी ओर से लोमी की सेना भी आक्रमण कर दे।

हमारी स्थल सेना को आने में दो दिन और लग गये। नगर से दस मील दूर ही हमने उसे रोक लिया और उसको तीन भागों में बाँट कर हमने मोगा की सेना पर आक्रमण कर दिया। बड़ा भीषण युद्ध हुआ। उधर लोमी की सेना का कहीं पता न था। मोगा की सेना हम से संख्या में लगभग पँचगुनी थी। वे बड़ी कुशलता से लड़ रहे थे। तभी लोमी की भी मोना दूसरी ओर से चढ़ आई। दोनों ओर से पिस कर मोगा की सेना कठिनाई में पड़ गई और शीघ्र ही उसने आत्म-समर्पण कर दिया।

मोगा के सैनिकों को बन्दी बनाकर, विजय के गर्व से मुस्कुराती हुई हमारी सेना तब लोमी के मुख्य-द्वार से उसके अन्दर घुसी। लोमी की जनता ने हमारा बड़े तपाक से, जय-जयकारों के बीच स्वागत किया। वारट पर सवार कुछ लोगों ने मुझे, टानार और कुछ अन्य पीली जाति के पंजकों को बुलाया और हमें वे सीधे दर्बार में ले चले जहाँ पर वारेल-मान, मान रेयर और अपने बहुत से मंत्रियों के साथ खड़े थे। उन्होंने हमारा बड़े तपाक से स्वागत किया और टानार को देखकर उनकी आँखों

में प्रसन्नता के आँसू आ गए और उन्होंने गद-गद स्वरों में कहा, "मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि आज मैं मंगल के सब से वीर सैनिक को अपने सामने देख रहा हूँ, पर उससे भी अधिक प्रसन्नता मुझे इस बात की है कि मैं अपने मित्र के कन्धों पर हाथ रख सका।"

"लोमी पंजक" टानार ने कहा, "हमें मित्र बनना भी एक दूसरे संसार के मनुष्य ने सिखाया था।"

लगता था मोना मेरे बारे में बहुत कुछ वारेल मान से बता चुकी थी, क्योंकि मेरे लिये उनके अगले शब्द थे, "तुमने हमारे लिए क्या न किया, बेटा राकेश ? मैं इसके बदले तुम्हें अपना सर्वस्व दे रहा हूँ। स्मरण रहे मोना केवल हमारी बेटी नहीं, हमारी अमानत है, इसे सम्हाल कर रखना।" और इतना कहते हुए उन्होंने सब के सामने ही मोना का हाथ मेरे हाथों में पकड़ा दिया। इस प्रकार मेरी सगाई हो गई।

उनके ठीक पीछे, मोना के पिता, मान टेयर खड़े थे। उन्होंने मुझसे कुछ कहना चाहा, पर उनका कंठ अवरुद्ध हो गया। उनके मुख से कोई शब्द न निकला।

जैसा कि मुझे बाद में पता चला कि वे मंगल में अपने साहस और युद्ध के समय अपनी क्रूरता के लिये प्रसिद्ध थे।

२५

एक सप्ताह तक पीली जाति के मंगलवासी लोमी के अतिथि रहे, और उसके बाद जब जाने लगे तो मोन टेयर, मोना के पिता और छोटे लोमी पंज, टानार और उसके साथियों को पाटल तक पहुँचाने गए। एक मास बाद टानार, जाटक और कुछ अन्य साथियों को लेकर फिर लोमी आए क्योंकि यह तिथि भी हमारे ब्याह की थी।

मंगल ग्रह के अगले दस वर्ष मेरे लिये सुख से भरे थे। इस बीच मैंने बहुत से युद्धों में भाग लिया और बार-बार लोमी की प्रजा का प्रशंसा पात्र बना। मोना की तो वहाँ की प्रजा पूजा करती थी। पाँच वर्ष बाद एक दिन वह आया जब मोना ने एक छोटा-सा, दूध सा श्वेत अंडा दिया, जिसे हम लोगों ने लोमी की एक मीनार पर रखवाया, जहाँ पर दस सैनिक बराबर पहरा देते रहते थे। हर संध्या को मैं मोना को साथ लेकर वहाँ तक जाता और घन्टों हम लोग उस छोटे से अंडे की ओर देखते रहते, और उस दिन की प्रतीक्षा करते जब उसकी नन्हीं-सी दीवाल को तोड़ कर हमारा प्यारा शिशु बाहर निकलेगा।

एक दिन हम दोनों महल के उद्यान में टहल रहे थे कि एक सैनिक मुझसे यह कहने आया कि मुझे दर्बार में बुलाया है। वहाँ जाने पर पता लगा कि अभी-अभी समाचार मिला है कि वायु बनाने के कारखाने में काम करने वाले दोनों मनुष्य मरे हुये पाये गए है वायु के दबाव में कमी हो गई थी सारे ग्रह में जिसका एक ही अर्थ था—उस कारखाने के यन्त्रों में कोई खराबी आ गई थी। हम लोग केवल तीन दिन रह सकते थे।

तीसरे दिन की संध्या को वायु इतनी कम रह गई थी कि लोगों

ने जीवित रहने की आशा त्याग दी थी। मुझे वे सातों शब्द याद आए तुरन्त मैं एक वायु-यान लेकर नीची उड़ान करता हुआ उस कारखाने तक पहुँचा। वहाँ पर कुछ लोगों में एक ऐसा मिला जो अन्दर के यन्त्रों का संचालन कर सकता था। मैंने उससे कहा कि वह जैसे ही द्वार खुले अन्दर चला जाय और संतुलित वायु के डिब्बों की वायु को खोल दे जिससे सारे मंगल में वायु झट फैल जाए। मुझे वह समय स्मरण हो आया जब मैं मोना से विदा ले रहा था। उसने उस छोटे-से अंडे को जो अब फूटने ही वाला था, अपने पास नीचे के उद्यान में मँगवा लिया था। चलते समय वह अचेत हो गई। मैंने अपने मस्तिष्क में सातों शब्द दुहराये और वह द्वार खुल गया। मेरे संकेत पर वह आदमी दौड़ गया और मैंने वहीं से लेटे शेष तीनों द्वार भी खोल दिए।

हवा का दबाव बहुत कम हो गया था। वह मनुष्य अन्दर तो चला गया, पर मेरा दम घुटने लगा। मुझे लगा कि मेरी आँखों के सामने अँधेरा छाता जा रहा है। मैं समझ गया कि मेरा अन्तिम समय निकट है। मैंने जब तक चेतना रही, ईश्वर से प्रार्थना की। दम घुटा जा रहा था! अँधेरा छा चुका था—घोर अँधेरा।

{ इसके बाद की कथा आप फिर कभी सुनियेगा। इस समय मैं और नहीं बतला सकता। समय आने पर मेरी आगे की कथा को आप एक नई पुस्तक के रूप में पा सकेंगे। }

नो